CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

...ग्रन्थालय, ...निधि, करौंदी वाराणसी-5

राग–नंद—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. ६९-७०, लक्षणगीत पृ. ७१, ढुंढा बन पृ. ७२, आज हूं नही पृ. ७३, जबहरी पृ. ७४, घनधन पृ. ७५, तराना पृ. ७५.

राग–नट-हमीर-नट—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. ७७-७८, जाने न दुंगी पृ. ७९, करत हो पृ. ८०, तोरे देखन पृ. ८१.

राग–नायकी-कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. ८३-८४, लक्षणगीत पृ. ८५, बनरा मोरा पृ. ८६, घनसे घना पृ. ८७, सखा तुम पृ. ८८, घर जाने दे पृ. ८९, गहरी गहरी पृ. ८९, ना मोसे पृ. ९०.

राग–शहाना-कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. ९१-९२, लक्षणगीत पृ. ९३, सखी कहां पृ. ९४, रजनी सजी पृ. ९५, मैं तो तुमसे पृ. ९६, गौरशाम पृ. ९७.

राग–बागेश्री-कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. ८९-९९' लक्षणगीत पृ. १००, गोरे गोरे मुख पृ. १०१, दिल नहीं पृ. १०२, लेहो धाये पृ. १०३.

राग–सुहा—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १०५-१०६, लक्षण-गीत पु. १०७, झनक झनक पृ. १०८, कौन देसवा पृ. १०९, दरस देखत पृ. १११, हस दलन पृ. ११२, ब्रम्हन बर पृ. ११३, अलबेली पृ. ११४.

राग–सुघराई—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. ११५, लक्षणगीत पृ. ११६, बलमारे पृ. ११७, तराना पृ. ११८, अब कछु पृ. ११९.

राग–सुहा-सुघराई—हुकमकी पृ. १२१, अतक बुजकवा पृ. १२२, माई कंथु पृ. १२३, कानन पृ. १२४, तु है महमदशा पृ. १२५, झनक झनक वा प. १२६.

राग–कौशी-भैरव—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १२७-१२८, लक्षणगीत पृ. १२९, भावरबा पृ. १३०, हरिकी पृ. १३१.

राग–बिलासखानी-तोडी—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ.१३२-१३३, लक्षणगीत पृ. १३४, नीके घुंगरीया पृ. १३५, देखी देखी पृ. १३६, बीन गोपाल पृ. १३६.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग-गौरी—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १३८-१३९, लक्षण-गीत पृ. १४०, सावन गरज रही पृ. १४१, बतीयां करत पृ. १४२. नाथ-अनाथन पृ. १४३.

राग-चेती-गौरी—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १४४-१४५, लक्षणगीत पृ. १४६, वो जो गईली पृ. १४७, निसदिन पृ. १४८, हमरा बसेरा पृ. १४९, हरबीन पृ. १५०.

राग-ललित-गौरी—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १५१-१५२, लक्षणगीत पृ. १५३, यार कटारी पृ. १५४, यह अंदेस पृ. १५४.

राग-चंपक—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १५६-१५७, लक्षण-गीत पृ. १५८, मग जैये हो पृ. १५९, सजनी जिया पृ. १६०-१६१.

राग-धनाश्री—शास्त्रीय परिचय आलाप तान पृ. १६२-१६३, लक्षण-गीत पृ. १६४, धरन मुरत पृ. १६५, ये सखी नंद पृ. १६७-१६८.

राग-मुलतानी-धनाश्री—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १६९, लक्षणगीत पृ. १७१, लोक छुवा पृ. १७२, कवन देस पृ. १७३, सो वलमा मोरे पृ. १७४.

राग-हंसकिंकिणी—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १७६,लक्षण-गीत पृ. १७७, तुम हो बलवंत पृ. १७८, मंजूल मोहनी पृ. १७९, राम नाम मेरे पृ. १८०.

राग-भीम—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १८१, लक्षणगीत पृ. १८३, बाजे झनन पृ. १८४, पार न पायो पृ. १८५.

राग-सागर—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. १८७, ये मन है मीर पृ. १८८, येहो रामकली पृ. १८९.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग-विज्ञान

भाग ५ वा

राग—देशी

इस राग में गांधार और निषाद कोमल तथा धैवत दो और अन्य सब स्वर शुद्ध लगते है। आरोह में गान्धार और धैवत वर्जित हैं।

जाति—ओडव-षाडव. वादी—पंचम. संवादी—ऋषभ.

समय—दिन का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—प मग़् रे ग़् रे सा रे नि़् सा

आरोह—सा मरे पम प, ध म प सां

अवरोह—सां प ध म प परे ग़् सा रे नि़् सा

विशेष—यह राग आसावरी-अंग का राग है। इसके पूर्वांङ्ग में सारंग और उत्तरांग में आसावरी की छाया आती है। आरोह में गांधार और धैवत वर्जित रहते हैं और निषाद भी कम लिया जाता है। इसमें दोनों धैवतों का प्रयोग होता है। इनमें से शुद्ध धैवत का प्रयोग अधिक किया जाता है। कोमल धैवत कम लिया जाता है। जब लिया जाता है तब अवरोह में ही एक विशिष्ट प्रकारसे लिया जाता है। जैसे—"ध़् प, सां प ध़् म प, रे म प ध़् प, ध़् म प।" अवरोह में तार षड्ज से एकदम पंचम पर आते हैं। जैसे—"सां प ध म प।" अवरोह में निषाद के उपयोग से काफी हो जाने की संभावना रहती है। इसी प्रकार निषाद और कोमल धैवत साथ-साथ लेने से आसावरी की छाया आती है। इन दोनों रागों को बचाने के लिये ही अवरोह में निषाद वर्जित किया जाता है। और इसी लिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवरोह का स्वरूप वक्र रहता है। आलाप के अन्त में ही प्रायः निषाद लिया जाता है। जैसे—"रे ग़ सा रे नि़ सा।" बरवा राग भी देशी से बहुत मिलता-जुलता है। उसमें और देसी में एक-दो स्वरों का ही अंतर है। देशी राग कई प्रकार से गाया जाता है। दोनों धैवत लेकर बहुत से गायक यह राग गाते हैं। बहुत से केवल शुद्ध धैवत का प्रयोग कर के यह राग गाते हैं। इसी प्रकार केवल कोमल धैवत लेकर भी देशी राग गाया जाता है इसी को ही देशी-तोडी कहते हैं। इस पुस्तकमें इन सब प्रकारों की चीजें दी गई हैं। यह राग बहुत ही आकर्षक और श्रुतिमधुर है।

आलाप (दो धैवत का प्रकार)

१ सा, सारे, रेनि़ सानि़सा, सारे मग़ मग़रेग़ रेसारे रेनि़सा

२ सा, रेनि़ सानि़सा, सारेप मग़ मग़रेग़ रेसारे, रेनि़ सानि़सा

३ सा मरे पमप, म पधप, धमप, परेग़सारे रेनि़ सानि़सा

४ सा मरे पमप,म पधप, धम धपसांप,धप, धमप परेग़ रेसारे सानि़ सानि़सा

५ सा मरे पमप, धम धपसां, रेंनि सानिसां, सां रें मग़ं मग़ं रेंग़ं रेंसां रें सांनि सानिसां, सांपधप मप, रे म पध़प, ध़ पमपरेग़सारे सानि़सा

६ ध ध प म पसां, रेंनि सानिसां, सां रें मग़ं मग़ं रेंग़ं रेंसां रें सांनिसां, सां रें मप मग़ं रेंग़ं रेंसां रें सांनि सानिसां, सां रें निसांपधप, पम पमप, परे, रे म पध़प, धमपरेग़ रेसारे सानि़ सानि़सा

७ प मग़रेसा, ध़प धम पमप, सांप, रेंनि सां मग़ं मग़ं म रेंग़ं रेंसां रें सांनिसां, प मग़ं, रेंग़ं रेंसां रें सांनिसां, प मग़रेग़ रेसारे सानि़सा रे म प ध म प सांपध पमप परेग़ रेसारे सानि़ सानि़सा

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोमल धैवत प्रकार के आलाप

८ सा, रेसानि्सानि्सा, मरेपमप, धूप, सांप, धूप, परेगूरेसारेसानि्सा

९ सा, रेनि्सापं, धूंपंसा, सामरेपमप, धूप, धूपमपमरेपमप, सांप,
नि्धूप, धूमपमगूरे, गूरेसारे, सानि्सानि्सा

१० पमरेमप, म पधूप, धमधपसांप, धमपपरे, रे म पधूपधूपमपपरेगू
रेसारेसानि्सानि्सा

११ पमपमप, मधूप, धमधपसां, रेंनि्सांनि्सां, सां रेंमंगूंमंगूंमं रेंगूंरेंसां
रेंसांनि्सां, सां, नि्धूप, गूं रेंसां, रेंनि्सां, नि्धूप, धूपमपपरेपमप,
मगूरेगूरेसारेसानि्सानि्सा

१२ पगू, सारेमप, धूप, धूधू प म पसां, मंगूंमंगूं रेंगूंरेंसां रेंसांनि्सां
नि्सांप, म पनि्धूप, धूप, पमपमप, रे म प धुप, धूमपपरेगू
रेसारेसानि्सानि्सा

तान

१३ सारेमपधमपरेगूसारेनि्सा, सारेमपधपमपसांनि्सांपधपमपरेगूसा
रेनि्सा, सारेमपधपमपसांनि् रेंसां रेंनि्सांपधपमपरेगूसारेनि्सा,
सारेमपधपमपसांनि् रेंसां रेंगूंसां रेंनि्सांपधमपरेगूसारेनि्सा

१४ पधपमसांसांपधपमरेगूसारेनि्सा, पधमपसांसांपधमपरें रेंनि्सां रें
गूंसां रेंनि्सांपधमपसांसांपधपमरेगूसारेनि्सा

१५ सासारेरेपपरेगूसारेनि्सा, सासारेरेपपधधमपसांसांपपधधमपरेगू
सारेनि्सा, सासारेरेपपधधमपसांसां रें रेंगूंगूंसांसा रें रेंनि्नि्सांसां
पपधधपपरे रेगूगूसासारेरेनि्नि्सासा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६ सासामरेपमधपधमपरेग़ुसारेनिं़सा, सासामरेपमधपसांनि़सांपधम परेग़ुसारेनिं़सा, सासामरेपमधपसांनि़ रेंसांग़ुं रेंग़ुंसां रेंनि़सांपध मपरेग़ुसारेनिं़सा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

क्र. १ राग—देशी, लक्षणगीत तीनताल (मध्यलय)

रागिणि देशी नाम कहावत । ग-नी मृदु उभय 'ध' मेल सुहावत । आसावरी सारंग अंग युत । प्रात समै सब बुधजन गावत ॥ अं. ॥ औडव संपूरन सुर लागत । बिनु ग-ध सुर अरु रोहन सोहत । प-रि वादी संवादी संमत । म प सा प ध म प रे रे म प रे ग सा रे नि सा ॥ १ ॥

—स्व. पं. खरेकृत

सा रे प मग़ु रे सा | रे सा नि़ सानि़ सा सा सा सा सा रे रे म म
रा गिणि दे शी . | ना म क हा . व त ग नि मृ दु उ भ
\+ ७ १ २ + ७

प प | ध म प रे ग़ु सा रे नि़ सा सा रे म म प | म प ध प ध
य ध | मे . . ल सु हा . व त आ सा व रि सा | रं . . ग अं
१ २ + ७ १

पम प मग़ु रे रे म प सां प प ध | म प परे ग़ु सा रे रेनि़ सा
. ग यु त प्रा . त स मै स ब | बु ध ज न गा . व त
२ + ७ १ २

॥ अंतरा ॥

म म म प सां | रें ग़ुं सां रें सां नि़ सां सां प रें सां रें नि़ सां
औ ड वं सं पू | र न सु र ला . ग त बि नु ग ध सु र
\+ ७ १ २ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां प प | म प ध म प ^प^रे ग़ रे सा रे प ^म^ग़ रे सा रे निं | सा रे म
अ रु | रो . . ह न सो . ह त प रि वा दी . सं . | वा . .
१ ३ + ७ १

म रे म प प प म प सां प ध म प रे | रे म प रे ग़ सा रे निं सा
दी सो . . ह त म प सा प ध म प रे | रे म प रे ग सा रे नि सा
३ + ७ १ ३

क्र. २ राग—देशी, ख्याल एकताल

बरन नदीया मोरी रे, मोरी पाछेली परीर हात रे ॥ धृ० ॥ सब निस जागिली झाजकी मेदी भरीये बुरी सास कहिया तरे ॥ १ ॥

ध प म ग़ ऽ रे ग़ रे सा | रे ^सा^निं सा सा ^म^रे म प म म प ध
ब . र . . . न न | दी . . या मो री रे मो री पा .
११ १ ५ +

^प^ध नी ऽ ^ध^ध प ^प^म ^प^म | प म प नि ^नि^प ^म^ग़ रे ग़ रे ^ग^सा ^म^रे
. . छे ली प री | . . . . र हा . . त . रे
९ ११ १ ५ +

^प^म प म प ध ध प ऽ ^म^ग़ रे ग़ रे सा | रे ^सा^निं सा सा ^म^रे म प
. . . . . ब . र . . न न | दी . . या मो रि रे
९ ११ १ ५

ऽ ऽ ऽ

+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म म प प सां नि सां सां | सां ऽ प नी सां रें ऽ रें सां सां रें रें सां
स ब नि स जा . गि | ली झा . . . ज . की मे . .
९ ११ १ ५

नि सां ऽ नि धु प ऽ प ध म प म रे ऽ म म प म प सा गुं ऽ रें गुं |
. . . दी . भ . री . ये . . . . झु री सा . . . |
+ ९ ११

सां रें सां प ध म प ऽ मगु रे गु रे सा ऽ मरे पम प म प ध धप
स . क . हि . या . . त . रे . . . . . ब
१ ५ + ९

मगु रे गु रे सा |
र . . न न | दिया
११

क्र॰ ३ राग–देशी, ताल तिलवाडा

सांच कहो तुम सांचे प्यारे रबनु जो तुमरे मन जांचे ॥ ध्रु० ॥ सांचे के सांच मे झूटे ना समाये कहत सदारंग सांच को कहा आंचे ॥ १ ॥

, सा रे पप मग रे गु रे सा | सारे ऽ सानि सानि सा सा ऽ सा ऽ मरे
सां च क हो . . तु म | सां . . . . . चे . प्या रे
१३ १ ५ +

म मरे ऽ मरे म प प ऽ मप | म ध प ऽ म ध म प मगु ऽ रे गु
. . र ब नु जो . | तु म रे म न . . जां . .
१३ १ ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेसा सारे सानिं सानिं सा ऽ
— — — o o —
. चे . . .
+

॥ अंतरा ॥

रेम प प सां निंसां सां | सां ऽसांध सांध सां ऽ सां रें गुं रें गुं रेंसां रें
o o o o — o o | — — — o o — ◡ ◡ o o o — —
सां च के सां . च | मे झू टे . ना . . . . स मा
१२ | १ ५ +

सांनि् सांनि् सां ऽ प प म पम प ’ध | प म प परे ग् रे सा ’ सा रे
— o o — — o o o o o o o | — o o o o o o o o o
. ये . . क ह त . स | दा . . . . रं ग सां च
१२ | १ ५

मरे म रे ’म प ऽ धू प म प मगू रे गु सारे सानिं सा सा रे म प
o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ o ◡ ◡ o o o o o ◡ ◡
को . . क हा . आं . . चे . . . . . सां च क
+ १२

ध प मगू रे गू रे सा |
◡ ◡ o o o ◡ ◡ |
. . हो . . तु म | सांचे

क्र. ४ राग–देशी, ख्याल; ताल तिलवाडा

कहां जा निसा आलेरी गौवनको चरावारे ॥ ध्रु० ॥ टेरत टेरत गैयां चरा-चत रूंढी रूंढी कारे ॥ १ ॥

रे् सा निंसां सापं निं पं | सा ऽ सा रे मरे म ऽ रे ’म प ध प ऽ
o o o o o o | — — o o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ o
क हा . जा . नि | सा आ ले री . . गौ व न को
| १ ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

’ध प म प मग़ रे ग़ सारे सानि़ं सानि़ं सा
o o o o o o o o o o o
च रा . . वा . . . . रे .
\+ १३

॥ अंतरा ॥

म प ध सां नि़सां सां | सां ऽ ध सां रें ग़ं रें ग़ं रें सां नि़सां प ध
o ◡ ◡ — o o | — — o ◡ ◡ ◡ o o o o o o o
टे र त टे . र | त गै यां . . . . च रा . . व
१ ५

प ’म प ध नि़ सां प ऽ ध प म प मग़ रे ग़ सारे नि़ंसा
o o ◡ ◡ ◡ ◡ o o ◡ ◡ ◡ ◡ o o ◡ ◡ o o
त रूं ढी रू ढी . . . का . . रे . . . .
\+ १३

क्र. ५ राग–देशी, ख्याल; एकताल

नैया मोरी भई पुरानी खेवट सदा मतवार ॥ ध्रु० ॥ औघट घाट में सूझत नाहीं आन पड़ी मंझधार ॥ १ ॥

पप मग़ रे ग़ रे सा | सारे ऽ सा ’ रे सानि़ं सा सा ऽ सा ऽ मरे
o o ◡ ◡ ◡ ◡ | — — — o o — — — — — o o
नै या . . मो री | भ ई पु रा . नी खे व
११ १ ५ + ९

पम प ऽ | धध प प प धम प मग़ रे ग़ सारे सानि़ं सा सा सारे
o o — | — — o o o o — o o o o o o o
ट . | स दा म त वा . . . . र .
११ १ ५ + ९

रे रेग़ पप मग़ रे ग़ रे सा | सारे ऽ सा ’ रे सानि़ं सा सा ऽ
o — o o ◡ ◡ ◡ ◡ | — — — o o — — — —
. . नै या . . मो रि | भ ई पु रा . नी
११ १ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म प प सां नि॒सां सां | सां ऽ सां नि॒ सां रें सां नि॒ धध प ऽ पम
– ० ० – ० ० | – – – ० ◡ ◡ – – – – – –
औ घ ट घा . ट | में सू . झ त ना . . हीं आ
९ ११ १ ५ + ९

पम , पम | पम प ऽ प ध म प ऽ मग॒ रे ग॒ सारे सानिं सा सा रे
– ० ० | – – – ◡ ◡ ◡ ◡ ० – – ० ० ० ० ० ०
न प | डी . मं . झ . धा . . . . . र .
११ १ ५ + ९

सारे ग॒ पप मग॒ रे ग॒ रे सा |
० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡
. . नै या . . मो री |
११

क्र. ६ राग–देशी, तीनताल (मध्यलय)

मन, माधव को नेक निहारहि। सुनु सठ, सदा रंक के धन ज्यों, छिन छिन प्रभुहिं संभारहि ॥ धृ० ॥ सोभा-सील-ग्यान-गुण-मन्दिर, सुंदर परम उदारहि ॥ १ ॥

तुलसीदासकृत

प ध पम प परे ग॒ रे सा | रे निं सा रे म प प म म प प रें नि॒
० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० – ० ० ० ० ० ० ० ०
म न मा . ध व को . | ने . क नि हा र हि सु न स ठ स दा
+ ७ १ ३ + ७

सां सांप | ऽ ध प म प म प ध पमग॒ रे रे रे म म प ध म प सां |
० ० | ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ० ० ० ० ◡ ◡ ०
. रं | क के . . ध . न . ज्यो . छिन छिन प्र भु हि . सँ |
१ ३ + ७

सांप ध पम प परे ग॒ रे सा
० ० ० ० ० ० ० ०
भा . . . . . र हि
१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म प ध सां सां सां रें | मग़ ग़ रें सां रेंनि सां सांप प ' रें नि सां
सोभा . सी ल ग्या . | . न गु न मं . दि र सुं द र
\+ ७ १ ३ +

प ध म प सां | सांप ध पम प परे ग़ रे सा
प र म . उ | दा . . . . . र हि
८ १ ३

क्र. ७ राग–देशी, तीनताल (मध्यलय)

सांची कहो कै प्यारी हांसी। काहे को इतनी रिस पावत कत होत तुम उदासी ॥ ध्रु० ॥ पुनि पुनि कहत कहा तबहीं ते कहाँ ठगी सी ठाढी। इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखी काढी ॥ १ ॥ समझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तू आहे। सूरश्याम अति भये आतुरे भुजा गहन तब लागे ॥ १ ॥

' मग़ रे सा मरें म प | ' म प ध प धम प मग़ रे ग़रे ग़ रेसा रे
सांची क हो . कै | प्या . . रि हां . सी . का . हे .
\+ ७ १ ३ +

सानि सा रे म | प प ध प म प ध सां सांप प रें सां सांप प ध ध
को . इ त | नी रि . स . पा . . व त क त हो त तु .
७ १ ३ + ७

प म प | सां प ध प म रे ग़ रे सा रे सा नि सा
म . उ | दा सी . . . .
१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

म म प प सां सां सां सां | सां रें गं रें गं रेंसां रें सां रें सां ऽ सां
पु नि पु नि क ह त क | हा . . त ब हीं . ते क हां ठ
\+ ७ १ ३ +

सांप धम | पसां प ध प म प ध पमग रे रे म प ध प म प ध पमग |
गी सी | ठा . . . . ढी . इ क ट क चि ते . . . र |
७ १ ३ + ७

मरे ग रे सा रे सानिं सा सा ' सा सां सांप ध म प | सां प ध प म
ही . हि र दे . त न मा नो चि . त्र लि | खी का . . .
१ ३ + ७ १

रे ग रे सा रे सा निं सा
ढी . . . .
३

क्र. ८ राग–देशी, द्रुतएकताल

जाचिये गिरिजापती। कासी जासु भवन, अणिमादिक दासी ॥ ध्रु० ॥
अवढरदानि द्रवत सुठी थोरें। सकत न देखी दीन कर जोरे ॥ १ ॥

तुलसीदासकृत

मरे म प ध पम प मग रे ग रे सा | मरे म प प ध म प सां प
जा . चि ये गि रि जा . . प ती | का सी जा सु . . . . भ
१ ३ + ५ ६ १ ३ + ५

प प | सां रें नि सां प ध पम प मग रे ग सा रे निंसा |
व न | अ . णि . मा . दि क दा . . सी . . |
६ १ ३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

म म प प ध ^प^ध सां ऽ सां सां सां | ध सां सां रें गं॒ रें गं॒ रें सां रें
० ० ० ० ० ० − ० ० ० ० | ० ० ◡ ◡ ० ◡ ◡ ० ० ०
अ व ढ र दा . नी द्र व त | सु ठि थो . . . . रे . स
१ ३ + ५ ६ | १ ३ +

^रें^नि॒ सां प प | रें सां ^सां^प ऽ प प ध प म ^म^ग॒ रे ग॒ रे सा |
० ० ० ० | − ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ◡ ◡
क त . न | दे खी दी न क . र . जो . . रे . |
५ ६ | १ ३ + ५ ६

राग—गांधारी

इस राग में दो ऋषभ और गान्धार, धैवत व निषाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—षाडव-संपूर्ण. वादी—धैवत. संवादी—गान्धार.

समय—दिन का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—रे म-प, नि॒ ध॒ प, म प ^म^ग॒ रे॒ सा

आरोह—सा रे म प ध॒ म, प ध॒ नि॒ सां

अवरोह—सां नि॒ ध॒ प, म प ^म^ग॒, ग॒रे॒ ग॒रे॒ रे नि॒ ^सा^नि॒ सा

विशेष—यह राग आसावरी अंग का है। आसावरी में और गांधारी में मुख्य अन्तर यह है कि इस में दो ऋषभ लिये जाते हैं। इसी प्रकार आसावरी में गांधार और निषाद दोनों स्वर आरोह में वर्जित रहते हैं किन्तु गाधारी में आरोह में केवल गांधार ही वर्जित है। "म प ध॒ नि॒ सां" इस प्रकार के स्वर आलाप या तान में लिये जाते हैं। कोमल ऋषभ आलाप की समाप्ति पर 'प ^म^ग॒ रे॒ सा' इस प्रकार से लिया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा नि़ ध़ नि़ ध़सा, सारे म ग़ म ग़ रे़सा रे नि़ सा नि़सा

२ सारे प म प मप, प म ग़ म ग़, सा म रे प मप, म ग़ म ग़ रे़सा

३ सारेमप नि़ ध़ नि़ ध़पध़म, म ध़ पनि़ध़पध़म, मप म ग़ म ग़ म ग़सारेप म ग़ म ग़ रे़सा रे नि़ सा नि़सा

४ सा रे म प नि़ ध़ नि़ ध़सां नि़ सां, सां नि़ ध़ नि़ ध़प, म प ध़ नि़ सां, नि़ ध़ नि़ ध़प, म ध़ पनि़ध़प, ध़म, प म ग़ म ग़ रे़सा

५ सारेमप नि़ ध़ नि़ ध़सां नि़ सां, सां रें म ग़ं म ग़ं रेंसां, नि़ सां, सां रें सां, रें नि़ध़प, म प ध़ सां, नि़ध़प, म प ध़ मप म ग़ म ग़ रे़सा

६ म ग़ म ग़ म ग़ रे़सा, साध़ नि़ ध़ नि़ ध़प, म ध़ पनि़ध़प, प म ग़, म रेमप, म ध़ प सां, सां रेंग़ं, रें ग़ं रें ग़ं, रेंसां, रें नि़ सां नि़सां, सां नि़ ध़ नि़ ध़प, ध़नि़सां रें, नि़ध़प, ध़ध़ प म पसां, नि़ ध़प, ध़ध़ प मप म रेम, म रे प मप म ग़ म ग़ म ग़, ग़ रे़ ग़ रे़सा, सा नि़ रे़सा

तान

७ सारेमपपमग़रेसा, सारेमपध़पमग़रेसा, सारेमपनि़नि़ध़पमग़रेसा नि़ रे़सा, सारेमपसांनि़ध़पमग़रेसानि़ रे़सा, सारेमपध़नि़सां रें रें सांनि़ध़पमग़रेसानि़ रे़सा, सारेमपध़नि़सां रेंग़ं रेंसांनि़सां रेंनि़ध़ पमपध़नि़सांनि़ध़पमगरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८ मगूरेसा–पपमगूरेसा–धूधूपमपपमगूरेसा–नि़नि़धूपमपधूपमगूरेसा।
निं रे़सा– सांनि़धूप–रेंसांनि़धू–गं रेंसांनि़–रेंनि़धप– नि़धूपम–
पधूपमगूरेसा।

९ पपमपप–मपप–मगूरेसा–नि़नि़–धूनि़नि़–धूनि़नि़- धूपमप-सांसां-
नि़सांसां–नि़ रें रें–सांनि़धूप गुंगुं रेंगुंगुं- रेंगुंगुं सां रें रेंनि़सांसां-
नि़ रें रें–सांनि़धूप–मपधू–मपधू–मपधूप–मगूरेसा।

१० सासारेरेममपपधूधूममपपममगूगूरे़रे़सासा, धूधूममपपनि़नि़धूधू
पपममपपधूधूममगूगूरे़रे़सासा, धूधूममपपनि़नि़धूधूपप–सांसां
नि़नि़धूधू–रें रेंनि़नि़गुंगुं रें रेंसांसां रें रेंममगुंगुं रें रेंसांसां–नि़
नि़सांसांपपधूधूममपपगूगूरे़रे़सासा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

क्र. ९ राग–गांधारी, लक्षणगीत; ता–सुरफाकृता

गावत गांधारी। दिवस पहर दूजो। ऋषभ उभय सुर अरु। 'ग ध नी' मृदु वारी ॥ ध्रु० ॥ अंश लसत धैवत। अनुचर गांधार। आसावरि को दुहूँ। अंग दिखावत री ॥ १ ॥

^मरे़	म	प	प	^{नि़}धू	^{नि़}धू	प	म	गू	रे़	सा	|	^मरे़	म	म	प	प	प	^{नि़}धू	ऽ
गा	.	व	त	गां	.	धा	.	.	री	.	|	दि	व	स	प	ह	र	दू	
१				५	+	७						१				५	+	७	

^{नि़}धू	प	|	प	रें	रें	सां	^{रें}नि़	सां	रें	नि़	धू	प	|	म	प	नी	ऽ	धू	प	^मगू	ऽ	रे़	सा	|
जो	.	|	ऋ	ष	भ	उ	भ	य	सु	र	अ	रु	|	ग	ध	नी		मृ	दु	वा		री	.	|
			१				५	+	७					१				५	+	७					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म ऽ प नि॒ध॒ नि॒ध॒ नि॒ध॒ सां ऽ सां सां | नि॒ध॒ नि॒ध॒ सां रें मग॒ ऽ

अं श ल स त धै व त | अ नु च र गां

१ ५ + ७ १ ५ +

सांरें ऽ सां सां | रेंनि॒ सां रें नि॒ ध॒ प ध॒ म प प | ध॒ म म म म प

धा . र | आ . सा . व रि को . ज हैं | अं . ग दि खा .

७ १ ५ + ७ १ ५

ध॒ म प मग॒ रे॒ सा |

. . व त री . |

+ ७

क्र. १० राग–गांधारी, ख्याल, ताल–झुमरा

बीरवा मनुवा सगुन बिचारो ही कब घर आवे मोरा बीर ॥ ध्रु० ॥ काग उडावत मोरी बैयां थक गईं नैना झरत जो सावन नीर। तन की व्यथा मोहे भयो पंछी अहे लगत जो तीर ॥ १ ॥

सा ऽ नि॒ रे॒ सा | गरे॒ सा ऽ म प नि॒ध॒ नि॒ध॒ प ध॒ ध॒ प म प ऽ मग॒

बी . . र | बा . म नु वा . . . .

१ ४ +

सारे॒ मरे॒ म प ध॒ ध॒ ऽ | पं ध॒ ध॒नी॒ ध॒ प ध॒ म ऽ ममप ऽ प ध॒ म प

. स गु न बि चा | . . . रो . . ही क ब घ . र .

११ १ ४ +

ऽ मग॒ रेंग॒ रे॒ सा रे॒ , रे॒नि॒ | सानि॒ सा ऽ गरे॒ सा ऽ मरे॒ पम धप ध॒

आ . वे . . मो | रा . बी . . . .

११ १ ४ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प म ग़ रे ऽ ऽ निं सा ऽ निं रे सा | ग़रे सा ऽ म प निध़ निध़ प
र . बी . . . . . र | बा . म नु वा . .
११ | १ ४

ध़ ध़ प म प ऽ मग़ सारे
. . . .
+

॥ अंतरा ॥

सा निध़ निध़ निध़ ध़ ऽ निध़ | पपम पम प साध़ प ऽ म रे म ऽ ध़ प
का . ग उ डा व | त मो री . बैं यां . . . . थ .
११ | १ ४ +

री ऽ ध़प मरे म ध़ म ग़ | रेग़ रे सा ऽ सा रे मग़ सा रे ऽ ध़ ऽ म
क ग ई . नै ना झ | र त जो सा व न . . नी .
११ | १ ४ +

प मग़ सा म प निध़ निध़ निध़ सां ऽ निसां | सां सां ऽ निध़ सां
र . . त न की . व्य था . | मो हे भ यो
११ | १ ४

ऽ नि रें सां ग़ सांरें सां रेंनि सां सां रें सां ऽ निध़ प म म प प |
. . . . पं . . . . . . छी . अ हे ल ग |
+ ११

निध़ निध़ निध़ निध़ सां ऽ निसां रें नि सांनि सां ऽ नि प म
त . . जो . . ती . . . . र .
१ ४ + ११

ग़ रे ऽ ऽ निं सा ऽ निं रे सा |
बी . . . . . र | बा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ११ राग–गांधारी, झपताल

ऐसी कौन करे और भक्त काजे ।।ध्रु०।। पतित पावन प्रभु नाम तेरो सुने भरी रंग नाथ मन सा लाजे ।। १ ।। हिरण्य कश्यप बधो· उधो प्रल्हाद को चरन लायो। परी जब भीर तब धीर सरवन सुनी खंब सो निकस कर जन छुडायो ।। २ ।।

म प | नि॒ध॒ ऽ प मग॒ म ग॒रे॒ ऽ सा ऽ सा | सा मरे॒ पम ध॒प सां नि सां
ऐसी | कौ न . क रे औ र | भ क्त . . का . .
१ ३ + ८ १ ३ +

रें सां नि॒ध॒ प धम प |
. . जे . ऐसी |
८

।। अंतरा ।।

म म प सां ऽ सां सां सां रेंनि सां | नि॒ध॒ ऽ सां सां रें सां रें ग॒ रेंसां
प ति त पा व न प्र भू . | ना म ते . रो . . सु
१ ३ + ८ १ ३ + ८

नि॒ध॒ प | नि॒ध॒ नि॒ध॒ ग॒ रें सां रेंनिं सां रें नि सां नि॒ध॒ प | म प
ने | भ रीं . रं ग ना . थ . . म न | मा .
१ ३ + ८ १

नि॒ध॒ सांनी सां नि सां रें सां मि॒ध॒ प धम प |
ला . . . . जे . ऐसी |
३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अभोग ॥

म म म प ऽ प प प प ऽ | म म ऽ प ऽ ^ध^म प सां ^नि^ध प |
हि र ण्य क श्य प ब धो | ड धो प्र ल्हा . द को . |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

म प नी ध प ^म^ग ऽ रे सा ऽ | ^ध^म प सां सां सां सां ऽ सां सां सां |
च र न ला . थो . . | प री . ज ब भी र त ब |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

^नि^ध ऽ सां रें गं रें सां नी ^रें^सां ^नि^ध प | ^नि^ध ऽ ध ग ऽ रें सां नि |
धी र स र व न . सु नी . | खं ब सो नि क .
१ ३ + ८ १ ३ +

रें नि सां ^नि^ध प | ^ध^म प ^नि^ध ^सां^नी सां नि सां रें सां ^नि^ध प ^ध^म प |
स . . क र | ज न छु डा . . . . . यो . ऐसी |
८ १ + ८

क्र. १२ राग–गांधारी, तीनताल (मध्यलय)

हार गूंध लाई मालनिया गरे डार प्यारी पिय के ॥ ध्रु० ॥ भरभर थार नार सब वरिछवि नायक मोतिय के ॥ १ ॥

' म म प ऽ सां | सां ^नि^ध प ध म म प ध प ^म^ग ग रे सा सा सा
हा र गूं ध | ला ई . . . मा . . . ल नि या . ग रे
७ १ ३ + ७

^म^रे म | म प ऽ प ध म प सां ^नि^ध प ध ^ध^म म प ऽ सां |
डा . | र प्या री . . पि य . के . . हा र गूं ध |
१ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म म प प नि॒ध॒ ध॒ सां ऽ सां सां सां नि॒ध॒ ध॒ सां रें | सां रें ग॒ं रें सां
० ० ० ० – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ◡ ◡ ० ० ०
भ र भ र था र ना र स ब व रि छ बि | ना . . य क
१ ३ + ७ १

रेंनि॒ सां रें नि॒ ध॒ ध॒म म म प ऽ सां |
– ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
मो ति य के . . हा र गूं ध |
३ + ७

राग—देवगंधार (द्वि गंधार)

इस राग में धैवत-निषाद कोमल और दो गांधार तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—सम्पूर्ण. वादी—धैवत. संवादी—गांधार.

समय—दिन का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—सा रे ग म, म प ध॒ म प मग॒ रे सां

आरोह—सा रे म प ध॒ ध॒म, प ध॒ नि॒ सां

अवरोह—सां नि॒ ध॒ प म प मग॒ रे सा, रे नि॒ सा रे ग म, प मग॒ रे सा

विशेष—यह राग आसावरी-अंग का राग है। गांधारी में जैसे दो ऋषभ लिये जाते हैं वैसे ही देवगांधार में दो गांधार लेकर इसका स्वरूप आसावरी से अलग किया जाता है। इसी लिये इसका नाम द्विगंधार हुवा। आजकल द्विगंधार की जगह देवगांधार कहने लगे हैं। "सा रे ग म ग गम प मग॒ रे सा" इस प्रकार आलाप समाप्त करते समय शुद्ध गांधार का प्रयोग किया जाता है। इसके सिवाय और सब जगह कोमल गांधार ही आता है। बाकी राग का स्वरूप आसावरी और जौनपुरी के तरह से ही गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा^नि़ धू^नि़ धूंसा, सारे^म गू^म गूरेसा

२ सारे^प मप, मप^नि़ धू^नि़ धूपधूम, प^म गू , रे^सा नि़ंसारेगम, प^म गू^म गूरेसा

३ सारे^सा नि़, सारेगमग^ग म, मप^नि़ धू^नि़ धूपधूम, म प धूनी, ^नि़ धू

नि़ धूप, धू धू प मप^म गू^म गू, रेसा

४ सारेमप, म प धू निसां^नि़ धूप, म प^नि़ धू^नि़ धूसां^रें निसां, सां रें

^म गूं^म गूं रेंसां, रें रें सां निसां, ^नि़ धूपधूम, म प धू नि सां

नि़ धू^म प^म गू, ^सा रें^सा नि़, सारेगम, ^म प^म गू^म गूरेसा

५ सा^नि़ धू^नि़ धूपधूम, म प धूनि^नि़ धूप, म प ध निसां^नि़ धूप, ^रें नि

^रें सांगूं^सा रेंसां, रें रें सां निसां^नि़ धूपधूम, प^म गू^म गू^सा रेसा

६ प^म गूरेसा^रें नि़, सा रेगम, मप^म रेम, ^नि़ धू^नि़ धूप, धू मप ^म रेम,

म प धू निसां^नि़ धूप, रें रें सां नि सां रेंनिधूप, ^म गूं^म गूं^सा रेंसां,

रें रें सां निसांनिसां रेंगंमं, प^म गूं^सा रेंसां, रें निसां^नि़ धूप, म प

धू निसां^म गू^म गू^म गू^सा रेसा

तान

७ सारेगमरेमपपमगूरेसा, सारेगमरेमपनि़नि़धूपमगूरेसा, सारेगमरेम

पधूनिसांनिधूपमगूरेसा, सारेगमरेमपधूनिसां रें रेंसांनिधूपमगू

रेसा, सारेगमरेमपधूनिसां रेंगूं रेंसांनिधूपमगूरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८ पप–मपप–मपप–मग्रेसा– रेरेसानिंसारेगमपमरेमपनिनिधपमग्
रेसा, रेरेसानिंसारेगमपमरेमपधनिसांनिधपमपनिनिधपमग्रेसा

९ सारेरे–रेगग–गमम–मपप–रेमम– पधध– धनिनि– निसांसां–
सां रें रें–रेंगंगं–सां रें रें–निसांसां–पधध–मपप–रेमम-रेगग-
सारेरे–निंसासा

१० सारेगमपमरेम–मपधनिसांनिधप–निसां रेंगं रेंसांनिसां–मंगंमंगं
रेंसां-रेंसां रेंसांनिनि–सांनिसांनिधप–निधनिधमप–धप – धप
मरे–मपमपमग्रेसा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

क्र. १३ राग–देवगंधार, लक्षणगीत; झपताल

सोहत प्रभात में; सुभ देवगन्धार। 'धनि' मृदु लेत अरु उभय जहं गान्धार ॥ ध्रु० ॥ आसावरी अंग; गुनीजन जरसात। 'धग; दोउ सुरन जहँ; करत मधु संवाद ॥ १ ॥

निध निध प म ध म प मग S रे सा S | रे सानिं सा S रे ग म
सो . ह त प्र . . भा त में | सु भ दे व गं .
१ ३ + ८ | १ ३ +

म S म | म म प प ध नि सां S नि सां रें नि S रेंसां निध प |
धा र | ध नि मृ दू . . . ले . . . त अ रु |
८ | १ ३ + ८

म प नि ध म प मग रे सानिं सा रे ग रे ग म म |
उ . . भ य ज हं गां . धा . . . . . र |
१ ३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

म प नि॒ध॒ ऽ नि॒ध॒ नि॒ध॒ सां सां ऽ सां | नि॒ध॒ नि॒ध॒ ग॒ रें सां रेंनि
आ. सा व री . अं ग | गु नि . ज न ह
१ ३ + ८ १ ३ +

रेंसां नि॒ध॒ ऽ प | ध॒ म म प ध॒ नि॒ सां ऽ नि॒ रेंसां रें नि॒ध॒ प | ध॒ म
र सा त | ध ग दो ड . . . सु र न ज हँ | क र
८ १ ३ + ८ १

म प नि॒ ध॒ प ध॒ म प मग॒ सारे सा |
त . . म धु सं . . वा . द |
३ + ८

क्र. १४ राग–देवगंधार, ख्याल; एकताल

मैं तोरे अंगना खेलूं। हियरवा भरो उमंगवा ॥ ध्रु० ॥ तेरो घर जननी! कह दे कहां ना, जाय रचूं मैं उत ही रंगवा ॥ १ ॥

, मरे म प मप | नि॒ध॒ नि॒ध॒ प , म म प ध॒ प मग॒ मग॒ मग॒ रेरे सा
मैं . तो . | रे . . अं ग . . . ना . . खे लूं
११ १ ५ +

सानि॒ सा रे रेध॒ सानि॒ सा | सा , सा रे ग म म धप नि॒ ध॒ ध॒ म
. हि य र . . | वा . . . . भ रो . . उ मं
९ ११ १ ५ +

म प ध॒ प मग॒ मग॒ मग॒ रेरे सा , मरे म प मप | नि॒ध॒ नि॒ध॒ प , म
ग . . . वा . . . . . . मै . तो . | रे . . अं
९ ११ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म प धृ प मगृ मगृ मगृ रेरे सा
ग . . . ना . . खे लूं
५ +

॥ अंतरा ॥

म प निृधृ निृधृ सां सां ऽ निृसां | सां ' निृधृ धृ सां ' रें सां रें
ते रो घ र ज न . | नी क ह दे क . हां
९ ११ | १ ५

मगृ मगृ रेंरे सां सांनिृ रेंसां रें निृधृ ' निृधृ निृधृ सां | सां निृधृ प
. . ना . जा . . थ र चूं . | मैं . .
+ ९ ११ | १

धृ म म म प धृ म मगृ रे सा रे ग म प मगृ रे सा ' रे म प मप | रे
. . उ त ही . . . रं ग वा . . . . . . मैं . तो . | रे
५ + ९ ११

क्र. १५ राग–देवगंधार, तीनताल (मध्यलय)

लाडिली बना बन आया सो मोरे घरु नीकी समधन समधी मिल बैठे शुभ घडि शुभ दिन ॥ ध्रु० ॥ गावो बजावो सब मिल सखियां सहेलरी हस बनरी को छिन छिन ॥ १ ॥

म म प सां निृधृ प धृ म | धृ धृ प म प ऽ मग ऽ रे सा रे मगृ ऽ |
ला डि ली ब ना . ब न | आ . . . . या सो . मो रे |
+ ७ | १ ३ + ७

रे सारे ऽ सा निं सा सा रे रे म म प धृ म प | मगृ रे सारे मगृ
घ . रू . नी की स म ध न स . म . | धी मि ल बै
१ ३ + ७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे ^सा^रे सा सा सा रे ग ग म | ग म रे ग सा रे ग म ग म
. . ठे ड्डु भ घ डि ड्डु भ | . . . . दि न
+ ७ १ ३

॥ अंतरा ॥

'म म म प ^नि^ध | सां सां ऽ ^नि^सां सां सां ^नि^ध ध सां रें सां रें
गा वो ब जा वो | स ब . मि ल स खि यां स हे .
+ ७ १ ३ . + ७

ग रें ग | ^रें^रें सां ऽ प ध ^ध^प म प ध नि | सां प 'प ध प म ^ग^म
. . . | ल रि ह स ब न री . को | . . छि न छि न .
१ ३ + ७ १ ३

क्र. १६ राग—देवगंधार, तीनताल (मध्यलय)

मनहरवा मोरि रे चुरैया रंग दे ॥ ध्रु० ॥ अचानक मैं ठाडी भई रे मालनिया और रंग दे चुनरी रंग देसवा अपनी उमंग सो और मंगादे सखे हरवा ॥ १ ॥

म म प प ^नि^ध ऽ प म प | ^म^ग ^सा^रे सा 'सा रे सा रे नि सा रे |
म न ह र वा मो . रि | रे . . चु रै या . . रं ग |
+ ७ १ ३ + ७

ग म प ^म^रे म म म प प ^नि^ध ऽ प म प | ^म^ग
दे . . . . म न ह र वा मो . रि | रे
१ ३ + ७ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

, म म प नि॒ध॒ नि॒ध॒ सां ऽ ऽ नि॒सां सां | सां , नि॒ध॒ ध॒ सां ऽ रें
अचानक मैं . . ठा | डी भइ रे .
३ + ० १ २

रें गं॒ रें सां नि॒ सां | नी सां रें सां नि॒ध॒ प प ध॒ प म प ऽ प ध॒ |
. . मा ल नी . | . . . . या . औ र रं ग दे चु न |
+ ० १ २ + ०

नि॒ सां ऽ प प ध॒ प म ऽ प म गम | म प प ध॒ प म म ऽ प ध॒
री . . रं ग दे . स वा . | अ प . . ने उ मं . .
१ २ + ० १ २

ध॒ प म ग॒ ऽ ऽ रे | सा ऽ सा सा सा रें ऽ सां नि॒ ध॒ | नि॒ ध॒ नि॒ ध॒
गा . सो . . | . औ र मं गा दे स खे | द्दा . . र
+ ० १ २ + ० १

प धम म प सां नि॒ध॒ प ऽ ध॒ म प |
क स न ह र वा . मो . रि |
२ + ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—आसावरी (ऋषभ कोमलकी)

इस राग में ऋषभ, गांधार, धैवत और निषाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—ओडव-सम्पूर्ण. वादी—धैवत. संवादी—गांधार.

समय—दिन का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—ध् म प मग् रे् सा

आरोह—सा रे् म प नि्ध्, सां

अवरोह—सां नि् ध् म प मग्, रे् सा

विशेष—इस राग का सब चलन आसावरी की तरह ही होता है, केवल शुद्ध ऋषभ की जगह कोमल ऋषभका उपयोग होता है। आसावरी के स्वरूप को कठिन बनाने के लिये ही उसमें कोमल ऋषभ लेकर गाते हैं। साधारणतया आरोह में निषाद वर्जित रहता हैं। किन्तु इस नियम के अपवाद-स्वरूप "प ध् नि् ध् म प ग्" इस प्रकार निषाद लेने का प्रचार है। तथा जौनपुरी के ढंग के स्वरसमूह भी इसमें लिये जाते हैं। जैसे—"म प ध् नि् सां नि् ध् प।"

आलाप

१ सा नि्ध्ं नि्ध्ंसा, रे् मग् मग् मग्, ग्रे् ग्रे् ग्रे् रे् नि् सानि्सा

२ सा रे् मग् मग् मग्, ग्रे् ग्रे्म, प मग्ं मग् ग्रे् ग्रे् सानि् सानि्सा

३ सा रे्म, पम पमप, प नि्ध् नि्ध्प, ध् मप मग् मग् ग्रे् ग्रे् रे् नि् सानि्सा

४ ग्रे् ग्रे् पम पमप, म प नि्ध् नि्ध्पध्म, म ध्पनीध्प, ध्म, म ध्प नि्ध् नि्ध्सां, सांनि्ध्पध्म, म प ध्नीध्प, ध्म, म प ध् ध् प म प, मग् मग्, ग्रे् ग्रे् रे् नि् सानि्सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ सा, रे॒ म प नि॒ ध॒ नि॒ ध॒पध॒म, म प नि॒ ध॒ नि॒ ध॒सां नि॒ सां, रें॒सां नि॒ सां नि॒सां, रें॒ म॑ ग॒ म॑ ग॒ ग॑ रें॒ ग॒ रें॒ नि॒ सां नि॒सां, रें॒ प॑ म॑ म॑ ग॒ ग॑ रें॒ ग॒ रें॒ सां नि॒ सां नि॒सां, रें॒नि॒ध॒पध॒म, म प ध॒ सां नि॒ ध॒मपध॒, नि॒ ध॒ नि॒ ध॒मग॒रे॒, ग॒रे॒ग॒रे॒सां निं॒ सां निं॒सा

६ म ग॒ म ग॒ म ग॒रे॒सा, प म ग॒ म ग॒रे॒सा, नि॒ ध॒ नि॒ ध॒पध॒म, प म ग॒ म ग॒रे॒सा, सा नि॒ ध॒ नि॒ ध॒मपध॒मग॒रे॒ ग॒ रे॒सा, रें॒ रें॒ नि॒ध॒ ध॒ मपध॒मग॒रे॒ ग॒ रे॒सा, गं॒ रें॒ नि॒, मं गं॒ रें॒, प मं गं॒ रें॒ गं॒ रें॒ सां नि॒ सां नि॒ध॒मपध॒मग॒रे॒ ग॒ रे॒ रें॒ निं॒ सा निं॒सा

तान

७ सारे॒मम ग॒रे॒सा, सारे॒मपपम ग॒रे॒सा, सारे॒मपध॒मपध॒मपमग॒रे॒सा, सारे॒मपध॒नीध॒पमग॒रे॒सा, सारे॒मपसांनि॒ध॒पमग॒रे॒सा, सारे॒मपनि॒सां रें॒ रें॒नि॒ध॒मपमग॒रे॒सा, सारे॒मपनि॒सां रें॒गं॒गं॒ रें॒नि॒ध॒मपमग॒रे॒सा

८ रे॒रे॒ममपपध॒ध॒ममपपनीनीध॒ध॒ममपपध॒ध॒ममग॒ग॒रे॒रे॒सासा, रे॒रे॒ममपपनि॒नि॒ध॒ध॒सांसांनि॒नि॒ रें॒ रें॒नि॒नि॒गं॒गं॒ रें॒ रें॒नि॒नि॒मंमंगं॒गं॒ रें॒ रें॒निं॒ नि॒ध॒ध॒ममपपमग॒ग॒रे॒रे॒सा

९ रे॒ग॒रे॒–रे॒ग॒रे॒निं॒सा–ग॒मग॒–ग॒मग॒–रे॒रे॒–मपम–मपम–ग॒ग॒–ध॒नि॒ध॒–ध॒नि॒ध॒–मम–नि॒सांनि॒–नि॒सांनि॒–ध॒ध॒–मपम–मपम–ग॒ग॒–रे॒ग॒रे॒–रे॒ग॒रे॒–निं॒सा

१० पध॒ध॒–मपप–मग॒रे॒सा–ध॒नि॒नि॒–पध॒ध॒–मपप–मग॒रे॒सा-सां रें॒ रें॒–नि॒सांसांध॒नि॒नि॒–पध॒ध॒–मपप–मग॒रे॒सा

११ सारे॒रे॒–रे॒मम–मपप–पध॒ध॒–ध॒सांसां–सां रें॒ रें॒–रें॒गं॒गं॒–सां रें॒ रें॒–नि॒सांसां–ध॒नि॒नि॒–पध॒ध॒–मपप–रे॒ग॒ग॒–सारे॒रे॒–निं॒सासा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १७ राग—कोमल आसावरी, लक्षणगीत; तीनताल (मध्यलय)

आसावरी भेद गुनि गात। कोमल री-युत मधुर प्रकार। 'गधनि' मृदु सुरन सोहत प्रात। नृप-मंत्री 'ध-ग' सुरन सुहावत। ओडव-सम्पूरन दिखलावत। भक्ति अरु करुण मधुर भाव प्रगटात ॥ १ ॥

'सा रे॒ म प सां | नि॒ध॒ प ध॒ म प मग॒ ग॒ ग॒रे॒ ऽ सा रे॒ रे॒ रे॒ |
o o o o o o | — o o o o o o — o o — o o
आ . सा . व | री . भे . द गु नि गा त को म ल |
७ १ ३ + ७

ग॒रे॒ सा सा रे॒ म प प नि॒ध॒ प प नि॒ध॒ ध॒ ध॒ रें॒ | नि॒ सां नि॒ध॒ प
— o o o o o o — o o o o o o | o o o o
री यु त म धु र प्र का . र ग ध नि मृ | दु सु र न
१ ३ + ७ १

म प ध॒ म ग॒ रे॒ सा सा रे॒ म प सां | नि॒ध॒ प ध॒ म प मग॒ ग॒
o o o o o o o o o o o o | — o o o o o o
सो . ह त प्रा . त आ . सा . व | री . भे . द गु नि
३ + ७ १ ३

|| अंतरा ||

म म म प नि॒ध॒ ध॒ | नि॒ध॒ ध॒ सां सां रें॒ नि॒ सां सां नि॒ध॒ नि॒ध॒ ध॒
o o — — o o | o o o o o o o o — o o
नृ प मं त्री ध ग | सु र न सु हा . व त ओ ड व
+ ७ १ ३ +

सां रें॒ | ग॒ ग॒ रें॒ सां रें॒ नि॒ ध॒ प म म म प सां नि॒ध॒ प | म म म
— — | o o o o o o o o — o o o o o o | o o o
सं पू | र न दि ख ला . व त भ क्ति अ रु क रु ण | म धु र
७ १ ३ + ७ १

प ध॒ नी ध॒ धम प मग॒ रे॒ सा सा रे॒ म प सां |
◡ ◡ o o o o o o o o o o o o o |
आ . . व प्र ग टा . त आ . सा . व |
३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र० १८ राग—कोमल आसावरी, ख्याल, एकताल

कगवा बोलइ रे सो अब मोरे पिया को सगुन बिचारो ॥ ध्रु० ॥ दूध भात सब तोहे खिलैंया और डारुं गले हार ॥ १ ॥

' रे॒ मग॒ मग॒ रे॒ सा रे॒ रे॒ सा नि॒ं सा ऽ | सा ऽ रे॒ म प प ऽ म प
क . . वा . . . . | बो लइ . रे सो अ
९ ११ | १ ५ +

नि॒ध॒ ध॒ रें॒ ऽ सां नी॒ ध॒ | प म म प प ध॒ म प ऽ मग॒ मग॒ मग॒ ग॒रे॒
ब मो रे पि या को | . . स गु न . वि . चा . . रो
९ ११ | १ ५ +

सा ' रे॒ मग॒ मग॒ रे॒ सा रे॒ रे॒ सा नि॒ं सा ऽ | सा ऽ रे॒ म प प ऽ ऽ ऽ
. क ग . वा . . . . . . | बो लइ . रे
९ ११ | १ ५ +

॥ अंतरा ॥

म प नि॒ध॒ नि॒ध॒ सां नि॒सां सां | सां ऽ नि॒ध॒ सांनी॒ रेंसां गं॒ रें॒ सां
दू ध भ: . त . स | ब तो . . . हे .
९ ११ | १ ५

' रेंनी॒ नि॒सां सां रें॒ सां ऽ रें॒ नी॒ ध॒ प म प | नि॒ध॒ सां नि॒सां प ध॒
खि लै . . . . या . . औं र | डा रुं . ग .
+ ९ ११ | १

म प ऽ मग॒ मग॒ मग॒ ग॒रे॒ सा
ले . हा . . र .
५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १९ राग–कोमल आसावरी, तीनताल (मध्यलय)

मोहे जागत भरे चैन न रही नैनन तामें ते सुपने में करा समाइए ॥ ध्रु० ॥ तानसेन प्रभु समझ कैसे कीजे भोगविलास कठिन सुधबुध सबही खेरी पुनि अमरत भेंट सोना दे रतन जडाइए ॥ १ ॥

सा रे॒ म प | नि॒ध॒ नि॒ध॒ प प मग॒ ऽ गरे॒ सा सा सा रे॒ नि॒ध॒ |
ο ο ο ο | – ο ο ο ο – – ο ο ο ο –
मो . हे . | जा ग त भ रे चै . न न र ही |
७ १ ३ + ७

सा सा सा गरे॒ म प नि॒ध॒ ध॒ सां सां | रें नि॒ ऽ सां नि॒ध॒ म म प
– ο ο – – – ο ο – – | ο ο ο ο ο ο ◡ ◡
नै न न ता मे ते सु प ने में | क रा स मा . इ .
१ ३ + ७ १ ३

ध॒ प मग॒ रे॒ सां सा रे॒ म प | नि॒ध॒ नि॒ध॒ प प मग॒ ऽ
◡ ◡ ο ο – ο ο ο ο | – ο ο ο ο –
. . ये . . मो . हे . | जा ग त भ रे
+ ७ १ ३

॥ अंतरा ॥

म म प ऽ प नि॒ध॒ ध॒ | नि॒ध॒ नि॒ध॒ सां रेंनि॒ सां सां नि॒ध॒ सां सां
– ο ο ο ο ο ο | ο ο ο ο ο ο – – – ◡
ता न से न प्र भु | स म झ कै . से की जे भो
+ ७ १ ३ + ७

रें ग॒ रें सां | रें नि॒ नि॒ सां नि॒ध॒ ध॒ प प धम म प सां सां नि॒ध॒ प |
◡ ο ο ο | ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο – ο ο
. . ग वि | ला . स क ठि न सु ध बु ध स ब ही खे . |
१ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म प ध् प ^म^ग् ग् ^ग्^रे् रे् सा सा सा रे् म प ^नि्^ध् सां | सां रें गं् रें
ॅ ॅ ॅ ॅ ० ० ० ० ० ० – ० ० ० ० – | ॅ ॅ ० ०
री . . . पु नि अ म र त भे ट सो . ना . | दे . . र
१ २ + ७ . १

नि् ^नि्^ध् म म प ध् प ^म^ग् रे् सा सा रे् म प |
० ० ० ॅ ॅ ॅ ॅ ० ० – ० ० ० ० |
त न ज डा . . . इ ये . मो . हे . |
२ + ७

राग—जोगी (आसावरी)

इस राग में दो ऋषभ दो गान्धार, दो निषाद तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—ओडव सम्पूर्ण. वादी—षड्ज. संवादी—पंचम.

समय—दिन का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—रें नि् ध् प, ध् म प ग ^म^रे् सा

आरोह—सा रे् म प ध् सां

अवरोह—सां, रें नि् ध् प, ध् म प ग ^म^रे् सा

विशेष—इस राग की रचना जोगी और आसावरी इन दो रागों के मेल से हुई है। इसके पूर्वांग में जोगिया का अंग दिखलाया जाता है। उत्तरांग में आसावरी का स्वरूप दिखाते हैं। आसावरी के शुद्ध ऋषभ का प्रयोग केवल तारसप्तक में ही "रें नि् ध् प" इस प्रकार किया जाता है। इसी प्रकार "ध् म ^ध्^प नि् ध् प", "सां रें गं् रें सा, रें नि् ध् प" इस प्रकार के जो स्वर तारसप्तक में लिये जाते हैं उनसे आसावरी का अंग स्पष्ट दिखलाई देता है। इसके सिवाय और कहीं भी आसावरी की छाया नहीं आती। और सब जगह जोगी का ही स्वरूप दिखलाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा, निंधूनिंधूसा, सारेम, पग, मरेसा, निंरेसा

२ सारेमप, म पधूप, नीधूप, धूम, पगमरेसा, निंरेसा

३ सा रे म पधूनिधूप, धूम, म प धूसां, रें रें नीधूप, पमधूपनी धूप, धू धूम, प पग, म मरे, सा रे ग ग रे निंसा

४ मपधूसां, सां रें सां रें गंमं, गंरेंसां, सां, रें रें नीधूप, मधूप नीधूप, म प धूसांनी धू प म ग प म गरेसा

५ प पगमगप, धूमधूपनीधूप, सांनिधूमप रेंसां, मंगंरेंसां, रें रेंनी धूप, पमधूपनीधूप, धूमपगमरेसा रे सा रे गमगरेसा

तान

६ सारेमगरेसा, सारेमपधूमपगमगरेसा, सारेमपधूनीधूपमगरेसा, सारेमपधूसांनीधूपमपधूमपमगरेसा, सारेमपधूसां रेंसां रें रेंनि धूपमपमगरेसा, सारेमपधूसां रेंगं रेंसां–रेंगंमंगं रेंसां रें रेंनिधू पमपधूमपमगरेसा

७ पमगरेसा, मपधूमपमगरेसा, सांनिधूप– रें रेंनिधूपम-गंगं रेंसां-मंगं रेंसां–रें रेंनिधूपमपधूमपमगरेसा

८ सारेरे– रेमम- मपप–पधूधू–धूसांसां– रें रेंनि–सांसांधू–निनिप-धूधूम–पपग–ममरे–गरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९ सारे़मम–रे़मपप–मपधृधृ–पधृसांसां–धृसां रें़ रें़–गं रें़सांसां–रें रेंनि़नि़–सांसांधृधृ–नि़धृपप-धृधृमम-पपगग-ममरे़रे़-गगसासा

१० सारे़सारे़मगरे़सा–पधृपधृनि़धृपम–नि़सांनि़सां रें रेंनि़धृ–सां रें़ सां रें़मंगं रें़सां–नि़सांनि़सां रें रेंनि़धृ–मपमपनि़नि़धृप-गमगमप मगरे़–सारे़सारे़मगरे़सा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

क्र. २० राग–जोगी-आसावरी, लक्षणगीत; द्रुतएकताल

सोहत मधुरस वारी। जोगी आसावरी। प्रात समै जेहि गावत। धैवत मृदु दोउ नि-ग-री ॥ ध्रु० ॥ अंश प्रथम सुर सोहत। पंचम जहं संवादी। पूर्वांग में जोगी। उत्तर अरु आसावरी ॥ १ ॥

प धृ धृ ^(प)म प ^(प)ग म ग म प म ^(ग)रे़ सा | सा रे़ म प प म प सां
– o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ o o | o o o o – o o o
सो ह त म धु र स वा . . . री . | जो . गी . आ सा . व
१ ३ + ५ ६ १ ३ + ५

नि़धृ ऽ प | प प धृ ^(नि)सां रें़ सां ^(नि)धृ प प | धृ प धृ म प ग म
o o o | – o o – o o – o o | – o o o o o o
री . | प्रा त स मै जे हि गा व त | धै व त मृ दु दो उ
६ १ ३ + ५ ६ १ ३ +

ग ^(प)म ^(ग)रे़ सा |
o o o o |
नि ग री . |
५ ६

॥ अंतरा ॥

प प धृ धृ धृ रें़ रें़ सां रें़ सां | सां रें रें नि़ धृ^(धृ)म म प धृ धृ प |
– o o o o o o – o o | – o o o o – ◡ ◡ o o o |
अं श प्र थ म सु र सो ह त | पं च म ज हं सं वा . . दी . |
१ ३ + ५ ६ १ ३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प म प धृ धप म ग म गरे सा | म प प धृ म प सां सां निधृ प |
पू वां . . ग में . . जो गी | उ त्त र अ रु आ सा . व री |
१ ३ + ५ ६ १ ३ + ५ ६

क्र. २१ राग–जोगी-आसावरी, ख्याल; एकताल

मनु मत मार वे मियां मैं तो तेरी पाके नजारदी देखन वाल्या ॥ ध्रु० ॥
शोरी नजारदी ताबिन लेंदा न दिखायत चेतन दिल दुखंदा ॥ १ ॥

रे म प धृ | धृ ऽ धृ प ऽ धृ धृ म ऽ प प ग ऽ म म रे ऽ सा रे
मै नु म त | मा र वे . . . .
११ १ ५ +

सा रे ग म ऽ गरे सा ऽ प धृ | सां सां ऽ सां ऽ रें सां रें गं मं ऽ
. . . . मि यां मैं तो | ते री पा . . . . .
९ ११ १

गरें सां ऽ सां रें रें नी ऽ ऽ धृ प पम धप नी | धृ प ऽ प धृ धृ
के न जा . . . र दी दे . . | ख न वा . .
५ + ९ ११ १

म ऽ प प ग ऽ म म रे ऽ सा रे सा रे ग म ऽ गरे सा ऽ रे म
. . . . ल्या मै नु
५ + ९ ११

प धृ | धृ ऽ धृ प ऽ धृ धृ म ऽ प प ग ऽ म म रे ऽ सा
म त | मा र वे . . . .
१ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

निधु धु धु रें ऽ ऽ रें | सां ऽ रें रें रें सां रें सां रें गं मं ऽ गंरें
○ ○ ○ ○ − ○ ○ | − − − ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○
शो री न जा   र | दी   ता वि न लैं . . . . .   दा
९   ११ | १   ५

सां ऽ रेंसां गं रें सां ऽ रें रें नि ऽ ऽ धु | प ऽ प धु म प परें म
○ −   ○ ○ ○ ○ − ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ | − − ○ ○ ○ ○ ○ ○
.   . . न दि खा . .   थ | त   चे . . . . .
+   ९   ११ | १   ५

पधु धु प निधु धु धु धु सां ऽ नि धु प म ग रे सा ऽ
○ ○ − ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
. त न   दि ल दु खं .   . दा . . . . .
    +   ९

क्र. २२ राग–जोगी-आसावरी, तीनताल (मध्यलय)

यह नैना रिझवार नये री। एक वेर लखि रूप श्याम को तज घर बार फकीर भये री ॥ ध्रु० ॥ अब देखे विन डारत आँसू युग समान पल बीत गये री ॥ १ ॥ नारायण येहू अति चंचल फल पाये जो बीज बये री ॥ २ ॥

सा रे म प | धु प म ग म प म म गरे ऽ सा सा रे म | ऽ म प प
○ ○ ○ ○ | − ○ ○ ◡ ◡ ○ ○ ○ − ○ − − ○ ○ | ○ ○ ○ ○
य ह नै . | ना रि झ वा . . र न ये   री ए क वे | र ल खि
७ | १   ३   +   ७ | १

धु म म प नि धु प प धु रें सां | रें नि नि सां निधु म पधुप म ग
○ ○ ○ ○ ○ ○ − ○ ○ ○ ○ | ○ ○ ○ ○   ○ ○ ○ ○ ○ ○
रू . प श्या . म को त ज घ र | वा . र फ की . र भ ये .
३   +   ७ | १   ३   +

रे सा सा रे म प | धु प म ग म प म
○ ○ ○ ○ ○ ○ | − ○ ○ ◡ ◡ ○ −
री . य ह नै . | ना रि झ वा . . र
  ७ | १   ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म म म प नि॒ध॒ ध॒ | नि॒ध॒ सां सां नि रें सां सां रें ग॒ म रें ऽ सां
अ ब दे खे वि न | डा र त आँ . सू यु ग स . मा न
\+ ७ | १ ३ + ७

सां सां | रें नि॒ ध॒ प ध॒ म प ग॒ मग॒ रे निसा सा रे म प |
प ल | बी . त ग ये . री . . . . य ह नै . | ना
१ ३ + ७

राग—सिन्धोरा-आसावरी

इस राग में गान्धार और निषाद कोमल, धैवत दोनों तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में गांधार और निषाद वर्जित हैं।

जाति—ओडव-सम्पूर्ण. वादी—तार षड्ज. संवादी—पंचम.

समय—प्रातःकाल का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—म प ध सां, नि॒ ध॒ प, ध म प ध सां

आरोह—सा रे म प ध सां

अवरोह—सां नि॒ ध प, ध॒ म प मग॒ ; रे म मग॒ सारे सा

विशेष—यह राग सिन्धोरा और आसावरी इन दो रागों के मेल से बना है। इस में आसावरी अंग की अपेक्षा सिन्धोरा का अंग अधिक है। आसावरी का अंग केवल अवरोह में ही एक विशिष्ट ढंग से लिया जाता है। जैसे-सां रें नि॒ ध॒ प।" इसके आगे फिर ऊपर जाते हुवे "ध प धसांनि॒ ध प, ध म प ध सां" इस प्रकार सिन्धोरा का अंग जोड दिया जाता है। कभी-कभी अवरोह में सब अंग आसावरी का ही लेते हैं। जैसे—"प सां नि॒ ध॒ प, ध॒ ध॒ प म पमग॒ रे सा।" यह राग उत्तरांग-प्रधान है। सिन्धोरा-आसावरी गाते हुवे सिन्धोरा और आसावरी इन दोनों रागों को सुन्दरता से मिश्रण करने में ही गायक की कुशलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा नि़ ध़ नि़ ध़सा, सारेम, मग़ मग़रेम मग़ सा रेसा
२ सारेम, म पधम मग़रेम, प मग़ मग़रेसा
३ सारेमपधमग़रेम, म प ध सां नि़ सां नि़धप, ध़म, म प ध़ मप, मग़ मग़ सा रेसा
४ सारेमप, मप नि़ ध़ नि़ ध़पध़म, म प धसां, सां नि़ सां नि़धप,म प नि़ ध़ नि़ ध़पध़म, मप, मग़ मग़ मरेम, मग़ मग़ सा रेसा
५ सा रे म प धसां, सां नि़ सां नि़धसां, सां रें मग़ं मग़ं रेंसां,सां,सां रें-रें सां–सां नि़–नि़ ध--ध प–मग़म, मपपसां, नि़ ध़ नि़ ध़प, ध़म मप मग़ मग़ सा रेसा
६ प मग़रेमग़रेग़रेसा, नि़ ध़ नि़ ध़पध़म, सांनि़धप, रेंसां मग़ं मग़ं रेंसां, सां रें नि़ध़प, म प धसां, नि़ ध़पध़म, प ध़ म प नीध़प, ध़म, मप मग़ मग़रेग़ सा रेसा

तान

७ सारेमपध़मपध़मपध़पमग़रेमग़रेसा, सारेमपधसांनि़धपमपनि़ध़प मपध़पमग़रेसा, सारेमपधसां रेंसांनि़धपमपधसांनि़धपमपध़पमग़ रेसा, सारेमपधसां रेंग़ं रेंसां रेंमग़ं रेंसांनि़सां रेंसांनि़धपमपनि़ नि़ध़पमपध़पमग़रेसा
८ रेममग़रेसा, पधधपमग़रेसा, नींनीध़पमपध़पमग़रेसासांनि़ध़पम पनींनीध़पमपध़पमग़रेसा, रें रेंसांनि़सां रेंमग़ं रेंसां रेंसांनि़धप मपनि़ध़पमपध़पमग़रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९ सारेसप–रेमपध–मपधसां–धसां रेंगं–सां रेंमगं– रेंसां रें रेंसां
निधूप–मपधसां–निधपम–पनिधूप–मपधूप– मगूरेसा

१० सारेरे– रेमम–मपप–पधध–धसांसां–सां रें रें– रेंमम– रेंगूंगूं–सां
रें रें–निसांसां–पनिनि–पधूध–मपप– रेमम–गूरेसा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

क्र. २३ राग–सिंधोरा-आसावरी, लक्षणगीत; झपताल

सरस रचना लसत; सिन्धुरा-आसावरी। उभय धैवत सहित, ग नि मृदुल विमल म-रि ॥ ध्रु० ॥ स-प नृप सचिव रहत; अनुलोम तज ग-नी। दिवस दूजो पहर जाहि गावत गुनि ॥ १ ॥

म प ध सां नि ध ^ध^म ^ध^प ^म^गू रे म ^म^गू रे सा | ^म^रे म प प ध सां
स . . . र स र च ना . . . ल स त | सिं . धु रा . .
१ ३ + ८ १ ३

नि ^नि^धू ^ध^म प ^म^गू रे सा | सा रे म प ध म प ध सां सां सां |
. . अ सा . व री . | उ भ य धै . . व त स हि त |
+ ८ १ ३ + ८

नि सां रें ^सां^नि धू प प म प धू म प ^म^गू रे सा |
ग . . . नि मृ दु ल वि . . म ल म रि . |
१ ३ + ८

॥ अंतरा ॥

म प ^नि^ध सां नि सां रें ^सां^नि ध म प ध सां | ^सां^ध सां ध सां रें मं
स प नृ प स . . चि व . र ह त | अ नु लो . . .
१ ३ + ८ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गु रे म गु सा रे सा ऽ | नि सा रे सा नि ध प धु म प मगु सा रे
. म त ज ग नी | दि . . व स . दू . . . जो . .
+ ८ १ २ +

प मगु रे सा | सा रे म प ध सा नि ध प धु म प मगु सा रे म प |
प ह र . | जा . हि गा . . . . . व त . गु नी . . . |
८ १ २ + ८

क्र. २४ राग–सिंधोरा-आसावरी, धीमा तिताला

रे मांग रे जो हात अब मोरि अंखियां फेरानी ॥ ध्रु० ॥ सुन सुन रे बालम रैन गई तोरी अब मोरी नींद हरानी ॥ १ ॥

' नि सा रे म प ध नी प ध | सा सा नि ध प ऽ प ऽ म धु प ऽ धु
रे . . . . | मां . ग . रे . . जो .
१ ५ +

मप मगु रे ऽ गु रे सा ऽ रे मगु रे गु | सारे सा गु गु रे सा रे ऽ ऽ
. हा . . त . अ ब . . | मो री . . . . .
१२ १

रेनि सा मरे पम धप धु म प मगु रे ऽ गु रे सारे सा ' नि सा रे
अं खि या . . . . . फे . . . रा . नी रे . .
५ + १२

म प ध नी प ध | सा नि ध प ऽ प ऽ म धु प ऽ धु मप मगु रे गु रे सा
. . . . . . | मां . ग . रे . . जो . . . हा . . त .
१ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म म प प सां सां ऽ ^नि^सां सां | सां ऽ ऽ ^नि^सां ^सा^रें सां ऽ रें
सुन सुन रे बा . ल | म रै . न ग
१२ | १ ५

सां ऽ नि ध ^प^ध सां नि ऽ ^ध^ध | प ऽ म प नि सां रें ^सां^रें नि ध
इं . . . तो . . | री अ ब मो री नीं . द .
+ १२ | १ ५

ऽ प ^म^प ^म^ग ऽ रे ^सा^रे सा ’ निं सा रे म प ध नी प ध |
. ह रा . . नी रे . . . . | मांग
+ १२

क्र. २५ राग–सिंधोरा-आसावरी, ख्याल; धीमा तिताला

हर दम् मौला तेरो नाम फिर अपने को ध्यान धराये ॥ ध्रु० ॥ सभी मुराद भर कर पायो थो डरे सोई भरे ॥ १ ॥

म प ध म प म प ध | सां ऽ सां रें सां ऽ गं गं रें रें सां सां नी
हर दम् . . . . मौला | ते रो . . ना . . . . . .
१२ | १ ५

ध प म ग म म ऽ म म प सां ^नि^ध प ध ध प म प ऽ | ^म^ग ऽ
. . . . . म फि र अ प ने . . . . . . | को
+ १२ | १

^सा^रे सा ऽ ^म^रे म प सां ^नि^ध प ऽ प ध ^ध^नी ध प ध म प म प ध |
. . ध्या . न ध रा . ये . . हर दम् . . . . मौला |
५ + १२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

सा सां ऽ नी ध प प मगु गु रे गु रेरे सा 'सा सा मरे म प रें सां
◡ ◡ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
स भी सु रा . द भ र क र पा यो यो ड रे . सो ईं भ
१ ५

सां रें नी ध़ प ध प ध नीं ऽ ध प ध म प म प ध |
○ ○ ○ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ |
रे . . . . हर् दम् . . . . मौला |
\+ १२

क्र० २६ राग–सिंधोरा-आसावरी, तीनताल (मध्यलय)

दरस बिन दूखन लागे नैन। जब से तुम बिछुरे मेरे प्रभुजी, कबहूँ न पायो चैन ॥ ध्रु० ॥ शब्द सुनत मेरी छतियाँ काँपे, मीठे लागे बैन। एक-टकटकी पंथ निहारूँ भई छमासी रैन ॥ १ ॥ बिरह बिथा कासूँ कहूँ सजनी, बह बई करवत नैन। मीरा के प्रभु कबहिं मिलोगे, दुख मेटन सुख दैन॥२॥

'सा रे म प ध | सां ऽ रें नि़ नि़ ध प म प ध प मग़ रे रे म प
○ ○ ○ ○ ○ ○ | ○ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ – ○ ○ ○ ○
द र स बि न | दू . ख न ला . गे . . . नै न ज ब से
७ १ ३ \+ ७

ध़ प | ध़ म म प ध़ प मग़ रे म ग़ रे सा सा रे म प | ध सां नि़
○ ○ | ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ – ○ ○ ○ ○ – ○ ○ ○ ○ | ○ ○ ◡
तु म | बि छु रे . . . मे रे . प्र भु जी क ब हूँ न | पा . यो
१ ३ \+ ७ १

सां रें नि़ ध म प ध प मग़ रे सा सा रे म प ध |
◡ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ |
. . चै . . . . . न . . द र स बि न |
३ \+ ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

’म म प सां सां सां सां ध सां रें ^म^गु रें ^सां^रें सां | ’सां सां रें
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० – | ० ० ० ०
श ब्द सु न त में री छ ति यां . कां . पे | मी ठे .
१ २ + ७ १

रें नि ध प ’ध प म प ध प ^म^गु रे | ’म प सां नि सां ^नि^ध प
– ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ – – | ० ० ० ० ० ० ० ०
ला गे . बै . . . . . न . | ए क ट क ट की .
३ + ७ १ ३

^ध^म प ^ध^प ^म^गु रे सा | सा सां ऽ रें नि ध प ^सां^ध सां नि ध प म
– ० ० – ० ० | ० ० ० ० ० ◡ ◡ ० ० ◡ ◡ ◡ ◡
पं थ नि हा रूँ . | भ ई छ मा . . सी . रै . . .
+ ७ १ ३ +

गु रे सा रे म प ध |
◡ ◡ ० ० ० ० ० |
न . द र स बि न |
७

राग—खट (षट्)

इस राग में दो ऋषभ, दो धैवत दो निषाद तथा गांधार कोमल और अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी—पंचम. संवादी—षड्ज.

समय—दिन का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—रे नि सा ^म^गु, म प, ^नि^धु ^नि^ध नि प, सांनिधप

आरोह—रे नि सा ^म^गु, म प, ^नि^धु नि सां

अवरोह—रें सां नि ध प, ^नि^म प ^म^गु म रे सा

विशेष—खट राग छै रागों के मिलने से बनता है। खट शब्द ‘ षट् ’ का अपभ्रंश है जिसका अर्थ है छै। इस राग का विश्लेषण करके निश्चित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूप से यह कह सकना बहुत कठिण है कि इस में अमुक अमुक छै राग मिलते हैं। तथापि हमारी सम्मति में खट आसावरी अंग का राग है और इस में सुहा, कानडा, सारंग, देसी, गांधारी और सुघराई ये छै राग मिलते हैं। हमारे विचार में "रे नि़ सा मग़" ये शुरू में लिये जाने वाले स्वर सुहा के हैं। गांधार और धैवत पर जो आन्दोलन होता है उससे कानडे का भास होता है। "म प ध़ नि़ सां" इस टुकडे में तो स्पष्ट कानडा दीख पडता है। दोनों ऋषभों के प्रयोग से गान्धारी का स्वरूप दिखाई देता है। शुद्ध धैवत लेते समय सुघराई का भास होता हैं। कोई-कोई सुप्रसिद्ध गायक "प मग़ रे ग़ रे सा, सा रे म ग़, रेग़ रे सा" इस तरह के स्वर-समुदाय लेकर खट में देशी भी मिलाते हैं। दो ऋषभ लगाकर खट गाते है। वह एक प्रकार भी इस म दिया गया है। खट राग इतना कठिन और पेंचिदा है कि लिखकर उसका वर्णन पूरा कर सकना संभव नहि है। प्रत्यक्ष गुरुसे सीखने से ही इसका पूरा ज्ञान हो सकता है।

आलाप

१ सा, रेनि़सा, मग़मग़मसारेसा, पमग़मसारेसा

२ सा, रेनि़सा, मग़मग़मप, सानि़प, नि़मपमग़मपमग़मरेसा

३ मग़मग़मनि़प, नि़ध़नि़ध़नि़ध़नि़प, सांनि़धप, नि़मपमग़मग़मसारेसा

४ सानि़ध़नि़ध़नि़ध़नि़प, मपनि़ध़नि़ध़सां, सांनि़ रेंसां, सांनि़धप, नि़ध़नि़ध़नि़प, नि़मपमग़मग़मरेसा

५ मपनि़ध़नि़ध़नि़सां, ध़ नि़ सां रेंसां, मग़ंमगंमं रेंसां, रेंनि़सांनि़ धप, नि़नि़ प मपमग़मग़मरेसा

६ मग़मग़मरेसा, नि़ध़नि़ध़नि़ध़नि़प, म पनि़ध़नि़ध़नि़सां, मग़ंमग़ं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मं रेंसा, रें रें सां निसांनि धनि धनिप, मपधनिसांनिपनि मप
मगमगमरेसा

कोमल ऋषभयुक्त प्रकार

७ ग म प म रे सारेसा, सानिप, निधनिधनिप,मप निधनिधनि
सांमगंमं रेंसां, मगंमगंमंपंमगंमं रेंसां, रें रें सां निसांनिधप, नि
प मपसांमगमगमरेसा

८ रेसा, पमगमरेसा, निधनिधनिप, नि मपमगमगमरेसा, रें नि
सांनिधप, नि मपमगमगमरेसा

तान

९ निंसारेरेनिंसा, गमरेसानिंसा, सागमपनिपमपगमरेसानिंसा,
सागमपानिपसांनिधनिपमपगमरेसा, गमपानिसां रेंसांनिसां रेंमंमं
रेंसांनिसां रेंसांनिधनिपमपगमरेसा

१० गमम–गमम– रेसानिंसा, पनिनि–पनिनि-मपप-गममरेसानिंसा,
गमम–मपप–पनिनि निसांसां-सां रें रें-निसांसां-गंमंमं-सां रें रें-
निसांसां–पनिनि–पधध–मपप–गमम– रेसानिंसा

११ सासानिनिपपनिनिपमपपधधनिनिसांसां रें रेंनिसां-गंगंमंमं रें रें
सांसांनिनिसांसांनिनिधधपपममपपगगममरे रेसासा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. २७ राग-खट, लक्षणगीत; तीनताल (मध्यलय)

अत अचरज चकित भयो मनवा, जबही·खट राग सुनायो गुनि ॥ ष्ट० ॥ जटिल रूप रचना मनोहर। राग मिलत पट ग मृदु उभय रि·ध। संवादत पंचम षड्ज मधुर। गान समै दिन द्वितिय याम ॥ १ ॥

—पं. विनयचंद्रकृत

ᵐगु म रे रे सा सा ᵐगु म नि् म | प प नि् म प ᵐगु म प ^नि्धु नि्
o o o o o o o o o o | – ◡ ◡ ◡ ◡ – o o – o
अ त अ च र ज च कि त भ | यो म . न . वा ज ब ही ख
+ ७ १ ३ +

सां नि् सां रें सां सां | नि् ध ᵖम प ᵐग् ᵐग् म
o ◡ ◡ o o o | o o o o – o o
ट रा . . ग सु | ना . यो गु नी अ त
७ १ ३

॥ अंतरा ॥

म म प ^नि्धु ऽ नि् सां नि् | सां ऽ रें सां ^नि्धु नी सां सां ^नि्धु नी
o o o – o o o o | – o ◡ ◡ o o o o o o
ज टि ल रू प र च | ना म . नो . ह र रा .
+ ७ १ ३ +

सां मं रें सां सां सां | नि् सां रें सां नि् सां रें सां ^नि्धु ^नि्धु धु
o o o o o o | o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ o o ◡
ग मि ल त प ट | ग मृ दु उ भ . य . रि ध सं
७ १ ३ +

नि् सां रें रें सां सां ^रेंनि् सां | रें सां ^सांनि् नि् ध ध प म म प धु
◡ ◡ ◡ – o o o o | o o o o o o o o o o o
. . . वा द त पं . | च म प ड ज म धु र गा . ।
७ १ ३ +

नि् रें सां नि् ध | नि् नि् प म प ᵐगु म रे सा
o o o o o | ◡ ◡ ◡ ◡ o o o ◡ ◡
स मै . दि न | द्वि . ति . य या . म .
७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. २८ राग—खट, ख्याल; ताल—झुमरा

को याहु दरवाजवा मंदिर बाजे ठाडिले दरवानवा जिनके चरनवाला गेन देन गोस ॥ ध्रु० ॥ आवलिया अंबीया गोस कुतुबदीन आवले चलो मोरी बैंया पकर सब बाहुरे साहेब संग भेटवा ॥ १ ॥

म म नि नि म प ऽ मग ग ग रे सा रे ऽ सानि | सा ऽ नीं सा रे
को या हु . द . र वा . . . ज | वा . मं .
११ | १

पप मग मरे ग सा मरे म मप म प प प प ऽ म ध प | मप मरे म ऽ
दि र वा . जे ठा . . डि ले द र वा . . न | वा . .
४ + ११ | १

प मग मरे ग सा सा सा मरे म ऽ म प ऽमरे म ऽ | नि प नि म प
जि न के . . च र न . वा . ला . | गे . न . .
४ + ११ | १

मग ऽ रेरे सा रे नि सा पं निं पं
दे न . गो . . . . स
४ +

॥ अंतरा ॥

म प निध नि सां ऽ निसां | सां ऽ निध सानि रेंसां गं रें सां ऽ
आव् ली या अं बी . | या गो . स कु तु ब
११ | १ ४

निसां रें निध ऽ ध नि सां रें रें गं सां सां नि सां ऽ नि सां रें गं
. दी न आ व् . . . ले . च लो मो . . री . बै
+ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गं रें सां रें ऽ | सां नि नि नि नि ध ^पध प म म प ध नि ऽ रें सां
. . . . | यां . प क र स . ब . बा हु रे सा . हे
१ ४

नि ध प ऽ नि नि नि नि नि प ऽ नि नि प म रे म ऽ
ब सं ग भे . . . . . ट . वा . . .
+

क्र. २९ राग–खट, झपताल

विद्याधर गुनिजन सो कहा करिये कछु गुन चरचा की लराई लरिये ॥ ध्रु० ॥ जो कछु जानिये गाइये बजाइये नित गुनिजन सो कहा करिये कछु गुन चरचा की लराई लरिये ॥ १ ॥

म रे म रे म | प ऽ प प प प प प ऽ प | नि ध नि ध सां नि सां ऽ सां
वि . द्या | ध र गु नि ज न सो क | हा . क रि ये
८ १ ३ + ८ १ ३ +

नि ध नि ध नि प | सा नि ऽ प नि नि प म प म ग म सा सा नि ध
क . . छु | गु न च र . चा . . की . ल रा .
८ १ ३ + ८

नि ध नि | प नि नि प म प म ग म सा रे सा रे नि सा , म रे म रे म |
. . | ई ल . रि . . ये . . . . . . वि . द्या |
१ ३ + ८

॥ अंतरा ॥

म प नि ध नि ध नि सां ऽ नि सां सां सां | रें नि सां रें सां सां रें
जो . क . छु जा . नि ये | गा इ ये . ब .
१ ३ + ८ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेनि़ सां पनि़ ऽ प | नि़ ध प मग़ु म प नि़ध़ु सांनि़ सां नि़ | सां ऽ रें
जा . इ ये | नि . त गु नि ज न सो . क | हा क
\+ ८ १ २ + ८ १ २

रेंनि़ ऽ सां नि़ध़ु नि़ध़ु नि़ प | सा नि़ ऽ प नि़ नि़ प म प मग़ु म
रि ये क . . छु | गु न च र . चा . . की .
\+ ८ १ २ +

सा सा नि़ध़ु नि़ध़ु नि़ | प नि़ नि़ प म प मग़ु म सारे सा रेनि़ सा
ल रा . . . | ई ल . रि . . ये . . . . .
८ १ २ + ८

१ मरे मरे म |
चि . द्या |

क्र. ३० राग—खट, झपताल (दूसरा प्रकार)

तू है धर्मराज कायम दायम अवला बली जाके सुख चैन दिन रात जीवे जग ॥ ध्रु० ॥ ऐसो बदल वे बदल बलन करन सके काहू नर हे सास त्रास बन धन सिंघ पूजत गौपग ॥ १ ॥

मरे म म | प ऽ प प ऽ प सा नि़ध़ु नि़ध़ु नि़ध़ु | नि़ध़ु नि़ध़ु नि़ प
तू . है | ध मं रा ज का . य म | दा . य म
८ १ २ + ८ १ २

सा नि़ ऽ प ऽ मग़ु म प | ग़ुरे़ ऽ सा सा रे मग़ु ऽ म प प |
अ ब ला ब ली . | जा के सु ख चै न दि न |
\+ ८ १ २ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि॒ ध॒ सां सां नि॒ नि॒ म प ऽ ग॒ रे॒ ऽ सा मरे म म |
रा . त जी . वे . ज ग तू . है |
१ ३ + ८

॥ अंतरा ॥

म प नि॒ ध॒ नि॒ ध सांनि॒ सां सां रेंनि॒ सां सां | सां सां रेंनि॒ सां रें मंगं॒
ऐ . सो . ब द ल बे . ब | द ल ब ल न क
१ ३ + ८ १ ३ +

मंगं॒ मं रें रें सां | सांनि॒ सांनि॒ सां ऽ रें सां नि धध ऽ प | मग॒ मग॒ म
र . न स के | का हू . न र हे सा स | त्रा . स
८ १ ३ + ८ १ ३

प प नि प नि॒ सां सां | रें नि॒ सां नि॒ प नि॒ म प मग॒ ग॒रे॒ ऽ
ब न घ न सिं . घ | पू . . ज त गौ . . . प
+ ८ १ ३ +

सा , मरे म म |
ग तू . है |
८

क्र. ३१ राग– खट, तीनताल (मध्यलय)

लगन नहिं छूटे एरी बीर। ताने देहु भले नाम धरो चाहे कोटि करो तदवीर ॥ ध्रु० ॥ छिन में करत चतुर को बौरा नृप को करत फकीर ॥ १ ॥ नारायण अब कठिन है बचबो बिंधे हिये दृग तीर ॥ २ ॥

, रे रेंनिं सा मग॒ म | नि॒ प प नि॒ म प मग॒ ग॒ म प म रे सा रे सा
ल ग न न हि | छू . टे . . . . . ए . . . रि . बी र
७ १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें नि़ सा मग़ म म | प ' नि़ प नि़ सां रें सां नि़ ध प म प नि़ ध़

ता . नें . दे | हू भ ले ना . . म ध रो . चा . .

३ | १ २ + ७

नि सां | नि़ प प म नि़ प मग़ रे म प म रे सा रे सा रे रें नि़

हे . | को . टि . क . रो त . द . बी . . र ल ग

| १ २ + ७

सा मग़ म |

न न हिं | .

॥ अंतरा ॥

म प नि़ ध़ नि़ सां सां नि़ सां रें म रें सां नि़ सां रें सां नि़ ध़ |

छिन मे क र त च तु र . को . बौ . . . रा |

१ २ + ७

प रें रें नि़ सां नि़ ध पम प रे म प म रे सा रे नि़ सा मग़ म |

नृ प को . क र त फ फी . . . र . ल ग न न हिं |

१ ३ + ७

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—मलुहा-केदार (मालव-केदार)

इस राग में दो निषाद, दो मध्यम तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी—मध्यम. संवादी—षड्ज. समय—रात का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—म रे सा, सा धं पं मं, पं पं निं निं सा

आरोह—रेनिं सा, म रे सा, म ग प म॒ ध म॒ प सां

अवरोह—सां नि ध म॒ प, पग मप ग म रे सा निं धं पं मं, पं सा

विशेष—मलुहा-केदार राग कल्याण अंग का एक राग है। केदार में कामोद और श्यामकल्याण के मेल से इस राग की रचना हुई है। इसके आरोह में ऋषभ और धैवत दुर्बल रहते हैं। आलाप प्रायः निषाद से शुरू किये जाते हैं। तीव्र मध्यम का प्रयोग 'ध म॒ प' और 'प ध म॒ प' इस प्रकार के स्वरसमूहों में ही किया जाता है। मलुहा-केदार का प्रस्तार मंद्र और मध्य में विशेष रूप से होता है। ऐसा करने से ही इसका स्वरूप केदार से अलग व्यक्त होता है। जैसे—"सा रे सा धं पं मं, पं पं निं निं सा"। निम्न स्वरसमुदाय श्यामकल्याण के लिये जाते हैं—"रे निं सा, निं धंनिं सा"। इसी प्रकार "प ध म॒ प पग, ग म प ग म रे सा" ये स्वर कामोद के मलुहा-केदार में लिये जाते हैं। श्याम का आलाप शुरू किया तो उस में कामोद और कामोद का आलाप शुरू करने पर उसमें श्याम का अंग मिलाने से मलुहा-केदार का स्वरूप भली भांति स्पष्ट होता है। "स प म, प सां निंसां" यह स्वर केदार के लिये जाते हैं।

आलाप

१ सारेनिंसा, निंधंनिंसा, सासाधंपंमं, पंसा, निंरेसा

२ सा, निंरेसा, सापंनिंधंनिंसा, रेसा, गमपपगमरेनिंसा, निंधंनिंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३ सा, निंरेसा, गमरेनिंसानिंधंनिंसा, पगमरेनिंसा, गमध म-प, पग मपमरेनिंसानिंधंनींसा

४ सामगपध म-पसां, सां रेंसां, गंमं रेंनिसां, गंमंपंगंमं रेंनिसां, सांसां ध प मग, मरेसानिंधंनिंसा

५ सासाधंपंमं, मंपंसा, निंरेनिंसा, गमरेनिंसा, गमपपगमरेनिंसा, सामगपध म-पसां, सां रेंनिसां, गंमं रेंनिसां, गमरेनिंसा, गंमं पंगंमं रेंनिसां, निधनिसांसां ध प मगमध म- पपगमप, ममममनिंरे निंसानिंधंनिंसा

६ म प पसां, निरेंसां, सांसां ध प मगमध म-पपगमपपगमरेनिंसा, सामगपध म-प, निनिध म-पध म-प, पपंधंपंधंनींधंनिंसानिंधंनींसा

तान

७ सासरेरेनिंसा, गमरेसानिंसा, पगमरेनिंसा, रेरेसासाधंपंमंमं पंपंसासा, पधम-पगमपगमरेसा, निनिधम-पधम-पगमपगमरेसा, मपपसांसां रें रेंसांसांधपगमपगमरेसा, मपपसांसां रें रेंनिसांगं मं रेंसांनिसांधपमगमरेनिंसा

८ पधम-प-धम-प-धम-प-सां रेंनिसां-रेंनिसां-रेंनिसां-पधम-प-सां रेंनिसां-गंमं रेंसां-सां रेंनिसां-पधम-प-गपगम-सारेनिंसा

९ मपगम-पमम-पमम-निंनिंरे रेनिंसा, पधम-प- धम-प- धम-प-सां रेंनिसां-रेंनिसां-रेंनिसां-मंपंगंमं-पंमंमं- पंमंमं-रेंसांनिसां-पधम-प-धम-प-धम-प-मपगम-पमम-पमम-निंरेनिंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१० सासा–मम–गग–पप–म़म़–धध–पप– सांसां– निनि– रेंरें– सांसां–मंमं–गंगं–मंमं–रेंरें–सांसां–निनि–रेंरें–सांसां–म़म़– धध–पप–गग–मम–पप–गग–मम–रेरे–सासा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

क्र. ३२ राग–मलुहा-केदार, लक्षणगीत; झपताल

रसिक जन मन हरत; सुर उभय म-नि सहित। दूजो पहर रात; राग मलुहा लसत ॥ ध्रु० ॥ म-स सुरन संवदत; दुर्बल रि-ध चढत। श्याम अरु कामोद केदार सों मिलत ॥ १ ॥

रे रे सा ^{नि}धं पं सा सा रे रे सा | सा सा म म म ग प
र सि क ज न म न ह र त | सु र उ भ य . म
१ ३ + ८ | १ ३ +

ध म़ प म ग ^मरे | सा रे सा ऽ म म म ग प ऽ प | ^{नि}नि ऽ ध म़
नी . . स हि त | दू . जो प ह र . रा त | रा ग .
८ | १ ३ + ८ | १ ३

प म ग ^मरे ऽ ^मनिं रे सा |
. म लु हा ल स त |
+ ८

॥ अंतरा ॥

म प सां सां सां रें सां ^{नि}ध म प | नि सां गं मं रें नि सां ^{नि}ध
म स सु र न सं . व द त | दु . बं . ल रि ध च
१ ३ + ८ | १ ३ + ८

^{नि}ध प | ^{नि}नि ऽ ध म़ प ध प ग म प ग ऽ म रे ^मनिं सा |
ढ त | श्या म . . अ रु का . . . . मो . द |
| १ ३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा म ग प ^म^ध प सां ऽ नि ध म॑ प ग म रे ^म^नि सा
‒ ० ० ‒ ‒ ‒ ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ‒ ‒
के . . दा . र सों . . . . . मि . ल त
१ ३ + ८

क्र. ३३ राग—मलुहा-केदार, ख्याल; एकताल

थारा गुन मानोगि ये वो जीशा भई ना कहूं भोर में ॥ ध्रु० ॥ सदा-रंगीले मांडी न नलगे जिया सो महमदसा काई करे तेक वोजीया ॥ १ ॥

म म ^म^रे सा | रे ऽ सा ^नि^सा सा सा ^सा^म ऽ म म प ^म^प ध प ऽ |
० ० ० ० | ‒ ‒ ‒ ‒ ० ० ‒ ‒ ० ० ‒ ‒ ० ० ‒ |
थारा गु न | मा नो . गि ये . वो जी शा . भ ई |
११ १ ५ + ९ ११

प ध म॑ प म ^ग^म म ग ^म^रे सा रे सा ’ नि सा ^ध^नि ^नि^सा म म
◡ ◡ ◡ ◡ ‒ ‒ ० ० ‒ ‒ ० ० ० ० ० ० ‒ ० ०
. . . . . . ना क हू भो र में . . . . था रा
१ ५ + ९ ११

रे सा | रे ऽ सा ^नि^सा सा सा ^सा^म ऽ ऽ
० ० | ‒ ‒ ‒ ‒ ० ० ‒ ‒ ‒
गु न | मा नो . गि ये .
१ ५ +

॥ अंतरा ॥

म प प सां ऽ ^नि^सां ध प म ग ऽ म रे | सा प ^म^प प ध म॑ प ऽ
◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० | ‒ ‒ ‒ ◡ ◡ ◡ ◡ ०
स दा रं गी . ले . . . . मां | डी न . न . ल .
९ ११ १

म ग म रे सा ऽ नि रे सा ^सा^पं नीं सा प ऽ ^प^ग ऽ सा | प ध म॑ प
० ० ० ० ० ◡ ◡ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡
गे . . जि या . . सो म ह म द . सा | का . ई .
५ + ९ ११ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ मरे मरे म ऽ ग प प ध म॑ प ऽ म ग म रे मनिं सा धंनिं निंसा
. क रे . . तें . क . वो . . जी मा . . .
५ + ९

म म मरे सा |
था रा गु न |
११

क्र. ३४ राग—मलुहा-केदार, ख्याल; ताल झुमरा

मौंदरमा हियानी को लिये आशका मानु भावत न पूजिये ।। ध्रु० ।। दुख सुख अपा सानू आखनी को लिये सदारंग तारन मिलगुछ करतार मिलगुछ आशका मानू भावत न पूजिये ॥ १ ॥

सा रे निं सा ऽ निं सा ऽ निं धं पं पं धं ऽ पं | मं ऽ पं पं सा ऽ
मौं . . . . . . द र . . . | मा हि या नी
११ १ ४

प ध म॑ प ऽ म ग मरे सा ऽ सा रे सा म ऽ ग प नि धनी ध म॑ प
को . लि : ये . . आ . . श क . . . . . मा . .
+ ११

ध म॑ प ऽ | पपं धं मंपं सा सा निं धं निं ऽ धं सा प ध म॑ प
नू . . | भा. व त . . . . . न पू . जि ..
१ ४.

ऽ म ग मरे मनिं सा धंनिं सा सारे
ये . . . .
+

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

प प सां सां सां सां ऽ रें | सां सां ^नि^सां सां ऽ सां ध म॑ प ऽ ध
दु ख सु ख अ पां . | सा नू . आ . ख . . नी
११ १ ४

नि॒ ध म॑ प ' प ध म॑ प म सा ^म^ग प ^ध^प ऽ ^प^ग ऽ म ध म॑ प^प^ग
. . . . को . लि . ये स दा रं ग . . ता . . .
+

म प ग म ऽ ^म^रे सा ' सा रे सा | म म म ग प सां ऽ सां ध प
. . . . र न मि ल गु | छ क र . . ता . र .
११ १ ४

म ग ऽ म प ध प म रे सा सा ऽ सा रे सा म ऽ ग प ति ^ध^नी ध
. . . मि . ल . गु छ आ . . श का . . . . मा
+ ११

म॑ प ध म॑ प ऽ | ^प^पं धं ^मं^पं सा सा निं धं नीं ऽ धं सा प ध
. . नु . . | भा . व त . . . . . न पू .
१ ४

म॑ प ऽ म ग ^म^रे ^म^निं सा ^धं^निं सा ^सा^रे
जि . ये . . . .
+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ३५ राग–मलुहा-केदार, ख्याल: धीमा तिताला

आजरा मोरा मुबा मनू तू लंगर तोरा खबरी जेन जोवू ॥ ध्रु० ॥ आनक-बान बैथा मरोरी हूं का कीनो तोरा खबरी जेन जोवू ॥ १ ॥

रे सा ^सा^धं ^निं^पं पं | धं ^धं^मं ऽ पं नीं ऽ सा ऽ रे ऽ सा ऽ प ऽ ऽ प |
आ ज रा . मो | रा . मु बा . म नू तू लं |
१३ १ ५ + १३

ध म प ऽ ऽ ^प^ग ग ग ऽ ग म प ग म ^म^रे ^म^निं रे सा ऽ सा प
ग . . . र तो रा . . . . . ख ब . री जे .
१ ५ + १३

ऽ म म | म ^ग^म ^ग^म ^म^निं ऽ रे सा ऽ ^रे^निं ऽ सा निं ऽ ^धं^निं सा निं
. न | जो . . . . वू . . . . . .
१ ५ +

^धं^निं रें सा ^सा^धं ^निं^पं पं | धं ^धं^मं ऽ पं निं ऽ सा ऽ रे ऽ सा ऽ
. आ ज रा . मो | रा . मु बा . म नू
१३ १ ५ +

॥ अंतरा ॥

प सां सां सां ऽ ^नि^सां सां सां | सां ऽ ऽ ऽ ^सं^ध ऽ नि सां रें सां
आ न क बा . न क | र बै या . म रो
१३ १ ५

रें नि सां ध ^म^प म रे ^निं^सा सा म ग प ^म^प | प ऽ प ध म प ऽ
री . . . . हू का . की . | नो तो रा . .
+ १३ १

^प^ग ऽ ग म प ग म ^म^रे ^म^निं रे सा ऽ सा प ऽ म म | म ^ग^म ^ग^म
. . . . . . ख ब . री जे . . न | जो . .
५ + १३ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनिं ऽ रे सा ऽरेनिं ऽ सा निं ऽधंनिं सा निंधंनिं रे सा साधंनिं पं पं |
. . वू . . . . आ ज रा . मो | रा
५ + १३

क्र. ३६ राग—मलुहा-केदार, तीनताल (मध्यलय)

कैसे जिया धर धीर मोरि आली। बारी उमरिया, पिया घर नाहीं॥ निसदिन नैन वरसत नीर ॥ ध्रु० ॥ कासे कहूं अब जिया की बात कैसे करूं आली हररंग बिन नाहीं मिटे पीर ॥ १ ॥

रे सा ऽ निं धं पं मं मं | पं ऽ पं निं निं सा सा सा म ग प धमप |
कै से . . जि या ध र | धी र मो रि आ ली बा री उ म रि या |
+ ७ १ ३ + ७

प ध म प ऽ म रे निंसा ऽ सा सा म ग प प सां ऽ सां | प ध म प
पि . या . घ र ना ही नि स . दि न नै न | ब . र .
१ ३ + ७ १

ऽ म रे मनिं ऽ सा रे सा ऽ निं धं पं मं मं |
स त नी र कै से . जि या ध र |
३ + ७

॥ अंतरा ॥

प सां सां सां सां सां रें सां ध पम प | प ध म प ऽ म रे मनिं ऽ
का से क हू अ ब जि या की बा त | कै . से . क रूं आ
१ ३ + ७ १ ३

सा सा म ग प प सां ऽ सां | प ध म प ऽ म रे मनिं ऽ सा
ली ह र . रं ग बि न | ना . ही . मि टे पी र
+ ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ३७ राग—मलुहा-केदार, तीनताल (मध्यलय)

घर आवो सजन मीठ बोला तेरे वे खातर सब कुछ छोडा। काजर तेल तमोला ॥ ध्रु० ॥ जो नहिं आवे रैन विहावे छिन मासा छिन तोला। मीरा के प्रभु गिरिधर नागर कर धर रहे कपोला ॥ १ ॥

प ध म॑ प म ग ᵐरे नि॒ रे | सा ऽ सा ध॒ म॑ प॒ सा सा सा म ग
◡ ◡ ◡ ◡ ० ० — ० ० | ० ◡ ◡ ० ० — — ० ० ० ०
घ . र . आ . वो स ज | न . मि ठ बो ला ते रे व .
\+ ७ १ ३ +

प म॑ ध प | नी ᵈनी ध प म ग ᵐरे ⁿⁱसा सा म ग प प सां |
० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० — ० ० |
खा . त र | स ब कु छ छो . डा . का ज र ते ल त |
७ १ ३ + ७

ध म॑ प ᵖग म ᵐरे नि॒ ऽ सा
◡ ◡ ० ० ० ० ० ० ०
मो . . . . ला . .
१ ३

॥ अंतरा ॥

प सां सां सां सां | रें सां ध ᵖम प सां रें नि सां ˢᵃध ᵐप प ध
— ० ० — — | — ० ० — — ◡ ◡ ◡ ◡ — — ◡ ◡
जो न हिं आ वे | रै न वि हा वे छि . न . मा सा छि .
\+ ० १ ३ + ७

म॑ प | ᵖग म रे ʳᵉनि॒ सा सा म ग प म॑ ध प | नि ᵈनि ध प म ᵍम
◡ ◡ | — ० ० — — — ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ०
न . | तो . . ला . मी रा . के . प्र भु | गि रि ध र ना .
१ ३ + ७ १ ३

रे सा सा सा म ग प प ऽ प | सां ऽ सां ध म॑ प ग म रेᵐ नि॒ सा
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ०
ग र क र ध र र हे क | पो . ला . . . .
\+ ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—नट-केदार

इस राग में दो मध्यम और दो निषाद तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—षाडव-सम्पूर्ण. वादी—षड्ज. संवादी—पंचम.

समय—रात का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—सा म, ग प, ध प म, ग म रे सा

आरोह—सा रे सा म, म ग प, प ध प सां

अवरोह—सां नि ध प, म॑ प ध प म, म ग म रे सा

विशेष—इस राग की रचना नट और केदार इन दोनों रागों के मेल से हुई है। नट-केदार के आरंभ में ही 'सा ^ग^रे ग म ^ग^प' इन स्वरों से नट का अंग दिखाया जाता है। अवरोह में भी 'म ग म रे सा' इन स्वरों द्वारा नट की छाया आती है। आरोह में निषाद वर्जित है तथापि तान में 'ग म प ध नि सां' इस प्रकार का स्वरसमूह भी लिया जाता है। केदार और नट ये दोनों राग बहुत पास-पास के हैं। इसलिये इनका मेल बहुत आकर्षक ओर मधुर होता है।

आलाप

१ सारेसा, मगमरेसा, सा ^निं^धंपं, पंसा, निंरेसा

२ सामगप, पध म॑पम, मगमरेसा, निंरेसा

३ साम, मगप, पध म॑पम, मपधनि॒धप, ध पम, पसां, ^नि^धपम, ^प^गमरे, सानिंरेसा

४ साम, मगप, पध ^म॑^पसां, सां रेंसां, गंमं रेंसां, सां रें गं मंपं ^प^गंमं रेंसां, सां रें निंसां ^सां^धनि॒ध ^म॑^पधपम, सागम ध प मगमरे सानिंरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ सा निंधंपं, निंधंनिंसारेसा, साम, गमरेसा, सापम, गमरेसा, सा निध निध म॒ पध पम, गम पगमरेसा, पसां, सां रेंसां, मंगं मं रेंसां, पंगंमं रेंसां, सां रें निसांनिध पम॒ प, धपम, म ग पम॒ धपमगमरेसा

६ मग म रेसा, पध म॒ पमग म रेसा, सांध म॒ पधपम प ग म रे निंसा, रें निंसां, मंगं मं रें निंसां, पंगंमं रें निंसां, सागमध म॒ पमगरे निंसा, म ग प म॒ ध म॒ पसां निध म॒ पमग म रे निंसासारेसा

तान

७ सासामगरेसानिंसा, सासामगपम॒ धपमगरेसानिंसा, सासामगप म॒ धपनिधम॒ पधपमगरेसानिंसा, सासामगपम॒ धधम॒ पसांनिधप रेंसांनिधम॒ प, मंगं रेंसांनिधम॒ पधपममपमगरेनिंसा

८ पपधपमम—धनिधपम॒ पधपमम— धनिसांनिधपम॒ प— धनिसां रें सांनि—मंगं रेंसां—रेंसांनिधम॒ प—धनिसांनि—म॒ पधपमम—मगपम धपमगरेसा

९ सामम—गपप—मगरेसा—सामम—गपप—म॒ धध—पसांसां-निधम॒ प-पसांसां—सां रें रें—सांनिधप—सांमंमं—गंमंमं—गं रेंसांनिधप-रेंसां निधम॒ प—धपमम—पमगरेनिंसा

१० पधप—पधप—मम—सां रेंसां—सां रेंसां—निध—गंमंगं-गंमंगं- रेंसां-सां रेंसां—सां रेंसां—निध—धनि॒ध—धनि॒धम॒ प—पधप—पधप-मग-गमप—गमप—मगरेसा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ३८ राग—नट-केदार, लक्षणगीत; तीनताल (मध्यलय)

मन भावत नट-केदार राग। चढत बरज नी, गावत रजनी द्वितिय पहर दोउ म-नी लाग ॥ ध्रु० ॥ पूरब अंग लसे नट सुंदर, उत्तर अरु केदार दिखावत। म-स वादी संवादी राजत, षाडव संपूरन सुहाग ॥ १ ॥

प ध म॑ प म म ग प प म॑ प | ^नि^ध नि ध प ध म॑ प ऽ म ग म
म . न . भा व त न ट के . | दा . र रा . . . ग च ढ
+ ७ १ ३ +

प म ग रे सा | सा म ग प ध ^म^प ^नि^ध नी सां रें सां नि ध प |
त ब र ज नी | गा व त र ज नी द्वि ती य प ह र दो उ |
७ १ ३ + ७

ग ^प^म रे निं रे सा ऽ
म नी . ला . ग
१ ३

॥ अंतरा ॥

म म म प प प | सां सां सां नि रें सां सां रें गं मं ^मं^रें रें सां |
पू र ब अं ग ल | से न ट सुं . द र उ त्त र अ रु के |
+ ७ १ ३ + ७

रें सां सां ^नि^ध म॑ प ^ध^प म सा प म ग ^म^रे सा | म म ग प प प
दा . र दि खा . व त म स वा . दी सं | वा दी . रा ज त
१ ३ + ७ १ ३

ध नि सां रें नि सां ^सां^ध प म॑ प | ^प^ग म रे ^रे^निं रे सा
षा . . . ड व सं . पू . | र न सु हा . ग
+ ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ३९ नट-केदार, ख्याल; एकताल

हठ कर बैठी राजदुलारी मान भरी तुम ॥ ध्रु० ॥ मेरी कही तुम मानत नाही छांडे हो मान भराई चपल बुध जा मोहन के संग उठ चली पिया पे कई तुम ॥ १ ॥

ध प म म प ^म^ध ऽ ^म^प | सां ऽ ऽ ^नि^नी ऽ ध प म ^प^ग ^म^रे सा
हठकरबै . . | ठी रा ज दु ला . . री
९ ११ | १ ५ + ९

ऽ सा रे | ग म प ऽ ^म^प ध ^नि^म प ^म^प
मा . | न भ री . तु म . .
११ | १ ५ +

॥ अंतरा ॥

प सां सां सां ^नि^सां सां | सां ऽ ^सां^ध नि सां रें सां ^नि^सां ^नि^ध ^नि^म प
मे री क ही . तु | म मा . न त ना . ही . .
९ ११ | १ ५ + ९

प ध म प ऽ म ^प^ग | ^म^रे ऽ सा रे ग म ^नि^ध ^नि^म प प ऽ प प सां
छां . डे . हो . | . मा . न भ रा . . ई च प ल
११ | १ ५ + ९

सां सां ऽ ^नि^सां | सां ऽ ^नि^ध नि सां रें ऽ सां नि रें नि सां ऽ ^नि^ध
बु ध . | जा मो ह न . के सं . . . ग
११ | १ ५ +

^नि^म प प गं ऽ मं रें | सां ऽ ^सां^ध नि सां रें सां रें नि सां ऽ नि
. . उ ठ . च | ली पि या पे क ई . . . .
९ ११ | १ ५

ध प म ऽ प ध ^नि^म प ध प म म प ध ऽ ^म^प |
. . . . तु म . ह ट क र बै . . | ठी
+ ९ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ४० राग—नट-केदार, तीनताल (मध्यलय)

अब कबहूं ना संगवा तोरा छांडे हो ये ना मैं ॥ ध्रु० ॥ पिछली बतिया राख रही को मोमदसा सदारंग करले ना मैं ॥ १ ॥

सा सा म ग प म॑ प | ध नी ध म॑ प प ध म॑ प म प ध म॑ प ऽ

o o o o − o o | o o ◡ ◡ o ◡ ◡ ◡ ◡ − ◡ ◡ ◡ ◡ o

अ ब क ब हूं ना . | सं ग वा . . तो . . . रा छां . डे .

\+ ७ १ ३ +

म पग मरे निंसा | ग म प ध नी सां ऽ सां ध प म ग रे सा सा

o o o − | ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ o

हो . . . | ये . . . . . . ना . . . . . . मैं

७ १ ३

सा सा म ग प म॑ प |

o o o o − o o

अ ब क ब हूं ना . |

\+ ७

॥ अंतरा ॥

म॑ म॑ प प ध नी ध प प ध म॑ प ऽ म ऽ | म प प सां ऽ निंम॑ ऽ

o o o o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ − − − | − o o − − − −

पि छ लि ब ति . . . . था | रा ख र ही .

१ ३ + ७ १ ३ +

प प | म॑ प ध ध प म म म प प ध सां नी ध प म ग म प ध |

− − | ◡ ◡ o o o − o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡

. को | मो . . म द सा स दा रं ग क र ले . . . . |

७ १ ३ + ७

नी सां ऽ नी ध प म ग रे सा निं रे सा सा सा म ग प म॑ प |

◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ − o o o o − o o

. . . ना . . . . अ ब क ब हूं ना . |

१ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—जलधर केदार

इस राग में सब स्वर शुद्ध लगते हैं; गांधार और निषाद वर्जित हैं।

जाति—ओडव. वादी—मध्यम. संवादी—षड्ज.

समय—रात का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—ध प म, रे सा, म

आरोह—सा रे सा म, म प ध सां

अवरोह—सां ध प म, रे सा

विशेष—यह केदार-अंग का राग है। इसकी विशेपता यही है कि इस में सभी स्वर दुर्गा के लेते हुए भी अत्यन्त कुशलता से केदार राग दिखलाया जाता है। केदार का अंग स्पष्ट दिखाने के किये मध्यम पर ठहरते हैं। जैसे—"सा रे सा म, ध प म, सां ध प ध प म, म रे धं सा म, सा म रे प ध प म"। तथा दुर्गा का अंग दिखलाने के इस प्रकार का स्वर समूह लिया जाता है—"म रे प, म रे धं सा।" यह स्वरसमुदाय लेकर मध्यम पर न्यास करने से दुर्गा की छाया नष्ट होकर जलधर-केदार का स्वरूप स्पष्ट होगा। गान्धार, निषाद तथा तीव्र मध्यम वर्जित होने से यह राग केदार से अलग मालूम होता है।

आलाप

१ सा रेसाधंपंमं, पंसा, सारेसा, साम, मरेसा, साधंसा

२ साम, मरेसा, सामप, धम, म प ध पम मरेसा, साधंसा

३ सामपधम मरेम, म प धसां, सांधपम, मरेमरेमरेसा

४ सामपधम, पधपपसां, सां रेंसां, सांमं मरेंसां, सां रेंसांधपम,

म प ध सां ध धसां सांधप मम मरे मरेमरेसा साधंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ सामपधम, म, सांधसांधसां, सांधसां, सांमरेंमरेंसांसां, सांमंपंमं मरेंसांसां, मंरेंसांसां, सांरेंधसांधपधपम, मपधपसांसांधसांधप धम, मपधममरेम, मरेसासाधंसा

६ मरेसासा, पधम, सांधपपधममरेम, रेंसां, मंरेंसांसां, मरेसासा, मरेपमधम, म प धसांपधमपमरेमरेसारेसाधंसा

तान

७ साममरेसासा, साम्पधपममरेसा, सामपधपमपधसांसांधपमम रेसा, मपधसां रेंसांधपममरेसा, मपधसां रेंमं रेंसांधपममरेसा

८ साममरेसासा-पधधपमम-धसांसांधपप-ध रें रेंसांसांध-सांमंमं रेंसांसां-धसांसांधपप-पधधपमम-रेममरेसासा

९ पधधपधपमम-धसांधधसांधपम-सां रेंसांसां रेंसांधप-रेंमं रें रें मं रेंसांसां-सां रेंसांसां रेंसांधप-पधपपधपमम-रेमरे रेमरेसासा

१० रेमरेसा-पधपम-धसांधप-सां रेंसांध-रेंमं रेंसां-मंपंमं रें-रेंमं रेंसां-सां रेंसांध-धसांधप-पधपम-मपमरे-रेमरेसा

(सूचना-उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

क्र. ४१ राग-जलधर केदार, लक्षणगीत; झपताल

आरोही अवरोही वरजत गुनि ग-निको। गावत जलधर राग के रूप को ॥ ध्रु० ॥ मध्यम करत वादी संवादी षड्ज धरत आनंद न समात मनरंग रंग को ॥ १ ॥

संग्रहकार स्व. पं. वझेबुवा

ध	ऽ	मप	ऽ	धप	म	म	मरे	ऽ	सा	ऽ	सा	सा	म	म	प	प	प	धप	म
आ		रो		हि	अ	व	रो		हि		व	र	ज	त	गु	नि	ग		निको
+		८			१		३				+		८		१		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ ग ऽ प प | प प ध म म प ऽ रें सां ध | पप ऽ धप म ऽ
गा व त | ज ल ध . र रा ग के . | रू प को
+ ८ १ ३ + ८ १ ३

॥ अंतरा ॥

प ऽ सां ऽ सां | सां सां सां सां ऽ सां सां सांध सां ऽ सां | सां रें
म ध्य म | क र त वा दि सं . वा दि | प .
+ ८ १ ३ + ८ १

सां सांध म म सं ऽ प ग | प प ध म म प प रें ऽ सां | सांध ऽ प म ऽ
कूज ध र त आ नं द | न स मा . त म न रं ग | रं ग को
३ + ८ १ ३ + ८ १ ३

क्र. ४२ राग–जलधर केदार, ख्याल एकताल

मो मन मोहनसों मिलिकै मधुरी मुसकान दिखाय दई ॥ ध्रु० ॥ मोहन्नि सूरत मैनमयी सबही चितई हमहू चितई ॥ १ ॥

मप प ध | ध प म मरे सा सा रेधं सा ऽ सा सा म ' म म प ऽ |
मो म न | मो . . . ह न सो . मि लि कै म धु री |
११ १ ५ + ९ ११

पम प सांध सां ऽ ध प धप म म म प ध म ऽ म प म मरे सा
मु स का . . . . . . न दि खा . . य द ई . .
१ ५ + ९

मप प ध | ध प म मरे सा सा रेधं सा ऽ ऽ
मो म न | मो . . . ह न सो .
११ १ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

धमं प प सां ऽ रें | सां ऽ सांमं रें सां रें सां ध पप ध म ऽ म म
— ० ० — ० ० | — — — ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ०
मो ह नि मू . र | त मै . न म यी . . . . स ब
९ ११ | १ ५ + ९

प ऽ प प | ध सां रें सां ध पप प ध ध म ऽ म म प धप ममरे
— — ० ० | ◡ ◡ ० ० ० — ० ० ० ० ० — ० ० ० ० — ०
ही चि त | ई . . . . . . ह म हू . चि त ई . . .
११ | १ ५ + ९

सा मप प ध |
० — ० ० |
. मो म न |
११

क्र. ४३ राग–जलधर केदार, तीनताल (मध्यलय)

सखी री यह सावन मनभावन। चातक मोर चकोर कोकिला, बोलत वचन सुहावन ॥ ध्रु० ॥ गरजत घन घननन घननन कर लगी मेह बरसावन ॥ १ ॥ नारायण भीजत मेरे गृह, श्यामसुँदर को आवन ॥ २ ॥

’सा म प ध | ध म ऽ म प ध प म मरे रे सा सा रे सा सा |
० ० ◡ ◡ ० | ० ० — ◡ ◡ ◡ ◡ — ० ० ० ० — ० ० |
स खी . . | री . य . ह . सा व न म न भा व न |
७ | १ ३ + ७

सा म म प प प ध सां रें सां ध प धप म | म प प सांध सां ध प
— ० ० — ० ० ◡ ◡ ० ० ० ० ० — | — ० ० ० ० ० ०
चा त क मो र च को . . र को . कि ला | बो ल त व च न सु
१ ३ + ७ | १ ३

म प ध प म म रे सा ’सा म प ध |
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ◡ ◡ ० |
हा . . . व . न . स खी . . |
+ ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म म प प ध म प प सां सां सां रें ^{सां}ध ध म म | सां मं रें सां ध
o o o o o o o o o o o o o o o o | o o o o o
ग र ज त घ न घ न न न घ न न न क र | ल गे . मे .
१ ३ + ७ | १ ३

प म प ध प म ^मरे सा ' सा म प ध |
o ◡ ◡ ◡ ◡ – o o o o ◡ ◡ o |
ह ब . र . सा व न स खी . . |
+ ७

राग—नंद

इस राग में दो मध्यम तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ वर्जित है।

जाति—षाडव-सम्पूर्ण. वादी—षड्ज. संवादी—पंचम.

समय—रात का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—ग म ध प रे सा ग म

आरोह—सा ग म, प ध ^{नि}प, सां

अवरोह—सां ^{नि}ध मं॑प, ग म ध प ^मरे सा ग म

विशेष—यह राग हमीर, छायानट, कामोद और विहाग आदि से बहुत मिलता है। इन सब की छाया बचाते हुवे नंद राग गाना बहुत कठिन है। इस राग में विशिष्ट ढंग से मध्यम पर ठहरना चाहिये। जैसे—"सा ग म, ध प रे, सा ग म"। इन स्वरों के सिवाय और दूसरे स्वर लेकर मध्यम पर आना ठीक नहीं। छायानट और हमीर बचाने के लिये आरोह में ऋषभ वर्जित किया जाता है। कामोद की छाया वचाने के लिये "मं॑ प ^पग म ध प ^मरे सा" इस प्रकार पंचम से सीधा ऋषभ पर आते है। "प ध नि ^धप, ^पध ^पमं॑, मं॑प ^पग" इन स्वरों से विहाग की छाया दिखाई देती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिहाग का भास न होने देने के लिये उक्त स्वरों के साथ निम्न स्वरसमूह जोड़ना चाहिये—"ग म ध प रे सा, ग म"। इसी राग को आनंदी कहने का भी प्रचार है।

आलाप

१ सानिं$^{सां}$निंसा, सागम^{प}रेसा

२ सागम, ^{प}म^{प}ग^{ग}प, प$^{नि}$धनी^{ध}प, ^{प}ध^{प}म॑ $^{म॑}$प^{प}ग, म^{ध}परेसा

३ सागम, ^{प}मगप, प धनी^{ध}प, प ध म॑ पसां, $^{रें}$नि$^{सां}$निधप, प ध
पध^{प}म॑ म॑ प म॑प^{प}ग, ^{ग}निंसागमध$^{म॑}$प^{म}रेसा

४ प ध म॑ पसां, $^{रें}$नि$^{सां}$निसां, गंसां, $^{सां}$-रें$^{मं}$नि, नि$^{सां}$निधप, प ध
नी प धनी^{ध}प, पध^{प}म॑$^{म॑}$प^{प}गसा ग म धप^{म}रेसा

५ सा ग म ध म प सां, $^{रें}$सां नि$^{सां}$निसां, सांगं, गं मं^{प} रेंसां, रेंसां
नि$^{सां}$निधप, प ध नी$^{रें}$नि$^{सां}$निधप, प ध म॑ पनीधप, प ध पध
^{प}म॑, म॑ प म॑प^{प}ग, सा ग म धप^{म}रेसा

६ परेसा, धप^{म}रेसा, निधप, रेंनिधप, गंसां, $^{सां}$रेंनि, प^{प}गंमं^{प} रेंसां,
पगम^{प}रेसा, साग, $^{रे}$गगम^{ग}म^{म}पप^{प}धध^{ध}नीप, ^{प}ध^{प}म॑, $^{म॑}$प$^{म॑}$ग
सा ग म धप^{म}रेसा

तान

७ सागमधम॑पगमपपरे रेसा, सागमधम॑पनीनीधपपधम॑पगमधपम
रेंनिंसा, सागमधम॑पपनिसां रेंसांनिधपगमधपमरेनिंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८ सागग–गमम–मपप–पधध–धनीनी–पधध–म॒पप–पसांसां–
सां रें रें–निसांसां–सांगंगं–सां रें रें–निसांसां–धनीनी–पधध–
म॒पप–गमम–मपप–रेरेसा

९ सासा–गग–मम–पप–धध–नीनी–पप–निनि–सांसां–रें रें–
निसां–गंगं–सांसां–रें रें–निनि–धध–म॒म॒–पप–धध–गग–
मम–पप–रेरे–सासा

१० सारेनिसा–गपगम–पधम॒प–सां रेंनिसां–गंगंसांसां–सां रेंसांनि–
पधम॒प–गगममपप–रेरेसासा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

क्र. ४४ राग–नंद, लक्षणगीत; द्रुतएकताल

गुनि गावत नंद राग । दोउ मध्यम लेत आन । सकल सुरन विमल लाग ॥ ध्रु० ॥ अंश लसत पहिलो सुर । पंचम सोहत अनुचर । यामिनी द्वितीय पहर । रूप मधुर अति सुहाग ॥ १ ॥

ध प [म]रे सा सा ग ग म ऽ म | म ग म ग प प प ध नी [ध]प ध
ο ο – ο ο – ο ο ο ο | ο ο ο ο ο ο ◡ ◡ ο ο ο
गु नि गा व त नं द रा ग | दो उ म . ध्य म ले . . त आ
१ ३ + ५ ६ १ ३ + ५

[प]म॒ प | नि नि ध म॒ ध प ग म [ध]प [म]रे ऽ सा |
ο ο | ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο |
. न | स क ल सु र न वि म ल ला . ग |
६ १ ३ + ५ ६

॥ अंतरा ॥

प प सा सां सां सां सां गं [रें]सां सां सां | नि रें सां नि नि [ध]प प प
– ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο | ο ο ο ο ο ο ο ο
अं श ल स त प हि लो . सु र | पं . च म सो . ह त
१ ३ + ५ ६ १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ध नि ध प | ग म ध प (म)रे ऽ सा ग ग म म म | ग म प म प
o o o o | ‿ ‿ o o o o o – o o o o | ‿ ‿ o o o
अ नु च र | या . . मि नी द्वि ती य प ह र | रू . . प म
५ ६ १ ३ + ५ ६ १

ध नि ध प ग म ध प म रे ऽ सा |
‿ ‿ ‿ ‿ o o ‿ ‿ ‿ ‿ o o
घु . र . अ ति सु . हा . ग |
३ + ५ ६

क्र. ४५ राग–नंद, ख्याल; ताल तिलवाडा

ढूंडा बन सैंयां तोहे सकल बन बन ॥ ध्रु० ॥ विधना तिहारी कोउ न जानू देहो दरस मेरो प्यारो ॥ १ ॥

सा ग म (म)ध (म)प (म)रे ऽ सा | ग ऽ म ऽ ग म प ध ध नी ऽ (ध)प
o o o o o o o o | – – – – o o o o ‿ ‿ o –
ढूं डा . . . ब न | सै यां तो हे स क ल . .
१३ १ ५

प (ध)प ध ऽ (प)म (प)म म प ऽ (म)ग
o ‿ ‿ o o o ‿ ‿ o o
ब न . . ब न . .
+

॥ अंतरा ॥

प प सां सां सां ऽ (नि)सां | सां ऽ नी (ध)प ऽ ध नी (ध)नि (ध)प (म)रे सा
o o o o – o o | – – o o o ‿ ‿ o o o o
विध ना ति हा . | री को . उ न जा . न्दे हो
१३ १ ५

सा रे ग म प ध (ध)नी (ध)प (प)ध (प)म (म)प (म)ग (ग)सा ग म (म)ध (म)प
o ‿ ‿ – o ‿ ‿ o o o o o o o o o o o
द र स . मे रो प्या . रो . . . ढूं डा . . .
+ १३

(म)रे ऽ सा |
o o o
ब न |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ४६ राग—नंद, झपताल

अजहूं नहिं आये आये पिया मोरे नैना हमारे तरसाये जाये ॥ ध्रु० ॥
जबसे गये मोरी सुधहू न लीनी कबहुं नहिं दरसाये जाये ॥ १ ॥

—संग्रहकार स्व. पं. वझेबुवा

ध प (म)रे सा सा | ग ऽ (म)ग म ऽ ग म प ऽ ध ध नि ऽ | (ध)प (प)ध
अ ज हूं न हिं | आ ये : आ . ये पि या . | . मो
\+ ८ १ ३ + ८ १

(प)म॑ म॑ प ऽ प ऽ प ऽ प | प ध म॑ प (प)ग ऽ ऽ (ग)सा सा ग ऽ म ||
. रे . नै ना ह | मा . . . रे त र सा ये ||
३ + ८ १ ३ + ८

(प)ध (प)म॑ (म॑)प (प)ग म ध प (म)रे सा सा |
जा . ये . . अ ज हूं न हिं |
१ ३ + ८

॥ अंतरा ॥

प प सां ऽ सां सां ऽ सां ऽ सां | नि नि नि ऽ सां नि (ध)प ध नी
ज ब से ग ये मो रि | सु ध हू न ली . नी .
१ ३ + ८ १ ३ + ८

(ध)प ऽ | म॑ म॑ प ध म॑ प (प)ग (ग)सा सा ग ऽ म | (प)ध (प)म॑ (म॑)प (प)ग म
. | क ब हुं न . . हिं द र सा ये | जा . ये . .
१ ३ + ८ १ ३

ध प (म)रे सा सा |
अ ज हूं न हिं | आये
\+ ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ४७ राग—नंद, तीनताल (मध्यलय)

जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो। जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ ५० ॥ स्वर्ग पताल दसों दिशि पूरण धुनि आच्छादित कीनो ॥ १ ॥ निशि हरि कल्प समान बढाई गोपिनको सुख दीनो ॥ २ ॥ भ्रमंत भये जीव जल थल के तनु की सुध न सम्हार ॥ ३ ॥ सूरश्याम मुख वेणु विराजत उलटे सब व्यवहार ॥ ४ ॥

ग म ध प ^म^रे रे सा | ग ग ग म म ’म म ग प प प ऽ म |
o o o o o o – | – o o – – o o o o o o o ⌣ ⌣ |
ज ब ह रि मु र ली | ना द प्र का श्यो जं ग म ज ड था . |
\+ ७ १ ३ + ७

ध नि ध प ^म^रे सा ’सा रे ग म प प ध नि | ^ध^नि ^ध^प ^प^ध ऽ ^प^म
o o o o – – o ⌣ ⌣ o o o o o o o | – o o o o
व र च र की न्हें पा . ह न ज ल ज वि | का . श्यो .
१ ३ + ७ १ ३

^म^प ^म^ग ग म ध प ^म^रे रे सा | ग ग ग म ^ग^म ^म^प
– o ⌣ ⌣ o o o o – | – o o – o o
. . ज ब ह रि मु र ली | ना द प्र का श्यो .
\+ ७ १ ३

॥ अंतरा ॥

’प प प सां सां सां | सां सां सां गं ^रें^सां सां सां नि सां नि ^ध^प प
o o o o – o o | – o o o o o o o o o –
स्व र्ग प ता ल द | सों दि शि पू . र ण धु नि आ . च्छा
\+ ७ १ ३ + ७

ध नि | ^ध^नी ^ध^प ^प^ध ऽ ^प^म ^म^प ^म^ग ग म ध प ^म^रे रे सा |
o o | – o o o o – o ⌣ ⌣ o o o o – |
दि त | की . नो . . . ज ब ह रि मु र ली |
१ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ४८ राग–नंद, तीनताल (मध्यलय)

धन धन भाग नंद को जिनके घर आयो श्याम ॥ ध्रु० ॥ चारोंहि वेद पुराण और मुनिजन न जाने पायो भेद ॥ १ ॥

’ध प (म)रे ऽ सा | ग म म म ग (प)ग प ’सा ग म प ध | नि प
० ० ० ० ० ० | – – – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ०
ध न ध न | भा . ग नं द को . जि न के घ र | आ .
७ १ ३ + ७ १

ध म॒ प ग सा ग म ध प ध प (म)रे ऽ सा | ग म म ऽ
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | – – – –
यो . . . श्या . . . म ध न ध न | भा . ग
३ + ७ १ ३

॥ अंतरा ॥

’प सां सां सां सां (रें)सां | नीं (ध)प ध (प)म॒ प प ध म॒ प (म)रे सा सा
० ० ० ० – ० ० | – ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ – ० ०
चा रों हि वे द पु | रा ण औ . र मु . नि . ज न न
+ ७ १ ३ +

ग म प ध | नि प ध म॒ प ग सा ग म ध प ध प (म)रे ऽ सा |
० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
जा . ने . | पा . यो . . . भे . . . द ध न ध न |
७ १ ३ + ७

क्र. ४९ राग–नंद, तराना; तीनताल (मध्यलय)

तान द्रेद्रे दानि दानि तदानी नित तन तनान देर्ना देर्ना देर्ना ॥ ध्रु० ॥ अत तन देरेना, दींतन देरेना, ना दिर् दिर् दिर्, तुं दिर् दिर् दिर् दिर्, दिर् दिर् दिर् तदानि, तदेर्नां तदेर्नां तदेर्नां ॥ १ ॥

–प्रो. रामकृष्णबुवा जोशीकृत

ग म ध प (म)रे ऽ सा निं सा | ग ग ऽ म ऽ ग म प ध नि प प ध
– ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० – ० ० ० ० ० ० ० ०
ता न द्रे द्रे दा नि दा नि | त दा नी नि त त न त न न दे
+ ७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ प | म प पग ऽ म ग
नां | दे नां दे नां ता
१ ३

॥ अंतरा ॥

प प सां सां सां सां सां | गं सां सां रें नि सां गं मं पं रें सां रें
अ त त न दे रे ना | दीं त न दे रे ना ना दिर् दिर् दिर् तुं दिर्
\+ ० १ २ + ०

सां सां | सां नि ध नि ध प ऽ प रें नि ऽ नि ' ध ध |
दिर् दिर् | दिर् दिर् दिर् दिर त दा नि त दे नां त दे |
१ २ + ०

प प ग ऽ म
नां त दे नां
१ २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—नट

इस राग में सब स्वर शुद्ध लगते है।

वादी—पंचम. संवादी—षड्ज. समय—रात का दूसरा प्रहर.

विशेष—नट राग में छायानट से मुख्य अंतर यह है कि उसमें दो मध्यम लगते हैं और नट में केवल शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है। आलाप-तान में दोनों रागों का स्वरूप लगभग एकसाही रहता है। किन्तु नट गाते हुवे तीव्र मध्यम न लगने देने का पूरा ध्यान रखना चाहिये। नट राग का अपना एक स्वतंत्र स्वरूप है। इस राग में दूसरे रागों के मेल से कई मिश्र राग निर्माण होते हैं। जैसे—नटबिहाग, नटबिलावल, केदार-नट, कामोद-नठ और हमीर-नट आदि। इनमें से अंतिम अर्थात् हमीर नट राग का भी संक्षिप्त वर्णन यहां दिया जाता है।

राग—हमीर-नट

हमीर-नट और नट में कोई विशेप अंतर नहीं है। यह राग गाते हुवे नट राग पूर्वांग में और हमीर उत्तरांग में दिखलाया जाता है। नट का स्वरूप आरोह करते हुवे पूर्वांग में दीख पडता है तथा हमीर का स्वरूप अवरोह करते हुवे दीख पडता है। चीजों को देखने से यही ज्ञात होता है। हमीर नट में दो मध्यम लिये जाते हैं। क्योंकि इस के अतिरिक्त इन दोनों रागों में कोई विशेप अंतर नहीं है इस लिये अवरोह में सब अंग हमीर का ही लिया जाता है।

राग नट के आलाप

१ सा$^{सा}$धंपं, $^{सा}$पंसा, सारेसा, गमरेसा, प^{ध}पमगमरे, सारेसा

२ सारेसा, गमरेसा, ^{ग}रेगगमप, पध^{म}प, सांध^{प}प, ^{ध}पमगमरे, साग मरे, सारेसा

३ सारेसा, ^{ग}रेगमपप^{म}ध^{प}प, पसां$^{सां}$ध^{प}प, सां रेंसां, $^{गं}$रेंगंमं रें निसां, सां रें निसां$^{सां}$ध^{प}प, ममपपधम^{प}ग^{म}रे, रेगगमपसारेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४ रे ग रेंरेगम, पपधप, धध प मम, रे ग रेंरे, ग म गग, म प म
म, पधपपसां, सां रेंनिसां, गंमं रेंनिसां, सांधनिपधम, म प ध
नि सां रें गंमं रेंनिसां, रेंसांनिधमप, धध प ममपगमरे, गरेग
गमपसांरेसा

५ प पधपपसां, सां रेंसां, गंमं रेंनिसां, सां रें गं मंपगंमं रेंनिसां,
सांधपप, पपधम, पगमरेसारेसा

(सूचना—इस राग में तीव्र मध्यम वर्जित कर के सब तान छायानट की ही ली जाती हैं। इसलिये इस राग की तान अलग देना अनावश्यक समझा गया)

राग हमीर नट के आलाप

१ सा, रेगरेंगमरे, ग मपपगमरेनिंसा

२ सारे, रेगरेंगमप, पसांसांधनिमप, पपगमरे, सा

३ प ध म पसां, सां रेंसां, रेंगंमं रेंनिसां, सां रें निसांसांधनिमप,
पपपगमरे, रेगमरेसा

४ सापपगमरे, सासांसांधनिमप, पसां, सांरेंमं रेंनिसां, सां रें नि
सांसांधनिमप, पपगमरे, गरेगरेंगमरेसा

५ पगपगपमगमरे, निंरेसा, सांसांधनिमप, गंमं रेंनिसां, सां रें गं
मंपंपगंमं रेंनिसां, सा रे ग मपपगमरेनिंसा, सांधनिमपपगमरे, रे
गरेंगमपमगरेगनिंरेसा

(सूचना—इस राग में हमीर और नट इन दोनों रागों की तान मिला कर ली जाती हैं। इसीलिये यहां अलग तान देने की आवश्यकता नहीं समझी गई)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५० राग—नट, ख्याल: एकताल

जाने न दूंगी अपने बालम को बेग बहू ते ठाढे मन आला ॥थ०॥ सांची सांची तोहे सौतन राखे सोच सोच सो मन राहत रंग रंगीला मोसो ॥ १ ॥

प (म)प ध प म | प (प)सां ऽ (सां)ध प म ग ऽ रे ग म ग (ग)रे ऽ सा ऽ
जा . ने न दूं | गी . अ प ने बा ल . . . म को
११ | १ ५ +

रे ग म ग (ग)रे ’ सा रे सा | प ऽ ग म प प म ग ऽ ऽ म (ग)रे सा
बे . . . ग ब हू ते | ठा ढे . . . . म न
९ ११ | १ ५

ग ग रे रे ’ म म ग ग म प (म)प ध प म | प (प)सां ऽ (सां)ध प म ग
आ . . . . ला जा . ने न दूं | गी . अ प ने बा
+ ९ ११ | १

ऽ रे ग म ग ग रे ऽ सा ऽ
ल . . . म . को
५ +

॥ अंतरा ॥

प सां सां सां (नि)सां सां | सां ऽ (सां)ध नि सां रें सां ऽ नि रें रें सां
सां ची सां ची . तो | हे सौ . त न रा . . . . .
९ ११ | १ ५

सां ध प ग म ऽ ऽ गं (मं)प (गं)मं रें सां रें सां | (सां)ध नि सां रें सां ऽ
. खे . . . सो . . च सो . च | सो . म न रा
+ ९ ११ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि रें रें सां सां ध प म म ऽ म म प प ध म म प ध नि सां रें
. . . . . ह . त . रं ग रं गीला . . . .
५ +

ग म प ग ऽ ऽ म रें सां ध प ग म ऽ
. . . . . मो . सो . . .
९

क्र. ५१ राग–नट, ख्याल, ताल–तिलवाडा

करत हो मोसो नेहाकी झुटी झुटी बतिया बनाये बनाये ॥ छ० ॥ चेतो इमे हूं जानत तुमहो जानत सरस जग जानत हिय रसो हियरा देत जन ॥१॥

नि सा सा ग ऽ रे नि सा ऽ सा | ग रे ग म रे ऽ ग म प ऽ म ग म रे
क . र . . त | हो . . . . . मो . .
१३ | १ ५ +

म नि सा ऽ सा रे नि सा ऽ ऽ सा ध ऽ | सा ध सा सा प ऽ सा ध सा ध
सो . ने . . . हा | की . . झू टी
१३ | १ ५

सा ऽ ग रे ग ग ऽ रे सा रे नि सा ऽ ऽ ग रे ग रें ग म | ध ध प म ग
. झू . . . टी . . . ब ति या . | ब . . ना .
+ १३ | १

ऽ ग म रे ऽ ग म प ऽ म ग म रे म नि सा
ये . ब . . ना . . ये .
५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

म प प सां ऽ [नि]सां सां ऽ | सां [सां]ध प [म]प प म ग [म]रे [ग]रे रे ग म
चे तो ह मे . हूं | जा . . . न त . . तु म हो .
१२ १ ५ +

प ग म ऽ [म]रे सा ऽ [निं]सा | रे सा ऽ [सा]पं पं सा रे सा ऽ सा रे
जा . . . . . | न त स र स ज ग जा .
१२ १ ५

निं सा ऽ ऽ [सा]धं पं ऽ म म प प सां [नि]सां [सां]ध प | म ग ग [म]रे
. . न त हि य र सो . . हि य | रा . दे .
+ १२ १

[म]निं सा रे सा रे निं सा ऽ ऽ निं सा [धं]नीं ऽ म [ग]ग [म]रे [म]निं सा सा ||
त . ज न . . . ये . . क . . र . त ||
५ + १२

क्र. ५२ राग—हमीर नट, ख्याल एकताल

तोरे देखन को मोरा जियेरात दौबत निसदिन पिया प्रान करें बालमवा || ध्रु० || बेगी आवो तोरे भली कान ले जावो मेरा राजा राम बालमवा ||१||

म रे ' सा सा सा | [सा]प ऽ प [म]प प ध प [म]प प ऽ प ध म प
तो रे दे ख न | को मो रा जि ये रा . त दौ . . .
११ १ ५ + ९

ऽ म ग ऽ म रे | [ग]रे रें ग रे रें ऽ ग म प [प]ग म [ग]रे सा रे सा
ब त . . | नि स . . . . . द्दि . . . . . ना
११ १ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे सा ऽ निंसा सांधंनिंपं पं | पंसांधं सा ऽ सा सां ऽ सांध निम प पग
पि या . प्रा . न | क रे . बा . ल . . मु
९ ११ १ ५ +

म रे सा रे निं सा ऽ म रे ' सा सा सा | सांप ऽ प मप प ध
. . बा . . . तो रे दे ख न | को मो रा जि ये
९ ११ १ ५

प मप प ऽ
रा . त
+

|| अंतरा ||

प ध म प ऽ सां सांध नी प | प ऽ प ध म प ऽ म ग म रे प ध
बे . . . गी आ . . | बो तो . . . रे . . . म ली
९ ११ १ ५ +

मप सां ऽ सां सां गंरें ऽ गं | रें नि सां ऽ ऽ सां सां रें नि सां ऽ
. का न ले जा . | बो . . मे रा . . .
९ ११ १

सांध निम प पग पग प म ग मरे मनिं रे | सा ऽ सा सां ऽ सांध निम
. . . रा जा . रा . . . . | म बा . ल .
५ + ९ ११ १ ५

प पग म मरे सा रे निं सा ऽ म रे ' सा सा सा |
. मु . . बा . . . तो रे दे ख न | को
+ ९ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—नायकी कानड़ा

इस राग में गांधार और निषाद कोमल तथा अन्य सब शुद्ध स्वर लगते हैं। धैवत वर्जित है।

जाति—ओडव-सम्पूर्ण. वादी—पंचम. संवादी—षड्ज.

समय—रात का तीसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—मग़् म नि़् प, नि़् म प मग़् म रे सा

आरोह—सा मग़् म प नि़् प सां

अवरोह—सां प नि़् प नि़म प मग़् म रे सा

विशेष—यह राग कानडा का एक प्रकार है। कानडे से नायकी कानडे में मुख्य अंतर यह है कि इस में धैवत स्वर वर्जित रहता है। कभी-कभी अपवाद रूप से कोमल धैवत का भी अल्प प्रयोग होता है। किन्तु जब धैवत लिया जाता है तो कोमल निषाद के साथ ही लिया जाता है। किसी-किसी घराने के गायक नायकी में शुद्ध धैवत का भी प्रयोग करते हैं। पूर्वाङ्ग में सुहा और उत्तराङ्ग में सारंग के मिश्रण से यह राग बनता है। जैसे—"सा मग़् म प, नि़् म प सां, सांप नि़् प।" यह राग दरबारी कानडा के अंग से गाया जाता है। इसलिये गाते समय स्वाभाविक ही धैवत लग जाता है। सो धैवत न लगने देने का पूरा ध्यान रख कर यह राग गाना चाहिये।

आलाप

१ सा, रेनि़ंसा, पंनि़ंप, पंसा, मग़ुमग़ुमरेसा

२ सा, रेनि़ंसा, मरेप, पमग़ुमरेसा, मग़ुमग़ुमनि़प, नि़मपमग़ुमग़ुमरेसा

३ सारेनि़ंसा, मरेपमपमग़ु, म पनि़प, नि़मपमग़ु, मपनि़पसां, सां,

रेंनि़सांनि़पनि़प, म प नि़ नि़ प मपमग़ुमग़ुमसारेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४ मपनि़पसां, रेंनि़सां, मंग़ंमंग़ंमं रेंसां, रें रें सां नि़सां नि़प नि़ प, म पसां, नि़ प म प नि़ प मग़ मग़मरेसा

५ सा, रेंनि़सा, रेसा, मरेसा, मग़ मग़म पनि़प, सांपनि़प, रेंनि़ सां, नि़पनि़प, म प नि़ पसां, नि़ प म पसां, रेंसां, मं रेंसां, रेंपं मंग़ंमंग़ंमं रेंसां, रेंसां, पनि़प, नि़म नि़प नि़ग़मरेसा

६ सासां, सां, रेंनि़सां, मं रेंसां, रेंपं मंग़ंमं रेंसां, रेप मग़परेसा, म प नि़पसां, रें सां नि़ सां रें सां नि़पनि़प, नि़मपसां, नि़नि़प, मनि़ मप मग़ मग़मरेसा

तान

७ निं़सारेरेनि़सा, निं़सारेपपमग़मरेसा, मपनि़सांनि़पमपग़मरेसा, मपनि़सां रेंसांनि़पमपग़मरेसा, मपनि़सांग़ंमं रेंसांनि़पमपग़मरेसा, मपनि़सांग़ंमंपंमं रेंसांनिसांनि़पमपग़मरेसा

८ सारेरे–रेपप–ग़मम रेसानिं़सा, सारेरे–रेपप– मनि़नि़– पसांसां– नि़ रें रें–नि़सांसां–पनि़नि़–मपप–ग़मम–रेसानिं़सा

९ रेपमपग़म–मनि़पनि़सप–पसांनि़सांनि़प–नि़ रेंसां रेंसांनि़– ग़ंमं ग़ंमं रेंसां–सां रेंसां रेंसांनि़–पनि़पनि़पम–ग़मग़मरेसा

१० सामम–रेपप–मनि़नि़–पसांसां–नि़ रें रें–सांमंमं– रेंपंपं–ग़ंमंमं– सां रें रें–नि़सांसां–पनि़नि़–मपप–ग़मम–सारेरे–निं़सासा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५३ राग–नायकी कानडा, लक्षणगीत; झपताल

सोहे मधुर राग; नायकी कानडा। रजनी तृतिय याम, सह मृदुल 'ग नि' सदा ॥ ध्रु० ॥ 'प स' होत नृप-सचित्र; ओडव-षाडव। मिलत दोउ राग जहँ; सारंग अरु सुहा ॥ १ ॥

(म)रे प (म)ग् ऽ म रे रे सा ऽ सा | (रे)नि् सा रे (प)प (म)ग् (म)ग् म रे सा
सो . हे म धु र रा ग | ना . य की . का . न .
१ ३ + ८ १ ३ + ८

रे सा | रे सा रे (म)ग् (म)ग् म प प नि् प नि् प | (सां)नि् सां नि् प नि्
डा . | र ज . नी . तृ ति य या . . म | स ह मृ . दु
१ ३ + ८ १ ३

प (म)ग् (म)ग् म रे रे सा |
ल ग नी . स दा . |
+ ८

॥ अंतरा ॥

म प नि् प ऽ नि् सां सां (रें)नि सां सां | (रें)नि् सां (मं)गं् मं रें सां (नि्)सां
प स हो . त नृ प स चि व | ओ . ड . व षा .
१ ३ + ८ १ ३ +

नि् प नि् प | म प नि् सां रें (मं)गं् मं रें सां रें सां | रें नि् सां नि् प
ड . . व | मिल त दो उ रा . ग . ज हँ | सा . . रं .
८ १ ३ + ८ १ ३

नि् प (म)ग् (म)ग् म रे रे सा |
. ग अ रु . सु हा . |
+ ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५४ राग—नायकी कानडा, ख्याल; एकताल

बनरा मोरा प्यारा ब्याहन आया छैला छबीला लाडला रंगीला ॥ ध्रु० ॥
भूखन हार चमेली बेला कंगना हाथ सजीला ॥ १ ॥

रेनि॒ सा रे प प मग॒ मग॒ म रे सा | सारे ऽ सानि॒ सा सा ऽ रेनि॒ सा
. . ब न रा . . . मो रा | प्या . . रा ब्या .
९ ११ | १ ५

ऽ रे प प ऽ म नी नी प म प ऽ प मग॒ म म प मप | सां ऽ नि॒प
ह न आ . . . . या . . छै ला छ | बी .
+ ९ ११ | १

नी प सांनि॒ सां नी प प नी म प मग॒ मग॒ म सारे सा
. ला ला ड ला . रं गी . . . . . . ला
५ +

॥ अंतरा ॥

म प नी प सांनी सां ऽ नि॒सां | सां ऽ सां सां ऽ नी रें सां ऽ रें
भू . ख . न हा . | र च मे . . ली .
९ ११ | १ ५

नि॒सां ऽ नि॒प नी प ऽ नि॒म प सांनी सां | मग॒ मग॒ म रेंरें सां नि॒ रें
बे . . ला कं ग ना . | हा . . . थ स जी
+ ९ ११ | १ ५

ऽ सां नी नी प नी नी प म प नी नी प म रे सा नि॒ सा
ला . . . .
+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५५ राग–नायकी कानडा, तीनताल (मध्यलय)

घनसे घना गरजे। गरज-गरज कहिं अनत जा बरसे हो तुम ॥ ध्रु० ॥
कहिं छावत कहिं धाम बनावत कहिं लागत झरसे हो तुम ॥ १ ॥

’रेनि़ सा म रे प म नि़ प | सां ऽ नि़ रें सां नि़प नि़ प म म प
○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ | − − − ○ ○ ○ ○ − ○ ○ ◡
घ न से . . . घ . | ना . ग र जे . . ग र ज
७ १ ३ + ७

नि़ प | प नि़ नि़ सां ऽ नि़ प नि़ प ’ म म प नि़ मप मग़ म प म |
◡ ○ | ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ◡ ◡ − ○ ○ ○ ○ |
. ग | र . ज . . क . हिं अ न त . जा . . ब र |
१ ३ + ७

प ’ मग़ म प मग़ म प म रे सा रे रेनि़ सा म रे प म नि़ प |
− ○ ○ ○ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ |
से हो . . . . तु . म . . घ न से . . . घ . |
१ ३ + ७

सां ऽ नि़ रें सां
− − − ○ ○
ना . ग र
१ ३

॥ अंतरा ॥

म म प नि़ प सांनि़ सां सां सां | रेंनि़ सां रें सां नि़प नि़ प म प
○ ○ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ ○ | ○ ○ ○ ○ − ○ ○ ○ ○
क हिं छा . . व त क हिं | धा . म ब ना व त क हिं
+ ७ १ ३ +

नि़ सां मगं मगं मं रें | सां सांप नि़ सां म प नि़ नि़ प म रे सा रे
○ ○ ○ ○ ○ ○ | − ○ ○ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○
ला . ग त . झ | र से . . हो . . . तु . म . .
७ १ ३ +

रेनि़ सा म रे प म नि़ प |
○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ |
घ न से . . . घ . |
७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५६ राग–नायकी कानडा, तीनताल (मध्यलय)

सखा तुम बोलो न बात विचारी । कहो कौन सी बाल जगत में जैसी है भानु दुलारी ॥ ध्रु० ॥ भानुनगर के बसनहार तुम प्यारी की अनुहारी॥१॥

सा ^मग॒ ऽ म प प ऽ प | प नि॒ ^मग॒ ऽ ग॒ म रे ऽ सा सा ^मग॒ ऽ म
स खा तु म बो लो | न . बा त वि चा री क हो कौ
\+ ७ | १ ३ +

प म प सां | नि॒ प प म प नि॒ प ^मग॒ प रें नि॒ सां नि॒ प म प
. न सी . | बा ल ज ग : त . में जै . सी . है . भा .
७ | १ ३ + ७

नि॒ नि॒ | प म प ^मग॒ रे म प म रे सा नि॒ सा सा ^मग॒ ऽ म प प
. . | नु . दु ला री . . . . स खा तु म बो
| १ ३ + ७

ऽ प | प नि॒ ^मग॒ ऽ ग॒ म रे ऽ सा
लो | न . बा त वि चा री
| १ ३

॥ अंतरा ॥

^नि॒म म म प प नि॒ प | नि॒ सां सां नि॒ प नि॒ सां नि॒ सां सां ^रेंनि॒
भा नु न ग र के . | ब स न . हा . . र तु म प्या
\+ ७ | १ ३ +

सां ^मग॒ म रें सां नि॒ रें सां नि॒ | प प नि॒ प म ग॒ म प म रे सा नि॒ सा
. री . की . अ . नु . . | हा री . . . .
७ | १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५७ राग–नायकी कानडा, तीनताल (मध्यलय)

घर जाने दे छांड दे वैयां तुम ठाकुर लरकैया ॥ ध्रु० ॥ हमरी कही पिया मानत नाहीं ऐसो ढीठ कुवर कन्हैया ॥ १ ॥

[म]गु॒ [म]गु॒ म रे [सा]रे सा रे नि॒ सा रे [सा]रे | प [म]गु॒ रे [सां]रे ऽ म म नि॒
० ◡ ◡ ० ० ० ० ◡ ० ० ० | – – ० ० – ० ० –
घ र . जा ने दे छां . ड दे . | वैं या . . तु म ठा
+ ७ १ ३ +

प प म प | नि॒ म प [म]गु॒ रे [सा]रे [म]गु॒ [म]गु॒ म
० ० ० ० | ◡ ◡ ० – ० ० ० ◡ ◡
कु र ल र | कैं . . या . . घ र .
७ १ ३

॥ अंतरा ॥

म म [नि]प नि॒ सां सां सां | [रें]नि॒ सां रें सां [रें]नि॒ सां [नि]प नि॒ प प
० ० ० ० – ० ० | ० ० ० ० ० ० – ० ० –
ह म री क ही पि या | मा . न त ना . ही ऐ सो ढी
+ ७ १ ३ +

प म प प | म [नि]प [म]गु॒ रे [सा]रे
० ० ० ० | ० ० – ० ०
ठ कुं व र | क न्हैं या . .
७ १ ३

क्र. ५८ राग–नायकी कानडा, तीनताल (मध्यलय)

गहरी गहरी नदिया बहत है। पवन चलत पुरवैया, मोरि दैया ॥ ध्रु० ॥ गहरी नदियन डरवन लागे किस विध उतरोंगी पार मोरि दैया ॥ १ ॥

नि॒ प नि॒ म प म प नि॒ प | [म]गु॒ म रे सा रे सा रे नि॒ सा रे सा
– ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ | – ० ० ० ० – ० ० ० ० ०
गै रि गै . रि न . दि . | या . ब ह त है प व न च ल
+ ७ १ ३ + ७

रे प प | म प नि॒ प [म]गु॒ नि॒ सां नि॒ सां रें सां [नि]प
० ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ०
त पु र | वै . . . या मो रि दै . . . या
१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

’म निप नि सां सां सां सां | ’नि सां रें सां नि सां रें सां निप
o o o o o o o o | o ◡ ◡ o o ◡ ◡ ◡ ◡ o
गै रि . न दि य न | ड र व न ला . . . गे
\+ ७ १ ३

नि प म प नि सां मगु मं रें | सां सां ’नि सां रें निसां ऽ निप
o o ◡ ◡ o o o o – | o o o o ◡ ◡ o o o
. . कि स वि ध उ त रों | गि पार् मो रि . दैं या
\+ ७ १ ३

नि नि प नि म प म प नि प |
o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ |
. गै रि गै . रि न . दि . | या
\+ ७

क्र. ५९ राग—नायकी कानडा, ख्याल; तिलवाडा (दुसरा प्रकार)

ना मोसो समझ रस बतियां करत हू इन बतियान मन कैसे और ।।ध्रु०।।
इन सदारंग यादहू रस की खान भई यामें मेरे धाम महमदसा ।। १ ।।

सा मगु मगु म प गम | निधु निधु नि प ऽ मप प नि नि ऽ प
o o o o o o | o o o o o o – ◡ ◡ o –
ना . . मो सों . | स म . . . झ स म झ
१ ५

मप प मगु मगु म प प ऽ मगु मगु म सारे सा ऽ निंसा | सा रे रे
o o – o o o o – o o – – – o o | – o o
, र स ब ति . यां क र . . त . | हू इ न
\+ १२ १

रेनिं सा रे सारे मगु रे सारे मगु रेरे सा रेनिं सा निंपं निं पं ऽ
o o o o – o o – – – o o o o – –
ब ति य . न म . न कै से औ . . . र
५ + १२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म प ^नि^प नि् सां सां सां ^नि^सां सां | सां ऽ नि् सां ऽ नि् रें सां ऽ
इ न स दा रं ग था . द | हू र स . . की
१ ५

रें रें सां नि् सां ऽ ऽ सां ऽ नि् नि् म प ऽ ^म^गु म म ऽ नि् नि् प
खा . . . . न भ . ई . था . मे मे . .
+ १२

म प ऽ | ^म^गु ^म^गु म ^सा^रे सा ऽ सा ^म^गु ^म^गु म प नि् प म गु
. . | रे धा . . म म ह . म द . . सा .
१ ५ +

ऽ म ^सा^रे सा
. . .
१२

राग—शहाना कानडा

इस राग में गान्धार और निषाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी—पंचम. संवादी—षड्ज. समय—रात का तीसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—नि् ध नि् प म प ^म^गु म रे सा

आरोह—^रे^नि् सा ^म^गु म प, नि् ध नि् प, म नि् प सां

अवरोह—सां नि् ध नि् प म प ^म^गु म रे सा

विशेष—यह राग कानडा का एक प्रकार हैं। कानडा से शहाना कानडामें मुख्य अंतर यह है कि इसमें शुद्ध धैवत का प्रयोग होता है। शुद्ध धैवत लेने के कारण इसका स्वरूप बहार से बहुत कुछ मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शहाना कानडा की उत्पत्ति दरबारी और मल्हार के मिश्रण से मानी जाती है। 'नि प' इस स्वरसंगति तथा अवरोह के समय कोमल गान्धार पर आन्दोलन करने से इस में दरबारी कानडा की छाया स्पष्ट दिखलाई देती है। "मग् मग् म ध ध नि् प" इस स्वरसमुदाय से शहाना की मधुरता बहुत बढती है। दिन में गाया जाने वाला सुघराई राग भी इसी नमूने का है।

आलाप

१ सा रे नि् रे नि्सा, सा प नि्पसा, सा रे नि्सा, रे म ग् म ग्मरेसा

२ रे नि् सा नि्सा, म ग्मरेसा, मप म प म ग् म ग्म, प म ग्मरेसा

३ रे नि्सा म ग्मरेसा, मप म ग् प ग्म, नि्धनिप, नि मप म ग् म ग्मरेसा

४ मप म ग् म ग्म, नि्धनि्प, नि मपसां, नि्धनि्प, नि मप म ग् प ग्मरेसा

५ सासा नि ध नि धनि्प, म पसां रें नि्सां, नि् सां रेंमं रेंसां, सां रें नि्सांनि्धनि्प, नि मप म ग् म ग्मरेसा

६ म प नि्पनि्सां, रेंसां, म ग्ं म ग्ंमं रेंसां, सां रें नि्सांनि्धनि्प, मनि् धनि्प नि मप, म ग् म ग्म सा रेसा

७ म प नि् पसां, रें नि् सां नि्सां, मं ग्ं मं ग्ंमं रेंसां, सां ग्ं मंपं मं ग्ंमं रें सां, नि सां नि सांनि् सां रें सांनि्धनि्प, नि मपसां म ग् म ग्मरेसा

तान

८ ग्मपग्मरेसा, ग्मपग्मनि्धनि्पमपग्मपग्मरेसा, नि्धनि्पमपग्म नि्पसांनि् रेंसांनि्धनि्पमपग्मरेसा, ग्मनि्पसांनि् रेंसांग्ंमं रेंसां नि्सां, रेंसांनि्धनि्पमपनि्पमपग्मपग्मरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९ पपमगूममरेसा, नि्नि्धधनि्नि्पपममपपगूगूममरे रेसासा, सांसां नि्नि्धधनि्नि्पप रें रेंसांनि्सांसांगूंगूंमंमं रें रेंसांसांनि्नि्सांसांनि् नि्धधनि्नि्पपममपपगूगूममरे रेसासा

१० सापमपगूमरेसा, सांनि्धनि्पधमपगूमरेसा, प रेंसां रेंनि्सांपनि्ध नि्पधमपगूमरेसा, सांमंगूंमंसां रेंनि्सांनि्धनि्पमपगूमरेसा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

क्र. ६० राग—शहाना कानडा, लक्षणगीत; तीनताल (मध्यलय) :

शहाना कानडा भावत । 'ग नि' कोमल सह तृतिय पहर निसि, सम्पूरन-षाडव गुनि गावत ॥ ध्रु० ॥ सोहत पंचम अंश सुंदर । करत मधुर संवाद प्रथम सुर । दरबारी अरु मल्हार को मिलावत ॥ १ ॥

—पं. विनयचंद्रकृत

,मगू	म	म	ध	,नि्	ध	नी	प	मगू	म	रे	सा	नि्	सा	मगू	म	रे	रे
०	०	०	०	–	०	०	०	०	–	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
श	.	हा	ना	का	.	न	डा	भा	.	व	त	ग	नि	को	.	म	ल
७			१		३			+				७				१	

सा	सा	सा	सा	सा	म	म	प	मगू	म	नि्	ध	ध	नि्	सां	नि्	ध	नि्	प
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	◡	◡	०	०	०	०	०
स	ह	तृ	ति	य	प	ह	र	नि	सि	सं	.	पू	.	.	र	न	षा	..
		३				+				७					१			

म	प	मगू	म	गू	म	प	म	रे	सा	,मगू	म	म	ध	,नि्	ध	नि्	प
०	०	०	०	◡	◡	◡	◡	०	०	०	०	०	०	–	०	०	०	०	–
ड	व	गु	नि	गा	.	.	.	व	त	श	.	हा	ना	का	.	न	डा
३		+						७					१			३	

॥ अंतरा ॥

नि्	प	नि्	सां	सां	सां	सां	,मगूं	ऽ	मं	रें	सां	सां	नि्	सां	रें	सां	नि्
०	०	०	०	०	–	०	०	०	०	०	०	–	०	०	०	०	०	–	०	०
सो	.	ह	त	पं	च	म	अं	श	सुं	द	र	क	र	त	म	धु
+				७			१			३			+			७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि़ प | मग़ु म म नि़ ध नि़ प प म प नि़ प मग़ु म रे सा सा |
र सं . | वा . द प्र थ म सु र द . र . बा . री अ रु |
१ ३ + ७

मग़ु म म नि़ ध ध नि़ सां नि़ प मग़ु म रे सा , मग़ु म म |
म . ल्हा . र को . . मि . ला . व त श . हा | ना
१ ३ + ७

क्र. ६१ राग—शहाना कानडा, ख्याल; एकताल

सखि कहां लौं कहौं री कान्ह हठीली मानत नाहीं एकोरी ॥ ध्रु० ॥
सुनरी प्यारी कान्ह बडे रसिया अत रंगलियां करे री ॥ १ ॥

—प्रो. रामकृष्णबुवा जोशीकृत

म प मग़ु म | ध ऽ सां नि़ नि़ प ध प ऽमपमग़ु म सारे सा रे नि़ं सा
स खि क . | हां . . . . लौं क हौं . . . री . का . .
१ ५ + ९

सा सा रे मग़ु म सारे | सा म प प सां सांध सां नि़ नि़ प निम म प
न्ह ह ठी लो . . | . मा न त ना . . . . . ही ए को .
११ १ ५

ऽ म प ध ध प म प मग़ु म सारे सा म प मग़ु म | ध ऽ सां नि़ नि़
. . . . री . . . स खि क . | हां . . .
+ ९ ११ १

प ध प ऽ मप मग़ु म सारे सा ऽ ऽ
लौं क हौं . . . री .
५ + ९

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म म प सां ऽ नि सां | सां नि सां रें सां रें सां ऽ नि सां सां ध नि प
सु न री प्या . | री का . न्ह ब डे . र सि या .
११ १ ५

म प नि सां मंगु मं रें सां सां रेंनि सां रें सां रें रें सां नि सां ऽ
अ त रं . ग . र . लि यां . . क रे . . . .
\+ ९

नि ध नि प म प मगु म |
री . . . स खि क . |
११

क्र. ६२ राग–शहाना कानडा, झपताल

रजनी सजी है नवल वेष धरे किये सुघर सिंगार ॥ ध्रु० ॥ मग में बिछाये अमित तारा सुमन शशि स्वागत हेत ॥ १ ॥

–पं. विनयचंद्रकृत

मगु मगु म ध म प प मगु म रे सा ऽ | रे सानि सा म ऽ म नी ध
र ज नी . . . स जी . है . | न व ल . वे . ष
१ ३ + ८ १ ३ + ८

नी प | नि प नि सां नि प म ध म प मगु म गु म प म गु म प म
ध रे | कि . ये . सु घ . र . . सिं . गा . . . .
१ ३ + ८

रे सा नि सा |
र . . . |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

नि़ प ^सां^नि़ सां सां ^रें^नि़ सां सां ऽ ऽ | ^सां^नि़ सां रें ^म^ग़ म रें सां
म ग में . बि छा . ये | अ मि त ता . रा .
१ ३ + ८ १ ३ +

नि़ ध नि़ प | नि़ प नि़ सां नि़ ध नी प ^म^ग़ म ग़ म प म रे सा नि़ सा |
ॱ○ ○ — — | ○ ○ — — ○ ○ — — — — ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ |
सु . म न | श . शि . स्वा . . ग त . हे . . . त . . . |
८ १ ३ + ८

क्र. ६३ राग–शहाना कानडा, तीनताल (मध्यलय)

मैं तो तुमसे होरी खेलूंगी कान्ह सांवरे मोहन प्यारे ॥ ध्रु० ॥ अबिर गुलाल भरे भर डारों यह मेरे मन चाव रे ॥ १ ॥ –प्रो. जोशीकृत

’ नि़ ऽ प ^नि़^म प ^म^ग़ म | प सां ऽ सां नि़ ध नि़ प नि़ प नि़ म
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ | ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ — ○ ○ ○
मैं तो तु म से . | हो री खे लूं . . गी का न्ह सा .
+ ७ १ ३ + ७

म प सां | ^म^ग़ ^म^ग़ म ^म^रे सा
○ ○ ○ | — ○ ○ — —
व रे . | मो ह न प्या रे
१ ३

॥ अंतरा ॥

म म म म प ^नि़^प नि़ | सां सां सां ^रें^नि़ सां सां ^सां^नि़ सां ^म^ग़ म रें
○ ○ ○ ○ — ○ ○ | — ○ ○ ○ ○ — ○ ○ ○ ○ —
अ वि र गु ला ल भ | रे भ र डा . रों य ह मे . रे
+ ७ १ ३ + ७

सां सां | नि़ सां रें सां नि़ सां रें सां नि़ सां रें सां नि़ प
○ ○ | ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○
म न | चा . . . . व रे
१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ६४ राग–शहाना कानडा, तीनताल (मध्यलय)

गौरश्याम वदनारविन्द पर जिसको वीर मचलते देखा ॥ ध्रु० ॥ नयन-बान मुसकान संग फंस फिर नहिं नेक संभलते देखा ॥ १ ॥ ललित किशोरी युगल इश्क में बहुतों का घर घलते देखा ॥ २ ॥ डूबा प्रेमसिंधु का कोई हमने नहीं उछलते देखा ॥ ३ ॥

ᵐगु॒ म म | ध ध नि॒ प ᵐगु॒ ᵐगु॒ म ᵐरे रे सा सा ᵐगु॒ म | रे सा ध
o o o o | – o o o o o o – o o – o o | o o ◡
गौ . र | श्या म व द ना . र विं द प र जि स | को . वी
७ १ ३ + ७ १

नि॒ सां सां नि॒ नि॒ प म पᵐगु॒ म रे साᵐगु॒ म म | ध ध नि॒ पᵐगु॒ ᵐगु॒ म
◡ o o ◡ ◡ ◡ ◡ o o o – o o o o | – o o o o o o
. . र म . च . ल ते . दे खा गौ . र | श्या म व द ना . र
३ + ७ १ ३

॥ अंतरा ॥

प नि॒ प ˢᵃनि॒ सां नि॒ सां सां | नि॒ सां रें मं रें सां नि॒ सां नि॒ प नि॒
o o o o o o o o | ◡ ◡ ◡ ◡ o o o o o o o
न य न बा . न मु स | का . . . न सं . ग फं स फि
+ ७ १ ३ +

ध नि॒ ध ध नि॒ सां सां नि॒ नि॒ | प म प ᵐगु॒ गु॒ म प नि॒ प म प म
o o o ◡ ◡ o o ◡ ◡ | ◡ ◡ o – ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
र न हिं ने . . क सं . | भ . ल ते दे . . . खा . . .
७ १ ३

गु॒ म प म रे सा नि॒ सा
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
. . . .
+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—बागेश्री कानडा

इस राग में गान्धार और निषाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—सम्पूर्ण (वक्र गति से). वादी—मध्यम. संवादी—षड्ज.
समय—रात का तीसरा प्रहर.
राग का मुख्य अंग—प म प ध [म]ग् म रे सा रे [म]ग्
आरोह—सा रे [म]ग् म प, [म]ग् म ध नि् सां
अवरोह—सां नि् ध प म प [म]ग् म रे सा

विशेष—यह राग बागेश्री और कानडा इन दो रागों के मिश्रण से बना है। इसे पंचमबागेश्री तथा कौशी-कानडा भी कहते हैं। इस राग के पूर्वाङ्ग में कानडा और उत्तराङ्ग में बागेश्री का अंग रहता है। पूर्वाङ्ग में बागेश्री दिखानी हो तो "रे रे सा रे [म]ग्" इस प्रकार के स्वरसमूह लिये जाते हैं। "रे रे सा निं सा रे" इन स्वरों से कानडा का अंग दिखाते हैं। पंचम पर बागेश्री और कानडा का मेल बहुत मधुर लगता है। आलाप समाप्त करते हुवे आलाप के अन्त में बागेश्री आती है। यदि उसमें तुरंत कानडा मिलना हो तो इस ढंग का स्वरविन्यास लिया जाता है—"[म]ग् म ग् रे सा, रे सा रे [म]ग् म प।" इस राग में बागेश्री और कानडा इन दोनों रागों का मिश्रण रहने से यह बहुत ही मधुर होता है।

आलाप

१ सा[रे]निं्सा, सारे[म]ग्[म]ग्मग्रेसा

२ सा, रे[निं]सा[सा]रे[म]ग्[म]ग्रेम, मप [म]ग् [म]ग्रेमम पधमग्रे [म]ग्रेसा,
[रे]निं्सानिं्[सा]रेसा

३ रे रे सा निं सा, [सा]रे, [म]ग्[म]ग्रेम, म पधम, मध[प]धनि्धपध[म]प
म पधमग्रेम[म]ग्रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४ सा, रे ग़ु मधम, म ध नि्सांनि्धम, ग़ूमनि्ध^प^मप^म^ग़ूमरेसा,
सामप^म^ग़ूरेम, म ध नि् सां ध नि् सां, ^सां^नि्धप, ^ध^मप^म^ग़्^म^ग़्मरेसा

५ मप^म^ग़्^म^ग़ूरेम, मधनि्ध, धनि्सां, रें रें सां नि् सां रें, ^मं^ग़ं^मं^ग़ूंमं
रेंसां, ^नि्^सांनि् सां रें सांनि्ध, धधनि्धपध ^म^प म प ध प^म^ग़्
^म^ग़ूमरेसा

६ ^रे^नि्सानि्^सा^रे^म^ग़ू^म^ग़ूरेम, मपधम, ^सां^नि्^सां^नि्ध^नि्^पधम, मनि्धसां
नि् रेंसां, ^मं^ग़ूं^मं^ग़ूंमं रेंसा, रें रें सां नि्सांनि् सां रें सांनि्धम, ध
ध प म पधम^म^ग़्रे, ^म^ग़ू^म^रे^नि्^सानि्^सा^रेसारे^म^ग़्^म^ग़ूरे ग़ूमग़ूरेसा

तान

७ रेसानि्सारेमरेसा, रेग़ूमग़ूरेसा, रेग़ूमधनि्धपमग़ूरेमग़ूरेसा, रेग़ू
मपमग़ूरेग़ूमधनीधपमग़ूरेग़ूमधनि्सांनि्धपमग़्रेग़ूमधधपमग़ूमरेसा

८ पधध–पमग़ूमरेसा, नि्सांसां–नि्ध– पधध– पम– ग़ूमम– रेसा,
सां रें रें–सांनि्–धसांसां–नि्ध–पधध–पम–ग़ूमम–रेसा

९ ग़ूमम–ग़ूमम– रेसा–पधध–पधध–पम– नि्सांसां-नि्सांसां-नि्ध,
सां रें रें–सां रें रें–सांनि्–नि्सांसां-नि्सांसां-नि्ध-पधध-पधध-
पम–ग़ूमम–ग़ूमम– रेसा

१० ग़ूममरेसा–पधधपम–निसांसांनि्ध–नि् रें रेंसांनि्–सांमंमंग़ू रें–
सां रें रेंसांनि्–धसांसांनि्ध–पधधपम ग़ूममरेसा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ६५ राग–बागेश्री कानडा, लक्षणगीत; द्रुतएकताल

बागेसरी कानडा, सरस राग सजनी री। कोमल ग-नी सुहावत, म-स राजत नृप मंत्री ॥ ध्रु० ॥ सम्पूरन रूप वकर, रजनी तीसरो पहर। बागेश्री उत्तरांग, पूरव अरु दरबारी ॥ १ ॥

रे मग़ु रेंसा रे प ध प म ग़ु ऽ | मग़ु म रे सा निं सा रे रे रेंनिं सा
बा गे स रिका न . डा . | स र स . रा . . ग स ज
१ ३ +५ ६ १ ३ +

निं सा रे सा निं धं | निं सा रे म प ध प ध नी ध पमग़ु रे म म |
नी . . . री . | को . म ल ग . नी . . सु . हा . व त |
५ ६ १ ३ + ५ ६

मग़ु म ध नि सां नि ध म ग़ु रे सा निं सा रे |
म स रा . . ज त नृ प मं . त्री . . |
१ ३ + ५ ६

॥ अंतरा ॥

मग़ु म नि ध ध नि सां नि सां सां सां | रेंनि सां नि सां रें रें सां
सं पू र न रू . . प व क र | र ज नी . . ती . .
१ ३ + ५ ६ १ ३

नि सां ऽ रें सां नि ध | ध नि सां मग़ु रें सां सां रें सां नि ध ध |
स रो प . ह र | बा . गे . स री उ त्त . रां . ग |
+ ५ ६ १ ३ +५ ६

ध प म प ध ध मग़ु ग़ु रे रे सा निं सा सारे |
पू . . . र व अ रु द र बा . री . |
१ ३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ६६ राग–बागेश्री-कानडा, ख्याल; ताल तिलवाडा

गोरे गोरे मुख पर बेसर सोहे और सोहे नैना कजरा रे ॥ ध्रु० ॥ सीस-
फूल बेंदी सिर कंठ माला पर और मोतीयन गजरा रे ॥ १ ॥

रे रे म ग़ु ग़ु ऽ ऽ रे ग़ सा रे | प प ऽ म ग़ु रे रे म ग़ु ऽ नि़ सा रे
गो रे गो . . रे . . | मु ख . . प र बे . .
१३ | १ ५

म प ध नि़ प ध नि़ ध नि़ ध ध म ग़ु म ग़ु म रे सा ऽ रे नि़ सा रे सा |
. . . . स र . सो . . हे औ . र सो |
\+ १३

रे ऽ सा नि़ सा सा रे नि़ सा ऽ सा धं नि़ सा म ऽ म ग़ु म रे ग़ु रे सा
हे . . नै . ना . क ज रा . . रे . .
१ ५ +

रे नि़ सा सा रे रे रे म ग़ु ग़ु ऽ रे ग़ सा रे | प प ऽ म ग़ु रे रे म ग़ु
. . . गो रे गो . . रे . . | मु ख . . प र
१३ | १ ५

ऽ सा रे सा
. .

॥ अंतरा ॥

ग़ु म ध नि़ सां सां नि़ सां सां सां नि़ सां सां रें रें सां नि़ ध | ध प ध
सी स फु ल बें दी . सि र कं . ठ . मा . | ला .
\+ १३ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ध नि़ ^ध^ध म ग़ु ग़ु म नि़ ध सां नि़ रें सां नि़ ध प ध नि़ ध प
. . . प र . औ र मो . ती . . य न ग ज रा . रे .
५ +

ध ^म^प ^प^ध ध प म ग़ु ग़ु ऽ रे सा रे |
. . . गो रे गो . . रे . . |
१३

क्र. ६७ राग—बागेश्री-कानडा, तीनताल (मध्यलय)

दिल नहिं लगदा वे मियां तू सानूं एक तो जीवे तुम बिन ॥ ध्रु० ॥ वे मियां मांडी झिंदरञो लाख भर सलोनें अदारंग बार बार थंडरा पानी पीवे तुम बिन ॥ १ ॥

’ सां ^रें^नि़ सा सा सा | सां सां नि़ ^ध^ध म ^म^ग़ु ’ ग़ु ग़ु रे सा रे
दि ल . न हि | ल ग दा . वे . . . . . .
७ १ ३ + ७

ऽ ^सा^नि़ | सा ’ म म प ध नि़ सां ऽ ’ नि़ सां नि़ रें रें सां नि़ सां ऽ |
. मि | या तू सा नू . . . ए क तो जी . . . . |
१ ३ + ७

नि़ ध ’ ^ध^प ध नि़ ध प ध ^म^प म प ध ^ध^प ^म^ग़ु ^म^ग़ु म प |
वे . तु म . बि न . . . . . . दि ल . न हिं |
१ ३ + ७

सां सां नि़ ^ध^ध म
ल ग दा . वे
१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म प सां ऽ ^नि^सां सां | सां ' नि सां रें रें सां ' नि सां नि |
o o – –   o o | – o o o o – – o o – –
वे मि यां . मां | डी झिं द र थो . ला . ख |
\+ ७ १ ३ + ७

ध ' ^सां^नि सां नि ध नि ध प ऽ म प म प नि प | ^म^ग ^म^ग म
– o o o o o o o o – o o ◡ ◡ ◡ ◡ | – o o
. भ . र . . सलो ने . . . अ . | दा . .
१ ३ + ७ १

रें सा ऽ सा ऽ सा सां सां सां | ^रें^नि सां ऽ सां सां नि सां रें ^सां^नि
o o – – o o – o o | o o o o o o o o o
रं ग बा र वा र ड | ता . र थं ड रा . पा
३ + ७ १ ३ +

सां नि ध ऽ नि सां | नि ध ' ^ध^प ध नि ध प ध ^म^प म प ध ^ध^प
o o o – o c | o o o o o o o o o o ◡ ◡ ◡ o
. नी . पी . | वें . तु म . बि न . . . . . दि
७ १ ३ +

^म^ग ^म^ग म प |
o o o o
ल . न हिं |
७

क्र. ६८ राग–बागेश्री-कानडा, तीनताल (मध्यलय)

ले हो धाये धाये घर लाये जबही निरखो जो पियामुख ॥ ध्रु० ॥ बल बल बल जाऊं रे साजन करियो पंजल तन के सुख ॥ १ ॥

' ^रें^नि सा ध ऽ | ध ^ध^नी ऽ ऽ ^ध^प ^म^ग ' रे म रे म प | प ^म^ग म
o o o o – | – – – o o – o o ◡ ◡ o – | – – –
ले . हो | धा . ये धा ये . . घ र | ला . .
७ १ ३ + ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा रे सा ऽ रेनिं सा | मग् म रे सा रेनिं रेसा मग् म रे सा | रे निं सा

. . ये ज ब | हीं . नि र खो . . . जो . | पि . .

\+ ७ १ ३ + ७ १

निं सा रे रे ऽ सा , रेनिं सा ध ऽ | ध धनी ऽ ऽ ध प

या . . मु ख ले . हो | धा . ये .

३ + ७ १ ३

॥ अंतरा ॥

रें सां नि् सां नी ध | नी ध सांनी सां सां ऽ नी प नी म | प नी प

. ब ल . ब ल . | ब ल जा . ऊं रे . सा . | . ज .

\+ ७ १ ३ + ७ १

मग् ऽ म रे म रे प प | सांनी नी सां नी प म रे सा रे निं सा

न . क रि यो . पं जल् | त न के . . . मु . ख . .

३ + ७ १ ३ +

रेनिं सा ध ऽ |

ले . हो

७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—सुहा

इस राग में गान्धार और निषाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। धैवत वर्जित है और आरोह में ऋषभ भी वर्जित है।

जाति—ओडव-षाडव. वादी—मध्यम. संवादी—षड्ज.

समय—दिन के दूसरे प्रहर के अंत में.

राग का मुख्य अंग—नि़् सा $^{\text{म}}$ग् $^{\text{म}}$ग् म प $^{\text{म}}$ग् म रे सा

आरोह—नि़् सा $^{\text{म}}$ग् म प नि् म प सां

अवरोह—सां नि् प म प $^{\text{म}}$ग् म रे सा

विशेष—सुहा राग कानडा अंग का एक प्रकार है। कानडा और सारंग के मेल से इसकी रचना हुई है। एक तरह से यह राग दिन में गाया जाने वाला कानडे का एक प्रकार है। सारंग के बाद यह राग गाया जाता है। सारंग की छटा भी इस राग में बहुत दिखाई देती है। सारंग की छाया कम करने के लिये ही सुहा के पूर्वाङ्ग में ऋषभ स्वर दुर्बल रखा गया है, और 'सा $^{\text{म}}$ग् म प' इस प्रकार आरोह किया जाता है। इस प्रकार सारंग की छाया केवल उत्तरांग में ही दिखलाई देती है। 'नि् प' स्वरसंयोग के बार-बार प्रयोग से इस राग का माधुर्य बहुत बढता है। सुहा में मध्यम "मुक्त" अर्थात् खुला हुवा और बार-बार लिया जाता है। आलापों का न्यास भी कभी-कभी इसी स्वर पर किया जाता है।

आलाप

१ सा, $^{\text{रे}}$निं्सा, $^{\text{सा}}$पंनिं्पंसा, $^{\text{म}}$ग़्$^{\text{म}}$ग़्मरेसा, $^{\text{रे}}$निं्$^{\text{सा}}$निं्सा

२ सा$^{\text{म}}$ग़्$^{\text{म}}$ग़्मरेसा, सा$^{\text{म}}$ग़्$^{\text{म}}$ग़्मप, $^{\text{प}}$सां, $^{\text{नि्}}$प$^{\text{नि्}}$मप, प$^{\text{म}}$ग़्$^{\text{म}}$ग़्मरेसा
सा$^{\text{रे}}$निं्$^{\text{सा}}$निं्सा

३ सा$^{\text{म}}$ग़्$^{\text{म}}$ग़्मप, प$^{\text{म}}$ग़्$^{\text{म}}$ग़्म, म$^{\text{म}}$नि्प, $^{\text{नि्}}$म$^{\text{नि्}}$पसां, $^{\text{रें}}$$^{\text{नि्}}$सां$^{\text{नि्}}$प
नि्प, नि्नि् प मप$^{\text{म}}$ग़्$^{\text{म}}$ग़्म, रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४ सा^मग़ू^मग़ूमप, प^मग़ू^मग़ूम, ^मनि़प, ^{नि़}म^{नि़}पसां, ^{नि़}सां, रेंसां, ^{मं}ग़ूं^{मं}ग़ूंमं रेंसां रें रें सां निं़सां^{नि़}पनि़प, नि़ मप^मग़ू^मग़ूम, ^{सा}रे सा, ^{रे}निं़^{सा}निं़सा

५ रेसा, मरेसा, मरेप, ^{नि़}मप^मग़ू^मग़ूम, नि़पसां, रेंसां, मं रेंसां, सां, ^पनि़प, निं़ प म पसां, ^{मं}ग़ूं^{मं}ग़ूंमं रेंसां, ^मग़ू^मग़ूमरेसा, प^मग़ूम नि़प, सांनि़ रेंसां, सां, ^पनि़प, मप^मग़ू^मग़ूमरेसा

तान

६ ग़ग़ूममरेसानिं़सा, साग़ूमपनि़पमपग़ूमरेसा, साग़ूमपनि़पमपनि़सां नि़पमपग़ूमरेसा, साग़ूमपनि़पमपनि़सां रें रेंनिसांपनि़पमग़ूमरेसा, साग़ूमपनि़पमपनि़सां रें रेंनि़सांगंमं रेंसांनि़सांनि़पमपग़ूमरेसा

७ ग़ूमम–ग़ूमम–रेसा–पनि़नि़–पनि़नि़–पम–सां रें रें–सां रें रें–सांनि़–ग़ूंमंमं–ग़ूंमंमं–रेंसां–पांनि़नि़–पनि़नि़–पम–ग़ूमम–ग़ूमम–रेसानिं़सा

८ सामग़ूपमानि़पसांनि़ रेंसांमंग़ूंमंसां रेंनि़सांपनि़मपग़ूमरेसानिं़सा

९ ग़ूमग़ूमरेसा–पनि़पनि़पम–सां रेंसां रेंसांनि़–ग़ूंमंग़ूंमं रेंसां-सां रें सां रेंसांनि़–पनि़पनि़पम–गमग़ूमरेसा

१० ममममरेसानिं़सा–नि़नि़नि़नि़पनि़पम–रें रें रें रेंसां रेंसांनि़-मंमं-मंमं रेंमं रेंसां–रें रें रें रेंसां रेंसांनि़–सांसांसांसांपनि़पम– पप पपमपमग़ू–ममम-रेमरेसा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ६९ राग—सुहा, लक्षणगीत; झपताल

करणाट सारंग अंग संगम करत। मेल ग-नि मृदु सुमत, सुहा सुहावे ॥ ध्रु० ॥ म-स वाद संवाद। मुक्त मध्यम न्यास। हीन धैवत मधुर। रूप षाडव लसत ॥ १ ॥ आरोह अवरोह। प्रस्तार मध-तार। नि-प संगत निवास नि-सा-ग-म-प-प-नी-मप-सा-नी-मप-ग-म-रे-सा ॥ २ ॥

—स्व. पं. खरेकृत

रे॒नि सा मग॒ म प मग॒ म रे ऽ सा	रे॒नि ऽ सा मग॒ मग॒ म प नी म प
क र णा . ट सा . रं ग	अं ग सं . ग म क र त
१ ३ + ८	१ ३ + ८

सां ऽ नि रें सां रेंनी सां निप नि प	सां ऽ नि प नि निम प मग॒
मे ल ग नी मृ दु सु म त	सु हा . . सु . हा
१ ३ + ८	१ ३ +

म सारे सा ऽ
. . वे
८

॥ अंतरा ॥

म प नि प ऽ नि सां ऽ रेंनि सां सां	रेंनि ऽ सां मं रें रेंनि सां निप
म स वा . द सं वा . द	मु क्त म . ध्य म ल
१ ३ + ८	१ ३ + ८

नि प	प मंग॒ मंग॒ मं रें सां रेंनि सां निप नि प	सां ऽ निप निम प
स त	ही . न . धै . व त म धु र	रू प षा .
	१ ३ + ८	१ ३

मग॒ म मरे मरे सा
ड व ल स त
+ ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ दुसरा अंतरा ॥

नि॒म ऽ प सां सां सांप सांनी सां ऽ सां | रेंनि॒ सां मग॒ मं रें सां नि॒
आ रो . ह अ व रो ह | प्र . स्ता . र म .
१ ३ + ८ १ ३ +

सां नि॒प नि॒ प | नि॒ प मग॒ म प मग॒ म रे ऽ सा | निं सा मग॒ मग॒ म
ध ता . र | नि प सं . ग त नि वा स | नि सा ग ग म
८ १ ३ + ८ १ ३

प प नि॒ म प | सां ऽ नि॒ म प मग॒ म रे ऽ सा |
प प नि म प | सा नि म प ग म रे सा |
+ ८ १ ३ + ८

क्र. ७० राग–सुहा, ख्याल; एकताल

झनक झनक पायल मोरी बाजे । कैसे घर जाऊं दुरजन लोगवा जागे ॥ ध्रु० ॥ ऐसे घर दे मोरी मित पियरवा हुतो झनक झनक झननन । बाजे ॥ १ ॥

सा नि॒ प नि॒ नि॒ प म प म रे सा रे | मग॒ मग॒ म म प मग॒ मग॒
झ न क झ . न . क . पा . य | ल . मो री . बा .
११ १ ५

म रे सा निंसा रेंनिं सा मग॒ म | प नि॒ प नि॒म प सांनि॒ सां नि॒सां नि॒
. . जे . कै से घ र | जा . ऊं दु र ज न . लो
+ ९ ११ १ ५

सां रें मं ऽ रें सां रें नि॒ सां ऽ नि॒ प नि॒ नि॒ प म रे सा निं सा
. . . ग वा . . . जा . गे . . . .
+ ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा नि़ प नि़ नि़ प म प म रे सा रे | मग़ु मग़ु म म प मग़ु मग़ु म रे सा
झ न क झ . न . क . पा . य | ल . मो री . बा . . . जे
११ | १ ५ +

॥ अंतरा ॥

म प नि़प नि़ सां नि़सां सां | सां ऽ ऽ नि़ सां रें रें सां सां रेंनि़ सां
ऐ से घ र दे . मो | री मि . . त . पि थ र
९ ११ | १ ५ +

नि़प नि़ प ऽ | नि़म प सांनि़ सां रें मग़ु मं रें सां म नि़ प म
वा . . | हु तो झ न क झ . न क झ न न न
९ ११ | १ ५ +

म प म ग़ु म ऽ
बा जे . . .
९

क्र० ७१ राग–सुहा, ख्याल; ताल झुमरा

कौन देसवा मैया अब जैये नहिं घरवा नहि कोउ दुवरवा ॥ ध्रु० ॥ इत तुम मोरी सुध ना संभारी; कौन कान परिहै मोरी पुकरवा ॥ १ ॥

–पं. बुद्धदेवकृत

नि़ प नि़म प | सां नि़प नि़ प नि़ नि़ प म प ऽ मग़ु म म नि़प
कौ . न . | दे . स वा मै . . . . या . अ ब
| १ ४

सां मग़ु मग़ु म सारे सा ऽ रेनिं सा | मग़ु मग़ु म म प नि नि़ प म प
जै . . . . ये न हिं | घ र . वा . . . . . .
+ ११ | १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ मग़ म नि़ प प नि़ सां रें ऽ सां ’ सां सां सां ऽ रें नि़सां नि़प
. . . न हिं को . . . उ दु व र . वा .
४ + ११

नि़ प नि़ प नि़ म प | सां नि़प नि़ प नि़ नि़ प म प ऽ ऽमग़ मग़ म ऽ ऽ
. . कौं . . न . | दें . स वा मै . . . . या . .
१ ४ +

|| अंतरा ||

म म नि़ प सांनि़ सां ऽ नि़सां | सां ऽ सां नि़ सांरें ऽ सां ऽ सां ऽ रें
इ त तु म मो . . | री सु ध ना . सं .
११ १ ४ +

नि़सां ऽ नि़प नि़ प ऽ नि़म प सांनि़ सां | मग़ म रेंसां रें सां रें रें
भा . . री कौं . न . | का . न प रि है .
११ १ ४

सां नि़ प नि़ सां रें नि़सां ’ नि़प नि़ प ऽ नि़ नि़ प म प नि़ सां रें
. . . . मो . री पु . क . र . . .
+

सां नि़ सां नि़ प नि़ प म प म ग़ म रे सा रे सा निंसा नि़ प नि़म प |
वा . . . . कौं . न . |
११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ७२ राग—सुहा, झपताल

दरस देखत गुन पावत सन के ग्यान। खलक मुल्लुख और तेरे पाग परसे ॥ध्रु०॥ सानि सारे भूधर पीर बकत है महमद मरू को नित नूर बरसे ॥१॥

रेनिं सा मग् मग् म प नी नी प म ग् रे सा | मग् मग् मग् म रे सा
द र स . दे ख त . गु . . . न | पा व त . म न
१ ३ + ८ १ ३

रे ऽ सा ऽ सा | रेनिं सा मग् मग् म प प नि प नी प | प नि सां रें
के ग्या न | ख ल क . मुल्लख औ . र ते | रे . . .
+ ८ १ ३ + ८ १

ऽ रें सां रें रेंनि सां निप सांनि सां | नि प मग् मग् म प नी नी
पा . ग प र से . . | द र स . दे ख त .
३ + ८ १ ३ +

प म ग् रे सा |
गु . . . न |
८

॥ अंतरा ॥

निम प सां ऽ नि सां ऽ सां ऽ सां | नि सां रें मं रें सां रें रेंनि सां
सा नि सा रे भू ध र | पी . . . र . ब क त
१ ३ + ८ १ ३ +

नि प नी प | म म निप मग् मग् म प नि प सांनि सां | प नि सां रें
है . . . | म ह म द . म रू . . को . | नि त . .
८ १ ३ + ८ १

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें सां रें रेंनि सां नि॒प सांनि सां | नि प मग॒ मग॒ म प नी नी

नू . र व र से . . | द र स . दे ख त .

३ + ८ | १ २ +

प म ग॒ रे सा |

गु . . . न |

८

क्र. ७३ राग–सुहा, झपताल

हस दलन दुब दलन हस गजधरे रे ॥ ध्रु० ॥ कोप जब चढे श्याम येती पलक मे नरमा करे आ करमा करे ॥ १ ॥

मग॒ मग॒ मग॒ मग॒ मग॒ म मरे रे रे रे सा | रेंनि सा रे रेंनि सा मरे प

ह स द ल न . दु ब द ल न | ह स ग ज ध रे .

१ २ + ८ | १ २ +

म प नि प मग॒ रे सारे |

. . . . रे . . |

८

॥ अंतरा ॥

म ऽ म नि प नि सां सां ऽ रेंनि सां सां | रेंनि सां सां ऽ सां सां नि

को प ज . ब च ढे श्या . म | ये . ती . प ल क

१ २ + ८ | १ २ +

सां रें सां नि॒प नी प | नि म प ऽ मग॒ म म प नि प सांनि सां ऽ |

. . . मे . . | न . . मां . क रे . . आ . |

८ १ २ + ८

नि म प ऽ मग॒ म म पम प नि निम प मग॒ रे सारे |

क . . मां . क रे . . . . |

१ २ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ७४ राग—सुहा, झपताल

अह्मन बर पूरे कुछ कुछ कहते केते नर करे रे ॥ ध्रु० ॥ कोप कर बरत है आतत परबी केते नर करे केते नर न करे रे ॥ १ ॥

मग़ु मग़ु म रे रे रे सा ऽ सा ऽ | रेनिं सा मरे म रे सा निं सा रे सा
अ . ह्म न व र पू रे | कु छ कु . छ क ह . . .
१ ३ + ८ १ ३ +

निंपं निं पं | सा सां ऽ नि प म नि म प मग़ु म रे सा निं सा |
ते . . | के ते न र . क . . रे . रे . . . |
८ . १ ३ + ८

॥ अंतरा ॥

म ऽ म नि प नि सां सां सां रेंनि सां | सांनि सां सां सां सां रें रें
को प क . र ब र त है . | आ त त प र बी .
१ ३ + ८ १ ३ +

सां सां नि नि प म प | म निप सां नि प नि म प मग़ु म सा मरे |
. . . . | के ते . न र क . . रे . के ते |
८ १ ३ + ८

प प नि प सांनि सां नि प नि म प मग़ु म रे सा निं सा |
. न र . . . न . क . . रे . रे . . . |
१ ३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ७५ राग–सुहा, तीनताल (मध्यलय)

अलबेली निराली शोभा। आली! वाकी बरनि न जाई ॥ ध्रु० ॥ बांकी झाकी मनमोहन की, निरख निरख अंखियां नाहीं अघाई ॥ १ ॥

–पं. विनयचंद्रकृत

गु म प म रे सा निं सा | मगु ’ म प नि म प मगु म रे सा
अ . ल . बे . . . | ली नि रा . . . ली . शो भा
७ १ २ +

’ मगु ऽ म | नि प नि सां सां रें सां नि प नि प म रे म रे सा
आ ली | वा की ब र नि . न . जा . . . ई . . .
७ १ २ +

गु म प म रे सा निं सा | मगु ’ म प नि म प मगु म
अ . ल . बे . . . | ली नि रा . . . ली .
७ १ २

॥ अंतरा ॥

’ म ऽ म प नि प | नि सां सां रें सां नि प नि सां मगुं मं रें सां
बां कि झां की . | म न मो . . . ह न की नि र ख नि
+ ७ १ २ +

नि सां सां रें सां नि | प सां ’ नि ऽ प ’ नि प मगु म रे सा निं
र ख अं . खि . | यां . ना हीं अ . घा . ई . .
७ १ २ +

सा गु म प म रे सा निं सा |
. अ . ल . बे . . . | ली
७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—सुघराई

इस राग में गांधार और निषाद कोमल तथा और सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी—पंचम. संवादी—षड्ज. समय—दिन का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—सा नि॒ ध, नि॒ नि॒ प म रे सा रे [म]ग॒

आरोह—सा रे [म]ग॒ म प नि॒ प सां

अवरोह—सां नि॒ ध नि॒ प म प [म]ग॒ म रे सा

विशेष—यह राग कानडा अंग का एक प्रकार है। 'नि॒ प' यह संयोग इस राग में बहुत बार-बार लिया जाता है जो कि कानडा अंग के सभी रागों में आना आवश्यक ही है। सुहा से सुघराई में मुख्य अन्तर यह है कि सुहा में धैवत सर्वथा वर्जित है और सुघराई में अवरोह में शुद्ध धैवत का प्रयोग किया जाता है। तथापि अवरोह में भी धैवत दुर्बल ही रहता है, क्योंकि इसके अधिक उपयोग से रात में गाये जानेवाले शहाना राग की छाया बहुत आती है। इसीलिये शहाना से बचाने के लिये अवरोह में भी धैवत स्वर दुर्बल रहता है।

आलाप

१ सानि॒रेसा, [रे]नि॒, सारे[म]ग॒, मरेसा, मप[म]ग॒[म]ग॒धप[म]ग॒[म]ग॒मरेसा

२ सारे[म]ग॒[म]ग॒मरेसा, पमप[म]ग॒[म]रे[सा]रे[म]ग॒, [प]म[प]मप, नि॒प, ध[प]मप [म]ग॒[म]ग॒मरेसा

३ [रे]नि॒सारे[म]ग॒[म]ग॒मरेसा, नि॒प, ध[प]मप, [म]ग॒[म]ग॒, रे म प ध[म]ग॒[म]ग॒मरेसा

४ सानि॒धनि॒प, नि॒ प म पसां, [नि॒]सां, प नि॒ सां रेंसां, सां रें[मं]गं॒ [मं]गं॒मं रेंसां, रें सां नि॒सां, [प]नि॒प, नि॒ नि॒ प म प ध[म]ग॒[म]ग॒सारे [म]ग॒[म]ग॒मप[म]ग॒मरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ रे^सा^ निं्सारे^म^ग्^म^ग्, ^सा^ नि्प, ध प मग्, रे^सा^ रे^म^ग्म प नि् पसां, ^नि^सां, प नि् सां रें, सां, रें नि्सां^प^नि्प, ^म^ग्ं^म^ग्ंमं रेंसां, रें सां नि् सां रेंसां^प^नि्प, नि्पमपध^म^ग्^म^गमरेसा

तान

६ रेरेसानिंसारेगमरेसानिं्सा, सारेमपनिनि्पमपधग्मरेसानिं्सा, सारेमपनि्सां रें रेंसांनि्पनि्पमपधग्मरेसानिं्सा, सारेमपनि्सां रेंमं रेंसांनि्सांपनि्पमपधग्मरेसानिं्सा

७ रेरेसारेग्मरेसानिं्सा, निनि्पमपधग्मरेसानिं्सा रें रेंसांनि्प नि्पमपधग्मरेसानिं्सा, मंग्ंमंमं रेंसांनि्सां रें रेंसांनि्पनि्पमप धग्मरेसानिं्सा

८ सारेरे–रेमम–मपप–पनि्नि्–पधध–मपप– पनि्नि्– नि्सांसां–सां रें रें–रेंग्ंग्ं–ग्ंमंमं–सां रें रें–नि्सांसां–पनि्नि्-पधध-मपप-ग्मम–सारेरे–निं्सासा

९ रेसा–मरे–पम–नि्प–सानि्– रेंसां–मंग्ं–मंसां– रेंनि्-सांध-नि्प-धम–पग्–मरेसा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

क्र. ७६ राग–सुघराई, लक्षणगीत; झपताल

सोहे सुघराई; गुनी जन-मन भाई। अंग दरबारी युत; कोमल ग-नि कराई ॥ ध्रु० ॥ स-प मधुर संवदत, चढत धैवत-हीन दिवस दूजो पहर, गात हिय हुलसाई ॥ १ ॥

—पं. विनयचंद्रकृत

सा	नि्	प	ऽ	ध	ध	^नि^म	प	^म^ग्	म	^सा^रे	सा	^रे^निं्	सा	^म^ग्	म	रे	सा
सो	.	हे		सु	.	घ	.	रा	.	ई	.	गु	नि	ज	.	न	म
१		३				+				८		१		३			+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे नि़ सा निप़ नि़ प़ | रेनि़ सा रे मग़ म नि़ प नि़ म प मग़ म रे सा |
न . . भा . ई | अं . ग द र . बा . . . री . यु त |
८ १ ३ + ८

प सां नि़ प ध म म प नि़ प मग़ ग़ म प म रे सा नि़ सा |
को . म ल ग नि क . . . रा ई . . . . |
१ ३ + ८

॥ अंतरा ॥

म म प नि़ प नि़ निसां ऽ नि़ सां सां | सांनि़ सां सां मग़ मं रें सां
स प म धु . र सं व द त | च ढ त धै . व त
१ ३ + ८ १ ३ +

नि़ प नि़ प | प रें रें सां ऽ रेंनि़ सां नि़ प नि़ प | म नि़ प ध म
ही . . न | दि व स दू जो . प . ह र | गा . त हि य
८ १ ३ + ८ १ ३

प सां नि़ नि़ प म प म रे म रे सा नि़ सा |
हु ल सा . . . . . ई . . . . . |
+ ८

क्र. ७७ राग-सुघराई, तीनताल (मध्यलय)

वलमारे चुनरिया मैंका लाल रंगा दे। जैसी तोरी पगियां वैसी मोरी रे चुनरिया मैं के लाल रंगादे ॥ ध्रु० ॥ रंग रंगीली और चटकीली माईं मोर मंगादे चुनरि मैंका लाल रंगा दे ॥ १ ॥

सा नी प ध ध प म प म रे सा रे | मग़ ऽ मग़ म रे सा रे ऽ
व ल्मा रे चु . न रि या . मैं . का | ला . . ल रं गा
१ ३ + ७ १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा ऽ | ऽ ,रेनि सा मरे म म प प प प प | म प नी नी प म नी
— — | — ० ० ० ० ० ० ० ० — — — | ० ० ० ० ० ० ०
दे | जै सी तो . रि प गि या वै सी | मो . री . रे . चु
७ १ ३ + ७ १ ३

नी प म प म रे सा रे |
० ० ० ० ० ० ० — |
. न रि या . मै . कै |
+ ७

।। अंतरा ।।

म म म प नि प नि नि सां सां सां सां सां सां | मं मं रें सां नि
— ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ०
रं ग रं गी ली . औ र च ट की ली मा ई | भो . र मं गा
१ ३ + ७ १ ३

सां सां नि प म प म रे सा रे | मगु ऽ मगु म रे सा रे ऽ सा ऽ |
० ० ० ० ० ० ० ० ० — | — — ० ० ० ० — — — — |
. दे . चू . न रि मै . का | ला . . ल रं गा दे |
+ ७ १ ३ + ७

क्र. ७८ राग–सुघराई, तराना; तीनताल (मध्यलय)

दीम् तना देरे दानी तन देरेना तदियनारे तान देरेना तान तोम् तदेनोम् देरेना ॥ ध्रु० ॥ यललि यली याल लाले यललि यली याल लाले याल लाले याल लाले यलल मयल यला दींतना देरे दानी तन देरेना तदियनारे तान देरेना तान तोम् तदेनोम् देरेना ॥ १ ॥

सा नी ऽ प प ध ध धम प मगु मगु | मगु म प मगु मगु मगु , रे सा
० ० ० ० — ० ० — — — — | — ० ० — — — ० ० ०
दी . त ना दे रे दा नी त न | दे रे . ना . . त दि
१ ३ + ७ १ ३ + ७

रे म | मसा ऽ रे ऽ सा ऽ , रेनि ऽ सा | मगु मगु म मसा रे ऽ सा
० — | — — — — — — ० ० ० ० | — ० ० — — — —
य ना | . . रे ता न | दे रे . ना ता न
१ ३ + ७ १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे नि सा | रेनि सा नि पं ऽ निमं पं सा ऽ |
o o – | – – o o – – – – – |
तों . . | त दे नों . दे रे ना |
७ १ ३ + ७

॥ अंतरा ॥

' म म म प नि प सांनि सां ऽ नि सां सां | ' नि नि नि सां मंगं
o o o o – o o o o o o – – | o o o o – –
य ल लि य लि . या . ल ला ले | य ल लि य ली
१ ३ + ७ १ ३

मंगं मं सां सां सां नि रें सां | सां नि सां नि प नि प प म प म
o o o o o o o o | o o o o – o o o o o o
या . . ल ला . ले . | या . . ल ला ले . या . . ल
+ ७ १ ३ +

म म | गु म प रे रे सा ' सा सा रें | रें ऽ सां सां रें रें रेंनि सां
– – | – – – – – – o o o o | – o o – o o – –
ला ले | य ल ल म थ ल य ला . | दीं त ना दे रे दा नी
७ १ ३ + ७ १ ३ +

मगु मगु | मगु म प मगु मगु मगु ' रे सा रे म |
– – | – o o – – – o o o o – |
त न | दे रे . ना . . त दि य ना |
७ १ ३ + ७

(आगे पूर्ण अस्थाई गाकर अंतरा पूरा करना)

क्र. ७२ राग–सुघराई, द्रुतएकताल

अब कछु कह बैठोंगी प्यारे तब अपना सा मुख लेले पावोंगी ॥ स्था० ॥

गिनत सदारंग रंगीले बतीया करत मैंसन गुमानी किये मा पावोंगी ॥ १ ॥

रे सा नि सा | रे सा रे प प मगु म रे ऽ सा | नीं नीं पं मं पं नीं पं
o o o o | – o o o o – o o o o | o o o o – o o
अ ब क छु | कै बै . ठों . गी . प्या रे | त ब अ प ना सा .
५ ६ १ ३ + ५ ६ १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि़ नि़ सा | सा रे सा रे ^म^ग़ म रे सा नि़ सा |
सु ख ले | ले पा वों . गी . अ व क छु |
५ ६ १ ३ + ५ ६

॥ अंतरा ॥

म म म म नी प नि़ सां नि़ सां ऽ सां | रें नि़ ऽ सां ऽ रें नि़ सां
गि न त स दा . रंग़ . रं गी ले | ब ति यां क र त
१ ३ + ५ ६ १ ३ +

नि़ प प | नि़ म प नि़ सां रें सां नि़ सां रें नि़ | सां रें नी ध ^प^ध
मैं स न | गु मा . नि . कि ये मा . . . | . . पा वों .
५ ६ १ . ३ + ५ ६ १ ३

^सां^नी ध प म प | ^म^ग़ रे ^सा^रे प ^म^ग़ म रे ऽ सा |
गी अ व क छु | कै वै . ठों गी . प्या रे |
+ ५ ६ १ ३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहा—सुघराई

इस राग में गांधार और निषाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। सुहा और सुघराई इन दोनों रागों के मेल से यह राग बनता है। सुघराई में शुद्ध धैवत का अल्प प्रयोग होता है किन्तु इस राग में सुहा की तरह से ही धैवत सर्वथा वर्जित है। सुहा से इस में बडा अंतर यह है कि सुहा आरोह में ऋषभ दुर्बल रहता है और सुहा-सुघराई में "सा रे ग् म प" इस प्रकार ऋषभ का उपयोग किया जाता है। पूर्वांग में सुहा और उत्तरांग में सारंग के अंग से भी यह राग गाया जा सकता है ऐसा कई पुरानी चीजों के देखने से पता लगता है। ऊपर दिये गये विवरण के अनुसार थोडे से परिवर्तन से सुघराई और सुहा इन्हीं दोनों रागों के आलाप-तान सुहा-सुघराई में लिये जा सकते हैं। इसीलिये इस राग के आलाप-तान अलग नहीं दिये गये हैं। इस राग के वादी-संवादी मध्यम-षड्ज अथवा षड्ज-मध्यम तथा कोई-कोई षड्ज-पंचम भी मानते हैं।

क्र. ८० राग—सुहा-सुघराई, ख्याल; आडा चौताल (मध्यलय)

हुकुम की बांधी साईं के आगे ठाडी कर जोर ॥ ध्रु० ॥ महमदसा जोई फरमावे सोई बतावेहूं नेक ना मोरी खबर ॥ १ ॥

रे नि् सा मरे म नि् प नि् म प मग् मग् म रे रे ऽ सा ऽ | रे नि् सा
हु क म की . . . . बां . धी | सा ईं
१ ३ ७ + ११ | १

सा म म नि प नि् सां सां म प नि् नि् प म रे सा रे नि् सा | रे नि् सा
के आ गे ठा . . डी क . र . जो . . . र . | हु क
३ ७ + ११ | १

मरे म नि् प नि् म प मग् मग् म
म की . . . .
३ ७ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म म प सां ऽ नि॒सां | सां सां ऽ निं॒ रें सां रें रें सां नि॒ सां सां
महम द सा . | जो इं . . फ र . . . . मा
११ १ ३

नि॒ प नि॒ प प प ऽ म नि॒ प नि॒ नि॒ प म प प ^म^रे म | ^म^रे म प
वे . . . सो इं . . ब जा . . . . ले हूं . | ने . क
७ + ११ १ ३

नि॒ प नि॒ म प सां ऽ नि॒सां म प नि॒ नि॒ प म रे सा ^रे^निं॒ सा |
मा . . . . . . मो . री . ख . ब . र . |
७ + ११

क्र. ८१ राग–सुहा-सुघराइ, तीनताल (मध्यलय)

अतक बुजकवा परिलो मैके काल ननदिया गली मैके ॥ ध्रु० ॥ पास कैसे अब तोरे मितवा; सोय गये सब घर के लुगवा। अबहि सुनत जागिली मैके ॥ १ ॥

सा ^म^रे ऽ म प प प म | नी प ^म^ग॒ म रे ऽ सा सा म रे म प प
अ तक् बु ज कवा . | प रि लो . मैं के का . ल न न दि
+ ७ १ ३ + ७

प म | नी प म प ^म^रे सा
या . | . ग . लीं मै के
१ ३

॥ अंतरा ॥

म म नी प नी प नी | सां सां नी प नी सां प नी प नी सां सां सां |
पास कैं . से अ ब | तो रे . मि त वा सो . य ग ये स ब |
+ ७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नी सां रें सां नी सां नि प सां म रें म रें सां सां | ऽ नि सां रें
घ र के . लु ग वा अ ब ही सु न त जा | . .
१ ३ + ७ १

सां नि प म रे ऽ सा
गि . ली . मै के
३

क्र. ८२ राग–सुहा-सुघराई, तीनताल (मध्यलय)

माइ कंथू मोरा बा देसू आवन कहीला अजहूं नही आये ॥ १ ॥ उडजा रे कागा कहरे संदेसवा। उन बिन जीया मोरा रहत अंदेस कंथू मोरा ॥१॥

’नी ऽ प | नी प सां ऽ ऽ नी नी प म रे म प नी प म रे सा
मा ई | कं . . थू . . . . मो . . .
७ १ ३ + ७

नीं सा | मग मग म प नी म प ’ म म प | सांनि सां सां सां नी सां
. रा | बा . दे . सू . . आ व न | क हि ला अ ज हूं
१ ३ + ७ १ ३ +

रें सां नी प | नी प सां ऽ ऽ नी नी प म रे म प नी प म रे सा
न हि आ ये | कं . . थू . . . . मो . . .
७ १ ३ + ७

निं सा | मग मग म प
. रा | बा . दे .
१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म म म प प | नी नी प म प ऽ ऽ ^मग म ' म प ^नीप ऽ नी |
o o – – – | o ‿ ‿ ‿ ‿ o – – – o o o o o o |
उ ड जा रे का | गा . . . . . . क ह रे सं |
\+ ७ १ ३ + ७

सां ऽ नी रें सां ऽ म प नी सां | नि सां रें रें सां नी सां सां नी
– – – – – – o o o o | ‿ ‿ o o o o o o o
दे . स वा उ न बि न | जी . . या . मो . रा .
१ ३ + ७ १ ३

नी प नी प ^निम ऽ प |
o o o o – o o
र हत् . अं दे स |
\+ ७

क्र. ८३ राग–सुहा-सुघराई, तीनताल (मध्यलय)

कानन सुनाइये बात मोरे जियाई ॥ ध्रु० ॥ सुधे गूंदे लाई आई कहाते बात गई मोरी बाकी ॥ १ ॥

सां नी सां रें सां नी प म रे सा | रे ^मग ऽ म प ऽ ^मग ^मग म ^सारे |
o o o o o o o o o o | o o – o o – – – – – |
का . . . न . न . सु . | ना . इ . ये वा . . |
\+ ७ १ ३ + ७

सा ' ^रेनीं सा ^मरे म म प ऽ नि नि प म | प नी प म प सां नी
– o o o o o o – – o o o o | o o o o – o o
तं मो . रे . जि था ई . . . | . . . . . का .
१ ३ + ७ १ ३

सां रें सां नी प म रे सा | रे ^मग ऽ म प ऽ ^मग
o o o o o o o o | o o – o o – –
. . न . न . सु . | ना . इ . ये
\+ ७ १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

ʼनी म प सां | ऽ निं सां सां सां ʼनी सां रें मं रें सां मिंप नी
सु धे गूं दे | . ला ई आ . . . ई . क हा
७ १ ३ + ७

सां निंप | नी प ऽ म प नी सां मं गंमं म प नी नी | प म रे सा रेनिं सा
. ते | . . वा . त ग ई . मो . री . | या . की . . .
१ ३ + ७ १ ३

क्र. ८४ राग–सुहा-सुघराई, द्रुतएकताल

तू है मंमदसा दरबार निजामदीन सुजान ॥ ध्रु० ॥ धवल कलस पर वल-वल जैये; उनपर जैये कुरवान निजामदीन सुजान ॥ १ ॥

नी नी म प मग म रे रे सा रे निं | सा ऽ रे म म प प म नी प |
तू . है . मं . म द सा द र | बा र . नि जा म . . . |
१ ३ + ५ ६ १ ३ +५ ६

सां ऽ नी ऽ प म प म प नी प मग ऽ म |
दी न सु जा . . . . . न . |
१ ३ + ५ ६

|| अंतरा ||

म प ऽ नी प निं सां सां ऽ सां ऽ सां | नी सां ऽ रें ऽ सां रेंनिं सां
ध व ल . क ल स प . र | ब ल व ल जै .
१ ३ + ५ ६ १ ३ +

ऽ निंप नी प | म प नी सां मगं ऽ मं रें सां रें नी | सां ऽ नी ऽ प
ये . . | तु म प र जै . ये . कु र | बा न नि
५ ६ १ ३ + ५ ६ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प म नी प | सां ऽ नी ऽ प म प म प नी प ^म^गु ऽ म |
जाम . . . | दी न सु जा . . . . . न .
+ ५ ६ १ ३ + ५ ६

क्र. ८५ राग—सुहा-सुघराई, तीनताल (मध्यलय)

झनक् झनकवा मोरे बिछवा बाजैलो कैसे के आउं मितवा तोर् मंदरवा ॥ ध्रु० ॥ पगन धरत है जात दारे लोग कुटुमवा जागे सारे। तापर निकसी आईलो भरी चंदरवा ॥ १ ॥

रे नि ऽ सा सा सा रे ^सा^रे | ^म^गु ऽ ^म^गु म रे रे सा ^रे^नि ^रे^सा म ^रे^सा |
झ नक् झ न क वा . | मो . रे बि छ वा बा . . जै |
+ ७ १ ३ + ७

^नि^पं नि पं रे सा रे ^म^गु ऽ म प म प सां ऽ | ^म^गु ऽ म रे रे सा
लो . . कै से के आ ऊं मि त वा . | तोर् मं द र वा
१ ३ + ७ १ ३

रे नि ऽ सा सा सा रे ^सा^रे |
झ नक झ न क वा . |
+ ७

॥ अंतरा ॥

म म म म प प नि प 'नि सां नि सां सां | प नि प नि सां सां सां
प ग न ध र त है . जा . त दा रे | लो . ग कु टु म वा
१ ३ + ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

’ नि़ सां सां निप नि़ प | मग़ मग़ म रे रे सा सा रें S रें सां |
० ० ० ० ० ० — | — ० ० ० ० — ० ० — — — |
जा . गे सा . रे | ता प र नि क सी आ ईं लो . |
\+ ७ | १ ३ + ७

मग़ मग़ S म रे रे सा
० ० ० ० ० ० —
भ री चं द र वा
१ ३

राग—कौशी—भैरव

इस राग में दो ऋषभ, दो धैवत और दो निषाद तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी—मध्यम. संवादी—षड्ज. समय—दिन का पहला प्रहर.

आरोह—सा म, ग म प म, म निध़ु निध़ु नि सां

अवरोह—रें नि़ ध प म गम, ग म प रे़ सा, रे़ ध़ु सानि़ सा म

विशेष—यह राग कौशी और भैरव के मेलसे बनता है। इसके पूर्वांग में कौशी अथवा बागेश्री दिखलाई जाती है। जैसे—“ध़ नि़ सा म।” भैरव राग आरोह के समय उत्तरांग में, तथा अवरोह करते हुवे पूर्वांग में दिखाया जाता है। शुद्ध ऋषभ, शुद्ध धैवत और कोमल निषाद का प्रयोग अवरोह के समय ही करते हैं। जैसे—“ रें नि़ ध प, म, गम।” कौशी-भैरवसे भैरव-बहार राग बहुत मिलता-जुलता है। इसलिये गाते समय इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये कि कौशी-भैरव बिगडकर भैरव-बहार ही न हो जाये।

आलाप

१ सा रे़ निध़ु निध़ुसा, साम, गम, म गरे़ गरे़सा

२ साम, मपम, ग म निध़ु निध़ुप, पमपम, गम गरे़ गरे़सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३ सा रे ग मपम, म^नि^ध्^नि^ध्सां, सांनि्धपम^ग^म, रे ग मपमगम प म ग रे, ^ग^रे^ग^रेसा

४ साम, ग मपम, म^नि^ध्सां^नि^सां, रेंनि्धपम^ग^म, म^नि^ध्सां, नि्धप म^ग^म, ग म परे^ग^रे^ग^रेसा

५ म, पम, धपम, नि्धपम^ग^म, म ^नि^ध् ^नि^ध्सांनि् रेंसां, सां रें गंमं, ^मं^रेंसां, रेंनि्धपम^ग^म, म ध् निसांनि्धपम^ग^म, ग मपम, ^ग^म रे, रे ग म प ग म परे^ग^रेसा रे ^रे^ध्, ^सा^नि्साम^ग^म रेसा

तान

६ सारेगमपपमगपमगरेनिंसा, सारेगमपपगमपध्निसांनि्धपमगम पमगरेनिंसा, सारेगमपपगमपध्निसां रें रेंनिसां, सां रेंगंमंगं रें निसां रें रेंसांनि्धपमगपमगरेनिंसा

७ रेरेनिंसापमगरेनिंसा, ध्ध्पमगपमगरेसानिंसा, सांनि्धपमग, रेंसांनि्ध–सांनि्धपमगमपमगरेसानिंसा, पपगम–नि्धपमगम–सांनि्धप–रेंसांनिसांगंमंगं रेंनिसां रें रेंनि्धपमगमपमगरेनिंसा

८ सारेगमपमगम–पध्निसां रेंसांनिसां–सा रेंगंमंगं रेंनिसां– रें रें नि्धपमगम–ध्निसांनिध्पमग–मपमगरेसानिंसा

९ गमप–गमप–गम–ध्निसां–ध्निसां–ध्नि–रेंगंमं–रेंगंमं– गं रें–निसां रें–निसां रें–नि्ध–गमप– गमप–गम– रेगम–रेगम–रेसा

१० पप–मपप–मपप–गम–निनि–ध्निनि ध्निनि-ध्पर रें-सां रें रें-सां रें रें–निसां–गंगं–रेंगंगं–रेंगंगं–रेंसां– रें रें– सां रें रें– नि् सांसां-नि्ध–धध–पधध–पधध–पम–पप–मपप– मपप– मग–मम–गमम–गमम–ग रे–गग–रेगग–रेगग–रेसा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ८६ राग–कौंशी-भैरव, लक्षणगीत; तीनताल (मध्यलय)

राग कौंशी भैरव गात। उभय रि-ध-नि अरु आन विमल सुर; गान समै जेहि सोहत प्रात ॥ ध्रु० ॥ भैरव कौंशी संग मिलावत; उतरत रि-ध सुध कोमल निषाद। मध्यम प्रथम करत सुमधुर संवाद ॥ १ ॥

–पं. विनयचंद्रकृत

’सा ऽ रे॒ [रे]ध॒ [सा]नी॒ | सा म ऽ [ग]रे॒ ग प म [ग]रे॒ सा सा निं सा
रा ग कौं . | शी . भै . र व गा . त उ भ
७ १ २ + ७

सा म | म प ग म ग म [नि]ध॒ प प ग म प म [ग]रे॒ सा सा म म प |
य रि | ध नि अ रु आ . . न वि म . ल . सु र गा . न स |
१ २ + ७

म [ग]म [नि]ध॒ नि ध॒ नि सां नि ध प ग म प रे॒ सा सा ऽ रे॒ [रे]ध॒ [सा]नि॒ |
मै . जे हि सो . . . ह त प्रा . . . त रा ग कौं . |
१ २ + ७

सा म ऽ [ग]रे॒ ग प म
शी . भै . र व
१ २

॥ अंतरा ॥

म म म [नि]ध॒ नि सां | रें नि॒ ध प म ग म प म ग म [नि]ध॒ नी
भै र व कौ शी . | सं . ग मि ला . . व त उ त र त
+ ७ १ २ +

सां सां सां रें॒ गं मं | रें॒ सां रें नि॒ ध प म म म [नि]ध॒ नी सां रें
रि ध को . . . | म ल नि षा . द म ध्य म प्र थ म क
७ १ २ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि़ ध | प म ग म ग म प ^ग^म ^ग^रे़ सा सा ऽ रे़ ^रे^धं़ ^सा^नीं |
. र त | सु म धु र सं . . वा . द रा ग कौं . | शी
१ ३ + ७

क्र. ८७ राग–कौंशी-भैरव, ख्याल; एकताल

भावरबा ये रस ढिंग तेनो कर तान टारे ॥ धृ० ॥ पग डगमगात जो हलमिलात चाले ॥ १ ॥

’सा रे़ ^रे^धं़ ऽ ^सा^तिं | सा म ’^प^ग म म ^नि^ध़ प म ^ग^म ^ग^रे़ ऽ सा
भा . व र | बा . थे . र स ढिंग . ते नो
११ १ ५ + ९ ११

ऽ ^निं^सा | सा रे़ निं सा ऽ ^निं^धं़ ^सा^निं ^रे^सा म ग ^म^रे़ ऽ सा रे़ ^निं^सा
. | क . र . ता न टा . . . रे . .
१ ५ + ९

॥ अंतरा ॥

ग म ^नि^धु नि सां सां ऽ | रें नि़ ध प म ^ग^म म म ऽ ^निं^धु नि सां सां
प ग ड ग म गा | . . . . . . त जो : ह ल मि ला
११ १

ऽ रें नि़ ध प म ^ग^म प म ^म^ग ^ग^रे़ सा रे़ ^निं^सा निं सा रे़ धं़ ऽ निं़ |
. . . . . . त चा . . ले . . . भा . व र |
५ + ९ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ८८ राग–कौशी-भैरव, तीनताल (मध्यलय)

हरी की गति नहिं कोऊ जाने। योगी यती तपी पच हारे अरु बहु लोग सयाने ॥ धृ० ॥ छिन में राव रंक को करहीं राव रंक कर डारे ॥ १ ॥

सा रे धुं निं सा | म म म म ग रे ग म प म ^ग^रे सा सा म |
ह रि की . . | ग ति न हि को . ऊ . . . जा ने यो गी |
७ १ . ३ + ७

प म ’ प म ^ग^रे ग म प म ^ग^रे सा ग म ^नि^धु नी सां सां रें निं धु
य ती त . पी प . च . हा रे अ रु ब हु लो ग स या .
१ ३ + ७ १ ३

प म ग म प रे ऽ सा सा रे धुं निं सा |
ने . . . . . . ह रि की . . |
+ ७

॥ अंतरा ॥

ग म ^नि^धु नि सां सां रें निं ध प ^ग^म ^नि^धु नी सां | सां रें गं मं ^ग^रें
छिन में . रा व रं . क को . क र ही | रा . . . व
१ ३ + ७ १

सां रें निं ध प ग म प रे ऽ सा सा रे धुं निं सा |
रं . क क र डा . . . रे ह रि की . . |
३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—बिलासखानी तोडी

इस राग में ऋषभ, गान्धार, धैवत और निषाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में मध्यम और निषाद वर्जित हैं।

जाति—औडव-सम्पूर्ण.

वादी—धैवत. संवादी—गांधार. समय—दिन का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—प, ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा

आरोह—सा रे॒ ग॒ प ध॒ सां

अवरोह—सां नि॒ ध॒ म ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा

विशेष—यह राग सुप्रसिद्ध गायक तानसेन के पुत्र विलासखां ने बनाया ऐसा माना जाता है। इसीलिये इसका नाम बिलासखानी तोडी हुवा। इस राग के गायन में विशेषता यही है कि सभी स्वर भैरवी के हैं और स्वरूप तोडी का दिखाना है। वादी और संवादी (धैवत-गान्धार) को बार-बार और अलग-अलग ढंग से दिखलाया जाता है। आरोह में मध्यम और निषाद वर्जित हैं। इन स्वरों को लेने से राग का स्वरूप बिगड कर भैरवी का स्वरूप हो जायेगा। अवरोह में पंचम दुर्बल रहता है। क्योंकि सीधा अवरोह करने से भी विलासखानी तोडी बिगडकर भैरवी हो जायगी। इसलिये पंचम का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है—'सां नि॒ ध॒, प, ध॒ नि॒ ध॒ म ग रे॒ ग॒ रे॒ सा।' अवरोह में पंचम बिलकुल न लेकर भी यह राग गाया जाता है। और ऐसा करने से राग का स्वरूप कठिन होते हुवे भी गाने में सुगम और सुनने में मधुर लगता है। इस राग में ऋषभ पर अधिक ठहरने से कोमल ऋषभ की आसावरी का भास होता है।

आलाप

१ सारे॒[सा]नि॒[सा]नि॒सा, सारे॒[ग]रे॒ग॒, ग॒रे॒नि॒ध॒, [नि॒]ध॒सा

२ सारे॒ग॒, [म]ग॒[म]ग॒म, [प]मग॒, [ग॒]रे॒[ग॒]रे॒गरे॒नि॒ध॒, [नि॒]ध॒सा

6 Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३ सा रेग्, मग्प, प, ध्मग्रे, ग्रेनिंध, निंध निंधसा

४ सा रेग्, मग्प, पध् नि ध् नि ध्मग्प, ग्पध्, नि ध्नि ध्मग्, मग्प ध्मग्रे, ग्प परेग् गरेसा

५ सा रे ग् पध्, ध् म ग् रे ग्प, नि ध् नि ध्सां, सां नि ध् नि ध्मग्, ग्रेग्प, ध् नि ध् ध्नि ध्मग्, ग् म ग् ग्प, परे, मग् मग्म, पम ग्रे, ग्रेनिंध, निंधसा

६ सा रे ग् पध्, ध् नि ध् ध्सां, सां रें रेंनिध्सां, सां रेंगं, गं रें निध्, नि ध्सां, सां रें गं रेंगं, मगंमंगं रें, गं रेंनिध्सां, सां नि ध्, निध्प, पध्, ध्मग्रे, ग्रेसा

७ ग्रेसा, प परेग्प, मग्पध्, निध्, सांनिध्, रेंनिध्, गं रेंनिध्, नि ध्गं, मगं मगंमं गं रें, मग् मग्म ग रे, ग्पध्सां, सां नि ध्, नि ध्प, पध्, ध्मग्रे, ग रेग्प, प रे, मम पमग्रे, ग्रे, निरे, रेधंसा

तान

८ सा रेग्पध्मग्रेसा, सा रेग्पध्निध्मग् रेग रेसा, सा रेग्पध्सां रें निध्मग् रेग्रेसा, सा रेग्पध्सां रेंगं रेंनिध्मग् रेग्रेसा, सा रेग् पध्सां रेंगंमंगं रेंनिध्मग् रेग्रेसा

९ सा रेग्पध्निध्मध्मग् रेग् रेसा, सा रेग्पध्सांनिध्निध्मग्मग रेसा, सा रेग्पध्सां रेंगं रेंनि रेंनिध्निध्मध्मग्मग्रेग्रेसा

१० पपरेरेग्ग् रेरेसासा, ध्ध्ममग्ग् रेरेग्ग् रेरेसासा, सांसांध्ध् निनिपपध्ध्ममग्ग् रेरेग्ग् रेरेसासा, सांसांधध्निनि रें रेंनिनि ध्ध्सांसांनिनिध्ध्ममग्ग् रेरेग्ग् रेरेसासा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११ सासासा–ग॒ग॒ग॒–पपप–रे॒रे॒रे॒–ग॒ग॒ग–पपप–ध॒ध॒ध॒–सांसांसां–रें॒रें॒रें॒–गं॒गं॒गं॒–नि॒नि॒नि॒–रें॒रें॒रें॒–ध॒ध॒ध॒–सांसांसां–पपप–ध॒ध॒ध–ममम–ग॒ग॒ग॒–पपप–रे॒रे॒रे॒–ग॒ग॒ग॒–रे॒रे॒रे॒–सासासा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये)

क्र. ८९ राग–विलासखानी, लक्षणगीत, झपताल

राग विलासखानी तोडी; अंग भैरवी-युत । 'रिगधनी' मृदुल जेहि; प्रात गावत ॥ धृ० ॥ अनुलोम 'मनि' वरज; दुर्बल प प्रतिलोम । करत जहं संवाद; 'धग' दोउ सुर ॥ १ ॥

^म^ग॒	प	ध॒	ध॒	म	ग॒	रे॒	^ग^रे॒	ग॒	रे॒	सा	रे॒	सा	^नि॒^ध॒	ऽ	^नि॒^ध॒	सा	ऽ
रा	.	ग	बि	ला	.	स	खा	.	नि	तो	.	डी	अं		ग	भै	
८			१		३		+		८				१		३		

^ग^रे॒	ग॒	म	^ग^रे॒	सा	रे॒	ग॒	ध॒	नी	ऽ	^सा^नि॒	ध॒	म	ग॒	प	ध॒	नि॒	ध॒	म	ऽ
र	वी	.	यु	त	रि	ग	ध	नी		मृ	दु	ल	जे	हि	प्रा	.	त	गा	
+		८			१	३				+		८			१		३		

ग॒	रे॒	ग॒	प	ध॒
व	त	रा	.	ग
+		८		

॥ अंतरा ॥

प	प	^नि॒^ध॒	^नि॒^ध॒	ध॒	सां	सां	सां	रें॒	सां	रें॒	गं॒	रें॒	सां	सां	रें॒	नि॒	^नि॒^ध॒
अ	नु	लो	.	म	म	नी	व	र	ज	दु	.	र्ब	ल	प	प्र	ति	लो
१		३			+		८			१		३			+		८

^नि॒^ध॒	प	ध॒	नि॒	ध॒	म	ग॒	^म^ग॒	प	ध॒	ऽ	ध॒	ध॒	ग॒	प	रे॒	ऽ	ग॒	रे॒	^म^ग॒	प	ध॒
.	म	क	र	त	ज	हं	सं	.	वा		द	ध	ग	दो	उ		सु	र	रा	.	ग
		१		३			+		८			१		३			+		८		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ९० राग–बिलासखानी-तोडी, ख्याल; एकताल

नीके घुंगरीया ठुमकत चाल चलत है ॥ धृ० ॥ :सुनत साथ जिया बेकल होत सदारंग लेहों बलैयां ॥ १ ॥

सा रे् निं् सा रे् | ग॒रे् ग् ऽ ऽ मग् मग् म पम ग् रे् सा ऽ रेनिं् सा
नी . . के . | घूं . ग री . . या . . ठु म
११ | १ ५ + ९

रे् रेधु् ऽ | निंधु् ग् ग् ऽ मग् मग् म पम ग् गरे् गग् रे् सा सा रे् निं्
क त | चा . ल च ल . . त है . . . नी . .
११ | १ ५ + ९ ११

सा रे् | गरे् ग् ऽ ऽ मग् मग् म पम ग् रे् सा
के . | घूं . ग री . . या . .
| १ ५ +

|| अंतरा ||

प प प निंधु् ऽ धु् सां निंसां | सां ऽ सां ऽ रेंगं् रें् निं् निंधु् ऽ धु् धु्
सु न त सा थ जि . | या बे . क ल हो त स
९ ११ | १ ५ +

म ग् रे् ग् रे् सा सा रे् | गरे् ग् ऽ मग् मग् म पम ग् गरे् ग् गरे् सा
दा . . . रं ग ले . | हों . ब लै . . यां . . . .
९ ११ | १ ५ + ९

सा रे् निं् सा रे् |
नी . . के . |
११ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ९१ राग–विलासखानी-तोडी, तीनताल (मध्यलय)

देखि देखि रघुवीर तन सुर मनाव धरि धीर ॥ धृ० ॥ भरे विलोचन प्रेमजल पुलकावली शरीर ॥ १ ॥

ग॒रे॒ ग॒ रे॒ सा रे॒ नि॒ं सा रे॒ | ग॒रे॒ ग॒ ऽ ग॒ म म ऽ मग॒ ग॒ प प ऽ प
o o o o o o o o | o o o o o o – o o o o o o
दे . खि दे . खि र घु | वी . र त न सु र म ना व
\+ ᵕ १ ३ + ᵕ

ध॒ नि॒ | नि॒ ध॒ म ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा
o o | o o o o o o o o
ध रि | धी . . . . . . र
१ ३

॥ अंतरा ॥

प नि॒ध॒ ऽ ध॒ नि॒ध॒ सां सां सां | ग॒रें॒ ग॒ं रें॒ नि॒ नि॒ध॒ ऽ ध॒ ग॒ं रें॒ ग॒ं
o o o o o o o o | o o o o – – o o o o
भ रे वि लो . च न | प्रे . म ज ल पु ल का .
\+ ᵕ १ ३ +

रें॒ नि॒ ऽ ध॒ | रें॒ रें॒ नि॒ ध॒ म ग॒ रे॒ सा
o o o o | o o o o o o o o
व ली श | री . . . . . . र
ᵕ १ ३

क्र. ९२ राग–विलासखानी-तोडी, तीनताल (मध्यलय)

विन गोपाल वैरन भईं कुंजें। तब वे लता लगत अतिशीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजे ॥ धृ० ॥ वृथा वहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अति गुंजैं ॥ १ ॥ सूरदास प्रभु को मग जोवत अंखियाँ भईं अरुण ज्यों गुंजैं ॥ २ ॥

सा रे॒ नि॒ध॒ | सा सा रे॒ ग॒ प ध॒ म ग॒रे॒ सा ग॒रे॒ रे॒ ग॒रे॒ ग॒ | प ध॒ ’ नि॒ं
o o – | – o o o o o o – – o o o o | o o o o
बि न गो | पा ल वै र न भ ईं कुं जें त ब वे . | ल ता ल
ᵕ १ ३ + ᵕ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धॣ म ^ग^रे॒ रे॒ ^ग^रे॒ ग॒ रे॒ सा प धॣ ^नि॒^धॣ सां | रें॒ नि॒ धॣ धॣ म ग॒ ग॒ प
ग त अ ति शी . त ल अ ब भ ईं | वि प म ज्वा . ल की .
३ + ७ १ ३

धॣ म ग॒ रे॒ सा सा रे॒ ^निं॒^धॣं | सा सा रे॒ ग॒ प धॣ म
. . पुं . जे बि न गो | पा ल बै र न भ ईं
+ ७ १ ३

॥ अंतरा ॥

प प ऽ ^नि॒^धॣ धॣ धॣ ^नि॒^धॣ धॣ | सां सां रें॒ सां रें॒ गं॒ रें॒ सां ^गं^रें॒ ^गं^रें॒ गं॒
वृ था ब ह त य मु | ना ख ग बो . . ल त वृ था .
+ ७ १ ३ +

रें॒ नि॒ धॣ रें॒ | नि॒ धॣ म ग॒ ग॒ प धॣ नि॒ धॣ म ग॒ रे॒ सा सा रे॒ ^निं॒^धॣं | पाल
क म ल फू | ल त अ लि गुं . . . जै . . . . बि न गो | पाल
७ १ ३ + ७

राग—गौरी

इस राग में ऋषभ-धैवत कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—सम्पूर्ण (वक्र रूप से). वादी—मध्यम. संवादी—षड्ज.

समय—सायंकाल.

राग का मुख्य अंग—म ध प धॣ म प ग म, रे॒ ग रे॒, सा रे॒ ^निं^सा निं

आरोह—सा ^रे॒^ग रे॒, ग ग म प म, प धॣ नि सां

अवरोह—सां नि धॣ ^म^प, धॣ ^म^प म ^रे॒^ग, ^रे॒^ग रे॒ निं सा निं, सा

विशेष—गौरी राग भैरव अंग का है। पूर्वी-अंग की भी गौरी होती है किन्तु वह प्रस्तुत प्रकार से अलग है। इस राग में कालिंगडा की छाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधिक होते हुवे भी गौरी का स्वरूप दिखलाने में ही गायक की कुशलता है। निम्न स्वरसमूहों से राग का स्वरूप पूर्ण तरह स्पष्ट होता है:— "ग म प प म ग, म ग रे॒ ^नि^सा; प ध॒ नि ध॒ नि सां नि ध॒ ^म^प, म ध॒ प ध॒ म प म, ग रे॒ ग रे ^नि^सा नि। " भैरव और कालिंगडा आदि रागों से गौरी का स्वरूप अलग दिखलाने के लिये इस राग में मन्द्र सप्तक के निषाद पर एक विशिष्ट प्रकार से आते हैं। जैसे—^रे^ग रे॒ ^नि^सा नि; सा रे॒ ^नि^सा नि; ^नि^सा नि। इन प्रायः गौरी के सभी प्रकारों में इसी प्रकार से निषाद का प्रयोग किया जाता है। तार सप्तक में जहाँ-जहाँ ऋषभ स्वर पर ठहरते है वहाँ श्रीराग का भास होता है और वह आवश्यक भी है। क्यों कि गौरी राग सायंकाल के समय श्रीराग के साथ ही गाया जाता है।

आलाप

१ सारे॒^नि^सानि, सा^रे^ग, ग म प प मग, मगरे॒^नि^सा

२ निसा, ^रे^गरे॒सानि, सारे॒ग, ^ग^म, ग मप, मध॒ध॒ पम, ग रे॒गरे॒ ग^सा^रे॒^नि^सा

३ सागम, पमग^रे^गरे॒, ध॒प^ग^म, पध॒नी, सांनिध॒^म^प, ध॒प^ग^म, ग म प प मग, मगरे॒^नि^सा

४ निसा^ग^म, ^रे^गरे॒, ध॒पध॒प^ग^म, पध॒निसां, नि सां रें॒ रें॒ सांनिसां, सां रें॒गं, ^रें^गं रें॒ ^नि^सां, नि सां रें॒ रें॒ सां निसां^नि^ध॒^म^प, ध॒^प^म, म नि नि ध॒ ध॒ प प मम, ग रे॒गरे॒, रे॒गरे॒^नि^सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ पधूनी, धु नि सां धु नि सां निधूपधू पम, प धु निसां, रेंनिसां,
निसांगं रें, गं रें निसां, निसांमंमंगं रेंगं रेंनिसां, नि सां रें रें
सांनिसां निधूपधू पम, मधूपधू पम, पमधूधु पगम, ग रेग रे, ग म
प प मगम ग रेसा

६ पधु निसां, निधूसां, सां रेंगं रेंगं, रेंमं रेंगं रेंगं पं मं गं रेंनिसां,
निसां निधूपधू पम, म नि नि धु धू प प ममग रेगरे, ग म प प
मगम ग रेनिंसा

तान

७ निंनिंसा रेगग रेगग रेसासा, निंनिंसा रेगमपमगमग रेग रेनिंसा,
निंनिंसा रेगमपधूपमग रेगग रेसासा, गमपधूनिनिधूपपधूपमग रेगग
रेसासा, गमपधूनिसां रेंसांनिधूपमग रेगग रेसासा

८ गप–पम–मग–ग रे–रेसा–पनि–निधू–धूप– पम– मग– रेगग–
रेसासा, निसां–सांनि–निधू–धूप–पम– मग– रेगग– रेसासा,
रेंगं–गं रें–रेंसां–सांनि–निधू–धूप–पम–मग–रेगग–रेसासा

९ रेगग–रेसासा–पनिनि–धूपप– गपप– मगग– रेगग– रेसासा,
सां रें रें– सांनिनि–धूनिनि–धूपप–गपप–मगग– रेगग–रेसासा,
रेंगंगं–रेंसांसां–धूनिनि–धूपप–गपप–मगग–रेगग–रेसासा

१० गरेगगरेसा– निधूनिनिधूप– रेंसां रें रेंसांनि– गं रेंगंगं रेंसां–
निधूनिनिधूप–पमपपमग–गरेगगरेसा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ९३ राग–गौरी, (लक्षणगीत) द्रुतएकताल

सांझ भये गुनि गावत; गौरी अत मन भावत। आरोहन अवरोहन; सकल सुरन सरसावत ॥ ध्रु० ॥ म-स संवाद करावत; भैरव-अंग सुहावत। रि-ध सुर कोमल आवत; सा ध प ध प म ग रे ग रे सा नि ॥ १ ॥

सा धृ प धृ म प धृ प म ग रे सा रे सानि | ग म प धृ प धृ म
० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ० ० | ० ० – ० ० ० ०
सां . झ भ ये . . . गु नि गा . व त | गौ . री अ त म न
१ ३ + ५ ६ | १ ३ +

म प धृ प म रेग | ग म प धृ नि सां सां रें सां नि धृ प धृ पम |
◡ ◡ ◡ ◡ ० ० | ० ० ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० |
आ . . . व त | आ . रो . ह न अ . व . रो . ह न |
५ ६ | १ ३ + ५ ६

म धृ प धृ म प ग प म ग रे सा रे सानि |
० ० ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० |
स क ल सु र न स . र . सा . व त |
१ ३ + ५ ६

॥ अंतरा ॥

म म प धृ नि नि सां सां सां | सां रें गं रें नि सां नि धृ धृ नि
० ० – – ० ० – ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ◡ ◡
म स सं वा द क रा व त | भै . र व अं . ग सु हा .
१ ३ + ५ ६ | १ ३ + ५

सां नि धृ प | नि धृ प धृ म प धृ प म ग रे ग रे सा | सा धृ प धृ
◡ ◡ ० ० | ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ०
. . व त | रि ध सु र को . . . म ल आ . व त | सा ध प ध
६ | १ ३ + ५ ६ | १

प म ग रे ग रे सा नि |
० ० ० ० ० ० ० ० |
प म ग रे ग रे सा नि |
३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ९४ राग–गौरी, ख्याल; एकताल

सावन गरज रही गरज रही चारो देस ॥ ध्रु० ॥ मेरे जोवा उनके बढैया गरज हिंडोला झुले ॥ १ ॥

सा ध़ प ध़ प ध़ म प ध़ प म ग ' ग म प प म ग ऽ रे सा
सा . व . न . ग . . . र . . . . ज .
\+ ९ ११

ऽ रेनिं | सा ऽ ऽ ग ग म प प ऽ म ग म ऽ ऽ ध़ ध़ ऽ प ग म ऽ |
र | ही ग र ज र ही . . . चा रो . . .
१ ५ + ९ ११

गम म नि नी ध़ ध़ प प ग म पग म ग रे ग ऽ ऽ रे
दे . . . . स . . . . .
१ ५

॥ अंतरा ॥

प ध नि सां ' नि नि सां ऽ सां रें रें सां नि सां ऽ निध़ मप |
मे रे जो वा उ न के ब ढै . . . . या . |
\+ ९ ११

ग ग म प ध़ प गम म नि नि ध़ ध़ प प ग म पग म ग रे ग ऽ रे
ग र ज हिं डो ला झू . . . . ले . . . . .
१ ५ +

सा ध प ध प ध म प ध़ प म ग ऽ ग म प प म ग रे सा ऽ रेनिं |
सा . व न . . ग . . . र . . . . ज . र | ही
९ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र॰ ९५ राग–गौरी, तीनताल (मध्यलय)

बतियां करत रसिली कान्हरवा। सुध बुध तन की भूल गईं हम ॥ध्रु०॥
साँवरि सुरत नैन चमक चित खैंचत सूझ न कामकाज घर ॥ १ ॥

—पं. शंकरराव व्यासकृत

प	धृ	प	म	ग	रे	सा	रे	|	सा	’	सा	रे	ग	रेग	सा	धृ	प	धृ	म	प	धृ	प		
ब	ति	यां	क	र	त	र	सि	|	ली		का	न्ह	र	वा	सु	ध	बु	ध	त	.	न	.		
+				७					१				३				+				७				

मग	म	|	सां	रें	सां	नि	सां	नि	धृ	प	म	धृ	प	म	ग	रे	सा
की	.	|	भु	.	.	ल	.	.	ग	.	ई	.	.	.	ह	.	म
			१								३						

॥ अंतरा ॥

’	प	धृ	नि	नि	सां	सां	सां	|	निसां	नि	धृ	प	धृ	पम	म	’	सां	रें	सां	नि
सां	.	व	रि	सू	र	त		|	नै	न	च	म	क	चि	त		खैं	.	च	त
+				७					१			३			+					

धृ	प	म	म	|	नि	सां	नि	धृ	नि	धृ	प	नि	धृ	प	म	ग	रे	सा	रे	प	धृ
सू	.	झ	न	|	का	.	.	म	.	.	का	.	.	.	ज	.	घ	र	.	ब	ति
७					१								३						+			

प	म	ग	रे	सा	रे	|	
यां	क	र	त	र	सि	|	ली
	७						

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ९६ राग–गौरी, तीनताल (मध्यलय)

नाथ अनाथन की सुधि लीजे। तुम बिन दीन दुखित है गोपी बेगहि दर्शन दीजे ॥ ध्रु० ॥ नयनन जल भर आये हरि बिन ऊधो को पतियाँ लिख दीजे ॥ १ ॥ सूरदास प्रभु आस मिलन की अबकी बेर हरि आवन कीजे ॥ २ ॥

ग म प म ग रे॒ सा रे॒ निं | सा निं रे॒ ग म रे॒ ग ऽ रे॒ प ध॒ प ध॒
ना . . . थ अ ना थ न | की सु धि ली . जे . . तु म बि न
\+ ७ १ ३ +

म प ध॒ प म ग | ग ग ^म^रे॒ ग ^ग^रे॒ सा ’ग म प ध॒ नि सां ^नि^ध॒ प |
दी . . . न दु | खित है . गो पी बे . ग हि द र श न |
७ १ ३ + ७

प ध॒ ऽ प म प ऽ म ग म ऽ ग रे॒ ग ऽ रे॒
दी . . जे . . . .
१ ३

॥ अंतरा ॥

’ग म प ध॒ नि नि सां सां | सां रें॒ गं रें॒ ^नि^सां नि सां ^नि^ध॒ प रें॒
नै . न न ज ल भ र | आ . . ये . ह रि बि न ऊ
\+ ७ १ ३ +

सां ऽ नि प ध॒ प | प ध॒ म प ऽ म ग म ऽ ग रे॒ ग ऽ रे॒
धो को प तियाँ | लिख दी . . जे . . . . .
७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—चैती-गौरी

इस राग में ऋषभ और धैवत कोमल, दो मध्यम तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में गान्धार वर्जित है।

जाति—षाडव-सम्पूर्ण. वादी—पंचम. संवादी—षड्ज.

समय—सायंकाल.

राग का मुख्य अंग—नि ध़् प ध़् म, म॑ ध़् म॑ ग रे़् ग रे़् सा

आरोह—सा रे़् म॑ प, म॑ ध़् नि सां

अवरोह—सां नि ध़् प ध़् म, प म॑ ध़् म॑ ग रे़् ग रे़् सा

विशेष—चैत के महीने में विशेष रूप से गाये जाने से ही संभवतया इस राग का नाम 'चैती गौरी' पडा होगा। तीव्र मध्यम का अधिक उपयोग होने के कारण इसे पूर्वी-अंग की गौरी भी कहा जा सकता है। श्री और गौरी के मेल से इस राग की रचना हुई है। इसके पूर्वांग में श्री तथा उत्तरांग में गौरी के स्वर लिये जाते हैं। किन्तु आरोह के समय कभी-कभी उत्तरांग में भी गौरी की जगह श्री आ जाती है। इसी प्रकार अवरोह करते समय पूर्वांग में भी श्री की जगह गौरी के स्वर कभी-कभी लिये जाते हैं। पुस्तक में आई हुई चीज को देखने से पत्ता चलेगा कि चैती गौरी का अवरोह श्री के अंग से और गौरी के अंग से दोनों तरह पूरा किया जाता है। दोनों तरह से राग का स्वरूप किसी प्रकार भी न बिगडकर अधिक स्पष्ट ही होता है। "म॑ ध़् नि सां, गं रें़् सां, नि सां नि ध़् प ध़् म, मप मप पग म॑ रे़्" इस स्वरसमूह में आरोह में उत्तरांग में भी श्री और अवरोह में पूर्वांग में भी सब गौरी के स्वर हैं। यहाँ इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये कि और सब जगह तो श्री और गौरी के अंग बदल-बदलकर भी आ जाते हैं किन्तु आरोह के पूर्वांग में सदा श्री ही लिया जाना आवश्यक है। पुस्तक में दी गई चीजों में से एक में श्री और गौरी का मिश्रण मालूम होता है और एक में पूर्वी और गौरी का। चैती गौरी के ये दोनों ही प्रकार प्रचार में हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा रे़निसा, सा रे़ग^म रे़ग, म रे़प, धृमपग, म रे़^ग रे़सा

२ सा रे़निसा, सापम धृप, पनिधृप, धृमपग, म रे़^ग रे़सा

३ सा रे़प, म धृप, म धृनिसां, सांनि रे़ंनिधृप, धृम, ^मपग, म धृम ग^म रे़, म रे़प रे़ग रेसा

४ साप, म धृनीसां, नि रे़ंसां, नि रे़ंगं, रे़ंसां, निसां रे़ं निधृपधृम, रे़पम धृप, धृनिधृपधृमपग, ^ग रे़^ग रे़प^म रे़ग रे़सा

५ सानि, रे़ंगं रे़ंसां, ^निधृ^निसां, रे़ंगं रे़ं^निसां, रे़ंमं गं^मं रे़ं^निसांनि ^धृनी, निसांनिधृप, धृ^पमप^पग, म धृम ग^म रे़ सा

आलाप (पूर्वी अंग)

६ सा रे़^निसा, नि^धृनी रे़ग, म रे़ग, म धृप^म ग^म रे़ग रे़सा

७ सा रे़ग, म धृधृ म प, म धृनीसां, रे़ं निधृप, धृमप^पग^म रे़ग, रे़सा

८ गमपधृनी^सां नीधृपधृम, म म धृनि सां रे़ं निसां, निधृप, म धृ नीधृपधृ म प, म ग, म रे़ग रे़सा

तान

९ सा रे़गग रेगग रे़सासा, सासा रे़ रे़पपम धृम ग रे़गग रे़सासा, म धृ नीधृपपधृपममम धृम ग रे़गग रे़सासा, रे़ रे़पपम धृपम म धृनीसां निधृपम, धृनीसां निधृपधृमपगम रे़ग रे़निसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१० सारे़रे़–रे़पप–म॑धु़धु़–पमम–म॑धु़धु़–धु़नीनी–निसांसां–सां रें़रें़–
रें़गंगं–रें़सांसां–रें़निनि–निधु़धु़–धु़पप–धु़मम– पगग– म॑धु़धु़–
धु़म॑म॑–गरे़रे़–रे़गग–रे़सासा

११ सारे़–साप–म॑धु़–पनि–धु़सां–नि रें़–सांगं–सां रें़– निसां–धु़नी–
पधु़–मप–म॑धु़–म॑ग–रे़ग–सारे़–निंसा

१२ म॑धु़नीसां रें़सांनिधु़पम॑–,म॑धु़नी रें़गं रें़निसां– म॑ग रें़गं रें़सां–
नि रें़सांनिधु़प–म॑धु़नीधु़पम–पनिधु़पम॑धु़म॑गरे़गरे़सा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

क्र. ९७ राग–चैती-गौरी, लक्षणगीत; तीनताल (मध्यलय).

दरस श्री गौरी का कीजे। सांझ समै रि-ध मृदुल सुरन सों संग उभय मंध्यम लीजे ॥ ध्रु० ॥ पूरब अंग श्रीरूप सुहावत; चैती गौरी नाम करावत। जेहि रचना पाडव संपूरन; प-स जोरी सोहे सुन जिय रीझे ॥ १ ॥

’प नि सां रें़ | [गं]रें़ सां [नि]धु़ प धु़ प धु़ प धु़ म ऽ [प]म॑ धु़ म॑ ग |
द र स श्री | गौ री का की जे . . . . . सां . झ स |
० १ २ + ०

म॑ रे़ [ग]रे़ रे़ म॑ धु़ म॑ ग रे़ ग रे़ सा [ग]रे़ प प | म॑ धु़ नि रें़ नि धु़
मै रि ध मृ दु ल सु र न सों . सं ग उ | भ य म . ध्य म
१ २ + ० १ २

प धु़ प धु़ प धु़ म प नि सां रें़ | [गं]रें़ सां [नि]धु़ [म॑]प
लीजे . . . . . द र स श्री | गौ री का .
+ ० १ २

॥ अंतरा ॥

म॑ धु़ धु़ नि सां रें़ रें़ | रें़ गं रें़ सां [नि]धु़ प प धु़ नि धु़ प धु़ प धु़
पू र व अं . ग श्री | रू . प सु हा व त चै . ती . गौ . .
+ ० १ २ + ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ध़ म | म॑ ध़ म॑ ग रे़ ग रे़ सा रे़ रे़ म॑ ध़ प म॑ | ध़ नि ध़ नि
◡ o o | o o o o o o o o o o o o – – | o o ◡ ◡
. री . | ना . म क रा . व त जे हि र च ना पा | ड व सं .
१ ३ + ७ १

रें सां नि ध़ प प प ध़ प ध़ प ध़म पग | म॑रे़ म॑ ध़ म॑ गम॑ रे़ सा
o o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ – – | – o o o o – –
. पू . र न प स जो . . . री लो | हे सु न जि य री क्षे
३ + ७ १ ३ +

क्र. ९८ राग—चैती-गौरी, ख्याल; एकताल (श्रीराग अंग)

वो जो गइली आली खली ती कछु जान्यो नही मुरली की टेर सुन मेरी मत चोर ही या ॥ ध्रु० ॥ हर बिन हैरानी बेखानी री आली चित्रबन अष्टो जामे तेरी बिन दामे किया ॥ १ ॥

सा नि ऽ रें गं रें सां निध़ | निसां निध़ प ध़प ध़म म॑ ध़ नी सां नि
o o o o o o o o | – – o o – ◡ ◡ o o ◡
वो . जो . ग ई . | ली आली . . ख ली ती .. क
९ ११ १ ५

ध़ प ध़प ध़प ध़म म प मप पग म॑रे़ | गरे़ गरे़ प प म॑ ध़ म॑ ग रे़
◡ – o o – ◡ ◡ o – – | o o – – o o o o –
छु जा न्यो . . न . ही . . | मु र ली की टे . र . .
+ ९ ११ १ ५

गरे़ ग रे़ सा रे़ म॑ ध़ निध़ नि निध़ प | प ध़प ध़प ध़म म प मप
o o o o o o o o o o – | – o o – ◡ ◡ o
सु . . न मे री म त . . . | चो . . . र . ही
+ ९ ११ १

पग म॑रे़ सा सारे़
– – – –
. . या .
५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

म॑ धु सां सां सां सां ऽ निसां | सां ऽ निधु नी सां रे॑ गरे॑ निसां ऽ
ह र बि न हैं रा . | नी बै खा नी री . .
९ ११ १ ५ +

नी सां ऽ नि धु प धम ऽ | म॑ धु नि सां सां सां सां ऽ नि रे॑ सां
आ . . ली . . | चि त्र ब . न अ ष्टो . . जा
९ ११ १ ५ +

निधु प धम म॑ धु नि सां ऽ नि धु | प धप धप धम म प मप पग
. म . ते . रि . बि न | दा मे . . की . . .
९ ११ १ ५

म॑ रे॑ सा सारे॑
. या .
+

क्र॰ ९९ राग—चैती-गौरी, ख्याल; अडाचौताल (पूर्वी अंग)

निसदिन चैन तोरे मिलन की ॥ ध्रु॰ ॥ पिया घर आये तपत दूर भइली तनकी ॥ १ ॥

' म॑ ग रेसा रे॑ निं | सा रे॑ निं सा ऽ निं रे॑ गम॑ग रे॑ निंसा सा रे॑
नि स दि . न | चै . . . न तो . . रे . मि ल
१ ३ ७

ग म॑ प धु धु म॑ प पग म॑रे॑ ग
न . . . की . . . . .
+ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

ग म प ऽ धृ | नि रें नि सां ऽ नि धृ प धृ म॑ म॑ म॑ धृ नि
पिया घ र | आ . . . . ये . . . त प त दू
१ ३ ७

सां रें रें सां नि सां ऽ ऽ नि धृ प धृ म॑ प ऽ म॑ ग म॑ रे ग म॑
. . . . र भ इ ली . . त न की . नि
\+ ११

ग रेंसा रे निं |
स दि . न |

क्र. १०० राग-चैती-गौरी, झपताल

हमरा बसेरा बने गोद तेरी। नयन मूंद सुध दें बिसराई ॥ ध्रु० ॥ सांझ भई विरछन आये बिहंगवा। मधुमंद कलरव देत सुनाई ॥ १ ॥

—पं. बुद्धदेवकृत

प नि सां ऽ रें | गंरें ऽ गंरें निसां ऽ निधृ म॑प धप धप धम |
ह म रा ब | से रा . ब . ने . . |
\+ ८ १ ३ + ८

प ऽ म॑ धृ म॑ ग ऽ म॑रे निंसा रे प प | धप धप प धृ म प नि
गो . . द ते री . न य न | मूं . द सु ध दे .
१ ३ + ८ १ ३ +

ऽ सां रें | गंरें निसां निधृ प धृ म प नि सां ऽ रें |
बि स | रा . ई . . . ह म रा ब | सेरा
८ १ ३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म॑ ध॒ नि सां सां रें॒ रें॒ गरें॒ ऽ सां | सां रें॒ ग रें॒ निसां सां रें॒ नि ध॒
सां . झ भ ई वि र छ न | आ . . ये . बि हं . ग
१ ३ + ८ १ ३ +

प धप धम | म॑ ध॒ नि सां सां रें॒ नि ध॒ प ध॒ म | म॑ ध॒ म॑ धम॑ ग
वा . . | म धु मं . द क ल र व . . | दे . त . .
८ १ ३ + ८ १ ३

म॑रे॒ ऽ म॑रे॒ प म॑ ध॒ | म॑ ग म॑रे॒ ऽ सा
. सु ना . . | ई . . .
+ ८ १ ३

क्र. १०१ राग–चैती-गौरी, तीनताल (मध्यलय)

हरि बिन तेरो कौन सहाई। काकी मात पिता सुत वनिता को काहूको भाई ॥ ध्रु० ॥ धन धरनी अरु सम्पति सगरी जो मान्यो अपनाई ॥ १ ॥ तन छूटे कछु संग न चाले कहा ताहि लपटाई ॥ २ ॥ दीन दयाल सदा दुखभंजन तासों रुचि न वढाई ॥ ३ ॥ नानक कहत जगत सम मिथ्या ज्यों सुपना रैनाइ ॥ ४ ॥

म॑ प नि सां | रें सां नि रें नि ध॒ प ध॒ प ध॒ म धम॑ ध॒ नि रें |
ह रि बि न | ते रो कौ . न स हा ई . . . का की . . |
७ १ ३ + ७

नि ध॒ प प ध॒ प ध॒ म प ग म॑ रें॒ गरें॒ सा म॑रे॒ प | म॑ ध॒ नि रें
मा . त पि ता . . . सु त व नि ता . को का | हू को . .
१ ३ + ७ १

नि ध॒ प ध॒ प ध॒ प धम म॑ प नि सां |
मा . ई . . . . . ह रि बि न |
३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म॑ म॑ ध॒ ध॒ ^नि^सां सां सां रें॒ रें॒ रें॒ गं रें॒ सां | नि रें॒ गं रें॒ सां रें॒ नि
० ० ० ० — ० ० — ० ० ० ० — | — ० ० ० ० ० ‿
ध न ध र नी अ रु सं प ति स ग री | जो मा . न्यो . अ प
१ २ + ७ १ २

ध॒ प ध॒ प ध॒ म म॑ प नि सां |
० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ०
ना . ई . . . ह रि बि न |
+ ७

राग—ललिता-गौरी

इस राग में ऋषभ-धैवत कोमल तथा मध्यम दो और अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—सम्पूर्ण. वादी—मध्यम. संवादी—षड्ज.

समय—सायंकाल.

आरोह—सा रे॒ ग म, म॑ म ग, ग म प ध॒ प, प ध॒ नि सां

अवरोह—सां नि ध॒ प, ध॒ म, म॑ ध॒ म॑ म, ग ^म॑^रे॒ सा

विशेष—ललिता-गौरी भैरव अंग की गौरी का एक प्रकार है। इसके पूर्वांग में ललित और उत्तरांग में गौरी का स्वरूप दिखलाई देता है। आरोह अवरोह से ही यह बात भली-भांति स्पष्ट है। इस राग में शुद्ध धैवत बिलकुल नहीं लगाना चाहिये। ऐसा करने से हमारी सम्मति में राग का स्वरूप बिलकुल बिगड जाता है। इस राग में चमत्कार यह है कि प्रातः काल के दो रागों-भैरव और ललित-की छाया इसमें आते हुवे भी सायं-काल के समय गाया जाता है, तथा अत्यन्त मधुर और चित्ताकर्षक लगता है। इसका कारण यही है कि सन्धिप्रकाशकाल के प्रायः सभी राग थोडे-बहुत परिवर्तन से प्रातःकाल या सन्ध्या के समय गाये जा सकते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सानिंरे़सा, निंरे़गमग रे़ग^सा^ रे़^निं^सा

२ सानिंरे़सा, निंरे़गमं, म-मग, गमपध़पध़मप, म प ध़ प^ग^म,
ग रे़ ग रे़ ^निं^सा

३ निंरे़गमध़म-^ग^म, ग, ग म प ध़^म^प, प ध़ नि सां^नि^ध़^म^प, म प ध़
पगम, ग रे़ ग रे़, निं रे़ ग मध़म-^ग^मगरे़गरे़^निं^सा

४ निं रे़ ग मध़म-^ग^मग रे़ ग रे़, गमपध़, पध़निसां, निध़ंप, पध़
निसां, निरें़सां, नि रें़गंमंगं रें़ गं रें़^नि^सां, सां रें़ निसांनिध़प,
^ग^म, म नि नि ध़ ध़ प^ग^म, ग रे़ ग रे़^निं^सा

५ पध़निसां, नि रें़सां, नि रें़गंमं, मं-मंगं, मं-गं रें़सां, सांनि रें़नि
ध़म-ध़म-^ग^म, ग रे़ ग रे़, गमपध़^म^प, ^ग^म, गं रे़ गरे़ म-गरे़सा

तान

६ निंरे़गमगरे़गरे़म-गरे़सा, निंरे़गमम-मगमपध़पमगपमगरे़सा, निंरे़
गमपध़नीध़पमगमगरे़म-गरे़सा, निंरे़गम पध़निसां-रें़सांनिध़-म-ध़
म-म-गमगरे़-गरे़निंसा

७ निंरे़ग-रे़गम-गमप-मपध़-पध़नी-ध़निसां-निसां रें़-सां रें़गं-
रें़गं रें़-सां रें़सां-निसांनि-ध़निध़-म-ध़म-गमग-रे़गरे़-निंसा

८ निंरे़गमम-मगम-पध़निसां रें़सांनिसां-नि रें़गंमंगं रें़निसां- गं रें़
सांनि-रें़सांनिध़-निध़म-म-ध़पमग-पमगरे़-गरे़निंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९ निंरे॒गमगरे॒–गमपध॒पम–पध॒निसांनिध॒–ध॒निसां रे॒ंसांनि–ध॒निसां
निध॒म॑म॑–ध॒नीध॒म॑म–गमध॒म॑मग–रे॒गम॑गरे॒सा

१० निंनिं–रे॒रे॒–गग–मम–ध॒ध॒–म॑म॑–मम–पप–ध॒ध॒–निनि–सांसां
रे॒ंरे॒ं–सांसां–निनि–ध॒ध॒–पप–मम–ध॒ध॒–म॑म॑–मम–गग–रे॒रे॒–सासा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

क्र. १०२ राग–ललित-गौरी, (लक्षणगीत); तीनताल (मध्यलय)

करत गौरी को आराधन। भेंट राखत अति ललित सुरन; मृदुल रिध-अरु उभय मध्यम ॥ ध्रु० ॥ सांझ की बेला गावत गुनि; सचिव 'सा' नृप सोहत मध्यम। ललित-गौरी अंग मिलावत; रूप संपूरन मनभावन ॥ १ ॥

–पं. विनयचंद्रकृत

’सा निं रे॒ | म म ग रे॒ म॑ ग रे॒ सा रे॒ ^सा^निं ’म ऽ म | प ध॒ प
○ ○ ○ ○ | — — ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ | ○ ○ ○
क र त | गौ री को . . अ रा . ध न भें ट | रा . ख
७ १ ३ + ७ १

प प नि ध॒ प म ध॒ प म प ग म रे॒ ग ’म॑ ध॒ म॑ | म ग म रे॒
○ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ | ○ ○ ○ ○
त अ . ति . ल लि त सु . र . न . मृ दु ल | रि ध अ रु
३ + ७ १

’ग म॑ ग रे॒ सा सा
○ ○ ○ ○ — ○ ○
उ भ य म ध्य म
३ +

|| अंतरा ||

’प ऽ ध॒ | ^नि^सां नि रे॒ं गं रे॒ं सां सां नि नि ’ध॒ म॑ ध॒ | ^नि^सां नि
○ ○ ○ ○ | — — ○ ○ — ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ | — ○
सां झ | की बे ला . गा व त गु नि स चि व | सा नृं
७ १ ३ + ७ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धृ म॑ धृ म॑ ग म म म ’म॑ म ग | म प प म ग ग ग रे॒ ग रे॒ सा
o o o o o – o o o o o o | o o – o o o o o o o o
प सो . ह त म ध्यम ल लि त | गौ . री अं . ग मि ला . व त
३ + ७ १ ३ +

’ग ऽ म | प प धृ प ग म रे॒ ग रे॒ सा
o o o o | – – o o o o o o o o
रू प | सं पू र न म न भा . व न
७ १ ३ +

क्र. १०३ राग–ललित-गौरी, ख्याल; एकताल

यार कटारी मानु प्रेम दी ओपि बोई सैंया लगन जैये ॥ ध्रु० ॥ आख लडांदा लह-भिड जांदा आमिल शोरी मत माती ॥ १ ॥

निं रे॒ ग म म॑ म॑ म ग म ग रे॒ सा रे॒ सा निं निं निं रे॒ ᵍम ऽ ग |
या . . . . र क टा . . . रि मा नु प्रे म |
९ ११

म ग म प धृ ’प धृ नी नी धृ प धृ प ᵐग ग म ग म नी नी धृ धृ
दी ओ पि बो ई सैं . . . . . . या . ल ग न . . . . .
१ ५

प प ग म ग म ग रे॒ ग ऽ रे॒ निं रे॒ ग म धृ म॑ ᵍम ग रे॒ सा रे॒
. . . . जै . ये . . . या . . . . . . र क टा .
+ ९ ११

सा निं निं निं रे॒ ᵍम ऽ ग |
. . रि मा नु प्रे म |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

ध़ ध़ ध़ प ध़ नी नि ध़ प ऽ ध़ प प ध़ नि रें सां नि ध़ प ध़ प ध़
आं ख ल डां . . . . . . दा ल ड भि ड जां दा आ मि ल
१ ५

’म मप म प ध़ प ग म गग ऽ रे़ निं रे़ ग म म॑ ग म ग रे़ सा
शो री म . त . मा . ती . या . . . . . . र क टा
+ ९ ११

रे़ सा निं निं रे़ गम ऽ ग |
. . रि मा नु प्रे म |

क्र. १०४ राग–ललित-गौरी, तीनताल (मध्यलय)

यह अँदेस सोच जिय मेरे। निसि बासर गुन गाऊँ तेरे ॥ ध्रु० ॥ तुम चिंतत मेरी चिंतहु जाई। तुम चिंतामनि हौ इक नाही ॥ १ ॥ भगत हेत का-का नहि कीन्हा। हमरी बेर भये बलहीना ॥ २ ॥ कह रैदास दास अपराधी। जेहि तुम द्रवौ सो भगति न साधी ॥ ३ ॥

सा रे़ निं रे़ | गम म म॑ म म॑ ग रे़ ग म॑ ग रे़ सा ग म ग
य ह अँ . | दे स सो . . च जि य . मे . रे नि सि बा
७ १ ३ + ७

म प ध़ | ध़ प प नि ध़ प म प ध़ प गम ग ऽ म॑ रे़ ग ’सा रे़
. . . | स र गु . न . गा . . . ऊँ ते . रे . य ह
१ ३ + ७

निं रे़ | गम म म॑ म म॑ ग ऽ
अँ . | दे स सो . . च
१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

म धू म धू सां सां सां सां | ’रें सां रें सां रें ग म^ग रें सां सां रें
o o o c o o o o | o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ o o o o
तु म चिं . त त मे री | चिं त हु जा . . . . ई . तु म
\+ ७ | १ ३ +

^नि सां ^नि धू प प | प धु नि धू प म प धु प ^गम ग रे ग ऽ रें
\- - o o | ◡ ◡ o o o ◡ ◡ ◡ ◡ - ◡ ◡ o o o
चिं ता म नि | हो . . इ क ना . . . ही . . . .
७ | १ ३ +

’सा रे नि रें |
o ◡ ◡ o o |
य ह अँ . |
७

राग—चम्पक

इस राग में दो निपाद तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी—मध्यम. संवादी—षड्ज. समय—रात का दूसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—सा ^रेम, ^पध म, ^पग रे सा रे सा

आरोह—सा ^रेग म, ग म प ध नि नि ध सां

अवरोह—सां रें नि ध ^पम ^मप ग ^रेसा रे सा

विशेष—चंपक अप्रसिद्ध रागों में से है। यह खमाज-अंग का राग है। तथा खंबावती से बहुत मिलता-जुलता है। खंबावती से बचाने के लिये ही अवरोह का स्वरूप वक्र रहता है। जैसे—“सां रें नि, ^निसां ध, ^पम, ^मप ग रे सा रे सा।” इस प्रकार अवरोह करने से ही चम्पक का स्वरूप खंबावती से अलग स्पष्ट होता है। खंबावती में जैसे “म-सा” इस प्रकार मध्यम से सीधा षड्ज पर आते है, वैसे ही चम्पक में ऋषभ और षड्ज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की स्वरसंगति ली जा सकती है। जैसे—" म पग रेंसा, पध म पग रेंसा रे सा। " आरोह में 'म प ध निसां' इस प्रकार का स्वरसमुदाय लेने से गौडमल्हार की छाया आती ह। सो गौडमल्हार का यह भास न होने देने के लिये आरोह में निषाद को दीर्घत्व दिया जाता है। जैसे—'ग म प ध नि नि ध सां।" यह राग अत्यन्त श्रुतिमधुर और आकर्षक है।

आलाप

१ सारेम, पग रे सारेसा, सारेम, म पधपम, पग रे सारेसा

२ सा रेप, धध प म प मगम, ग म प धनिसांनिसांनिधसां, रेंनि़ निसांसांधपममपपग रे सारेसा

३ मप धनिसांनिसांनिधसां, सां रेंगं रेंसां, सां रें,सांनि़नि़सांसांधपम, म प धनि, सांधनि़पधमपग रे सारेसा

४ म, प धनीसांनिसांनिधसां, सां रेंगंसां, सां रेंमं, पंगं रेंसां, सां सां रेंनि़, नि़सांसांधपम, मप धनिसांनिधसां, रेंनि़नि़सांधंपम पग रे सारेसा

५ पग रे सारेसा, धममपग रे सारेसा, सांरेंनि़सांधनि़प, ध सां रें गंरेंसां, सांरेंमंपंगं रें सां रेंसां, सां रेंसांनि़नि़सांसांधपम, गमप धनीसांधपम, धध पमपमगम, पग रे सारेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तान

सारेममपमपगरेसा, सारेममपधपमपगरेसा, सारेमपधधपमगमप धनीनीधपपधपमगरेगसा, गमपधनिसां रें रेंनि॒नि॒सांधनि॒पधधप मपगरेसा

७ सासा–रेरे–पप–मम–पप–गग–रेरे–सासा, सासा–रेरे–पप–धध–मम–गग–मम–पप–धध–नीनी–पप–धध–मम–पप–गग–रेसारेरेसा

८ सासासा–रेरेरे–मम–पप–गग–रेरे–सासा, सासासा–रेरेरे–मम–गगग–ममम–पप–धध–नीनी–पप–धधध–निनिनि- सांसां- रें रें रें–नि॒नि॒नि॒–सांसां–धधध-ममम-पप-गगग- रेरेरे-नि॒नि॒नि॒- सांसां–धधध–ममम–पप–गगग–रेरेरे–सासा

९ सारेसा–रेमरे–मपम–पधप–धसांनि॒–सां रेंसां-रेंगंसां-सां रेंनि॒- नि॒सांध–धनि॒प–पधम–मपग–रेसारे–सा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

क्र. १०५ राग–चमक, लक्षणगीत; द्रुतएकताल

आली चंपक गावो। अंग खमाज उभय नी। म-स संवाद कराओ ॥ धृं० ॥ खंभावती रागिनि को। भास होत जहं गावत। दूसरो पहर रजनी। रूप वकर दिखलाओ ॥ १ ॥

—पं. विनयचंद्रकृत

सा	रे	प	म	ग	सा	सा	रे	म	ऽ	म	|	म	प	ध	नी	नि	ध	नि	सां	सां	|
◡	◡	०	–	–	०	०	०	०	०	०	|	–	०	०	–	०	०	०	०	–	|
आ	.	. ली	च	म्प	क	गा	.			ओ	|	अं	ग	ख	मा	ज	उ	भ	य	नी	|
१			२	+		५		६				१		२	+		५		६		

सां	रें	सांनि॒	ध	प	प	ध	पम	पग	रेसा	|
०	०	–	०	०	०	०	–	०	०	|
म	स	सं	वा	.	द	क	रा	ओ	.	|
१		२	+		५	६				

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म प ध नी नि नि नि ध नि सां सां | सां रें सां नि॒ ऽ ध ध प सां ध

खं भा . . व ति रा . गि नि को | भा स हो त ज हं गा

१ ३ + ५ ६ १ ३ + ५

सां सां सां | सां रें गं गं रें सां रें सां नि॒ नि॒ ध ध प | सां रें सां नि॒

. व त | दू . . स रो . प ह र र ज नी | रू . प

६ १ ३ + ५ ६ १.

सां नि॒ ध प ध प म म प ग रें सा |

व क र दि ख ला ओ |

३ + ५ ६

क्र. १०६ राग—चम्पक, ख्याल; ताल झुमरा

मग जैये हो ये दुखकवा आन दुलारो ॥ ध्रु० ॥ आवन कह गये री सुध ना रही ये बिदकवा आन दुलारो ॥ १ ॥

सा रे प ऽ ध ध प म प म ग ऽ रे ग | म ऽ ऽ ग म प ध सां सां

म ग जै ये . . . . | हो ये . दु ख क वा

११ . १ ४ .

ऽ सां नि॒ रें सां नि॒ ध प ऽ ध ’ नि॒ | नि॒ सां नि॒ नि॒ नि॒ सां सां ध प म

. . न . . . . दु | ला . . .

+ ११ १ ४ .

म प प ग रे सा रे ऽ ऽ सा

. . . . . रो

+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म प ध नी सांनि सांनि निध ' नि | सां ऽ निसां सां ऽ सां ऽ रें गं
आ व न का . . . ग | ये . री सु ध ना
११ १ ४ +

रेंसां ' सां रें रें सांनि् सांसां ऽ ध नि्नी प | ध ध प म प म ग
. र ही . . . . . | . . . .
११ १

ऽ म ग म प ध सां सां ऽ सांनि् रें सां नि् ध प ऽ ध ' नि् |
. ये . बि द क वा आ . न . . . . दु |
४ + ११

नि्सां नि्नि् नि्सां सांध पम मप पग रे सा रे ऽ ऽ सा ग म
ला . . . . रो म ग
१ ४ + ११

ग म प ध नि सां ऽ ऽ सां ध प म ग ऽ रेग |
जै . . . . ये . . . . . | हो

क्र. १०७ राग—चम्पक, तीनताल (मध्यलय)

सजनी ! जिया मानत नाहीं। चैन न पावत निसदिन पलछिन बिन देखे अकुलाही ॥ ध्रु० ॥ कासों कहूं दुखवा अपनो अब कौन सुने जग माहीं ॥१॥

—पं. विनयचंद्रकृत

' सा रे प म ग रे ग | म प धपमपग रे सा रे सा ग म प ऽ ध |
स ज नी जि . या . | मा न त ना . . . . हीं चै . न न |
७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि॒ सां सां सां सां रें सां नि॒ नि॒ ध प ध सां सां सां नि॒ नि॒ नि॒ सां |
पा . व त नि स दि न प ल छि न बि न दे |
१ २ + ७

सां ध प म म म प प ग रे सा रे सा सा रे प म ग रे ग | म प ध प म प ग
खे अ कु ला . . . . ही स ज नी जि . या . | मान त ना .
१ २ + ७ १ २

|| अंतरा ||

ग म प ध सां नि सां नि ध नि | सां रें गं गं सां ऽ सां सां सां रें सां नि॒
का . सों क हूं . दु ख | वा अ प नो . अ ब कौ न
+ ७ १ २ + ७

नि॒ ध प | प प प ध प म म प ऽ ग रे सा रे सा सा रे प म ग रे ग |
सु ने . | ज ग मा . . . . . . हीं स ज नी जि . या . |
१ २ + ७

रा.वि.(५)११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—धनाश्री

इस राग में भैरवी अंग से गाते हुवे ऋषभ, गान्धार, धैवत और निषाद कोमल तथा भीमपलासी अंग से गाते हुवे केवल गान्धार और निषाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—ओडव-सम्पूर्ण. वादी—पंचम. संवादी—षड्ज.

समय—दिन का तीसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—(भैरवी-प्रकार) मग़् म प नि़् ध़् प, म प मग़् रे़ सा

राग का मुख्य अंग—(भीमपलासी-प्रकार) मग़्मग़्प, नि़धपमग़्मग़्रेसा

आरोह—सानि़् सा मग़् म प सांनि़् सां

अवरोह—(भैरवी-प्रकार) सां नि़् ध़् प म प मग़् म ग़् रे़ सा

अवरोह—(भीमपलासी-प्रकार) सां नि़् ध प म प मग़् म ग़् रे सा

विशेष—इस राग को दो अंगों से गाते हैं, एक भैरवी-अंग से और दूसरे भीमपलासी अंग से। भैरवी-अंग से गाते हुवे ऋषभ, गान्धार, धैवत और निषाद ये चारों स्वर कोमल लिये जाते है। इसी प्रकार भीमपलासी अंग से गाते हुवे केवल गान्धार और निषाद ही कोमल लिये जाते है। भीसपलासी अंग से गाते समय मध्यम स्वर आरोह में दुर्बल रहता है। मध्यम स्वर का महत्व कम करने के लिये तथा पंचम को प्रधानता देने के लिये ऐसा किया जाता है। भैरवी-अंग से गाते हुवे भी वादी-संवादी, पंचम-षड्ज ही रहते हैं। भैरवी-अंग का धनाश्री भीमपलासी अंग के धनाश्री से कठिन रहता है। भैरवी-अंग से गाते हुवे ऋषभ-गान्धार धैवत और निषाद ये चारों ही स्वर कोमल लिये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इन दोनों प्रकारों के स्वरूप में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

आलाप

१ सा, सानि़्सानि़्नि़्प़सानि़्साग़्रे़सा

२ नि़्सामग़्मग़्प, पमपमग़्सामग़्मग़्रे़सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३ रेनिंसा, मगूमगूप, धप, मपनीधूप, धूपम, पमगूसा गू मपमगू मगूरेसा

४ प, धूमपनीधूप, मपसांनिंसांनिधूप, धूपमपमगूम, सामगूपमधूप मगूमगूरेसा

५ पमगूमपसांनिंसांनिपसांनिसां, निसांगंरेंसां, सां रेंसांनि, प नि सां निधूप, धपनिधूप, मपमगूम, सामगूपमगूमगूरेसा

६ सापमगू, पनीधूप, सांनिंसांनिधूप, मपसांनिंसांनिसां, गं रेंसां, मंगं रेंसां, सां गं मंपंमगं, मंगं रेंसां, निसांगं रेंसांरेंसांनि, सांनिंसांनि धूप, धूपधूपमपमगूसा गू म प गु मपमगूसामगूमगूरेसा

तान

७ निंसागूरेसा, निंसागूमगूरेसा, निंसागूमपमगूरेसा, निंसागूमप निधूपमपगूमगूरेसा, निंसागूमपनिसांनिधूमपगूमगूरेसा, निंसा गूमपनिसांगं रेंसांनिधूपमगूमगूरेसा

८ पप-मपप-मपप-गूपम-गूरेसा, निनि-पनिनि-पनिनि-मपप-गूमम-गूरेसा, सांसां-निसांसां-निसांसां-पनिनि-मपप-गंगं-सा रें रें-निसासां-पनिनि-पधूध-मपप-गूमम-गूरेसा

९ सागूमप-गूमपनि-पनिसांगं-रेंसां-नि रेंसांनि-पनिधूप-मपगूम गूरेसा

१० निनि-पनिपम-सांसां-निसांनिप-रें रें-सां रेंसांनि-गंगं-रेंगं रेंसां-रें रें-सा रेंसानि-सांसां-निसांनिप-निनि-पधूपम-पप-मपमगू-मम-गूमगूरेसा

(सूचना-उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १०८ राग–धनाश्री, लक्षणगीत; तीनताल (मध्यलय)

धन धन धनासरी रागिनी। दिवस तीसरो पहर सुनावत; भैरवी अंग-कोमल रि-ग-ध-नि ॥ ध्रु० ॥ पंचम-प्रथम सुहावत जोरी; रचना जेहि ओडव-सम्पूरन। होत भेद इक भीमपलासी-अंग सहित, तहं लेत मृदुल ग-नि॥१॥

म ग्‌ रे्‌ सा रे्‌ निं्‌ सा ग्‌ | म प ’ मग्‌ म ग्‌ रे्‌ सा रे्‌ नि्‌ सा मग्‌
o o o o o o o o | o o o o o o o o o o o o
ध न ध न ध ना . स | री . रा . गि नी . दि व स ती
\+ ८ १ ३ +

ऽ म प | प म प नि्‌ ध्‌ प प मग्‌ म प सांनि्‌ प सांनि्‌ सां सां |
o o – | o o o o – o o o o o o o o o o |
स रो | प ह र सु ना व त भै . र वी . अं . ग |
७ १ ३ + ७

नि्‌ ध्‌ प मग्‌ ग्‌ रे्‌ सा
– o o o o o o
को म ल रि ग ध नि
१ ३

॥ अंतरा ॥

प मग्‌ म प प प म | प नि्‌ नि्‌ प सांनि्‌ सां सां नि्‌ सां मग्‌ रे्‌ सां सांनि्‌ |
– o o o o o o | o o o o o o – o o – o o – |
पं च म प्र थ म सु | हा . व त जो . री र च ना जे हि ओ |
\+ ७ १ ३ + ७

नि्‌ सां नि्‌ ध्‌ प प मग्‌ म ग्‌ रे्‌ सा निं्‌ सा | म म ग्‌ म प प प
o o – – o o – o o o o o o | – o o o o – –
ड व सं पू र न हो त भे . द इ क | भी म प ला . सी अं
१ ३ . + ७ १ ३ +

म प सांनि्‌ नि्‌ प नि्‌ | नि्‌ सां नि्‌ ध्‌ प मग्‌ मग्‌ रे्‌ सा
o o o o o o | o ◡ ◡ o o o o o o
ग स हि त त ह | ले . . त मृ दु ल ग नि
७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १०९ राग–धनाश्री, ध्रुपद; चारताल
(भैरवी अंग)

धरन सुरन तान ताल के प्रमान जुक्त उक्त के विधान साध गावे ।।ध्रु०।।
आरोही अवरोही अस्थाई-संचारी। म ग रे सा सा म ग म प म ग म प प
सा नि सा म ग रे सा नि ध प म ग रे सा सा।

॥ अभोग ॥ मूर्च्छना प्रमान सो, गमक भेदच्युत अच्युत- साधारन के ब्योरे, व्यक्त करे गावे। चिंतामनि गुरु न ध्यान, आज्ञ मान श्रुति प्रमान, उलट पलट सुरन के, नेम प्रेम दृढ करे, तब गुनिजन मध जाय, मान पावे॥१॥

सा नि् सा म ग् रे् सा | सा नि् सा सा म ग् म म प ऽ प नि् ध् ऽ प |
ध र न सु र न | ता . न ता . ल के प्र मा न |
\+ ९ ११ १ ५ + ९ ११

म ग् म म प सां नि् नि् सां ऽ सां नि् ध् प | म ग् ऽ म ग् रे् सा सा नि्
जु . क्त उ . क्त के बि धा . न | सा ध गा . वे ध
१ ५ + ९ ११ १ ५ +

सा म ग् रे् सा |
र न सु र न |
९ ११

॥ अंतरा ॥

प ऽ ऽ म ग् म म प सां नि् सां नि् सां ऽ सां | सां ऽ ऽ रें नि् सां ग्ं रें्
आ रो . हि अ व . रो हि | अ स्था . ई सं
१ ५ + ९ ११ १ ५ +

ऽ सां नि् ध् प | म ग् रे् सा ऽ सा म ग् म प म म ग् म | प प
. चा . री | म ग रे सा सा म ग म प म ग म | प प
९ ११ १ ५ + ९ ११ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि सां ऽ मं गं रें सां नि धृ प | म ग रे सा ऽ सा सा नि सा
सा नि सा म ग रे सा नि ध प | म ग रे सा सा ध र
५ + ९ ११ १ ५ +

म ग रे सा |
न सु र न |
९ ११

|| अभोग ||

मग म म प ऽ प धम प प ध ऽ प | मग मग मग म प प मग म
मू . र्च्छना प्र मा . न सो . | ग म क भे . द च्यु त
१ ५ + ९ ११ १ ५ +

ग रे सा सा | रे नि ऽ सा ऽ सा सा म ग ऽ रे ऽ सा ऽ | सानि सां
अ . च्यु त | सा . धा र न के . ब्यो रे | व्य .
९ ११ १ ५ + ९ ११ १

सा मग म म प प ऽ निध ऽ प | मग म प सांनि सांनि सांनि सां सां
क्त व्य . क्त क रे मा बे | चिं . ता . म नि गु रु
५ + ९ ११ १ ५ +

सां रें ऽ सां | सां ऽ सां रें नि सां सां सां सां सां नि ध ऽ प |
न ध्या न | आ न मा . . न श्रु ति प्र मा . न |
९ ११ १ ५ + ९ ११

मग मग मग म प प मग म ग रे सा ऽ | सानि सा सा मग म म प
उ ल ट प ल ट सु र न के . | ने . म प्रे . म द
१ ५ + ९ ११ १ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ऽ ध् प ऽ | मग् म प सांनि् सां रें रें सां ऽ नि् नि्ध् ऽ प | मग् मग्
ढ . क रे | त व गु नि ज न भ ध . जा य | मा .
९ ११ १ ५ + ९ ११ १

म ग् रे सा सानि् सा म ग् रे सा |
न पा . ये ध र न मु र न |
५ + ९ ११

क्र. ११० राग–धनाश्री, ध्रुपद; चारताल

(भीमपलासी अंग)

ये सखी नंद कुवर बालपन में मेरो मन हर लीनो ॥ ध्रु० ॥ जीये हो कलात मेरो नैनन सो नीर जाय । मेरे जिया को दूख दून कीनो ॥ अभोग ॥ सांवरो सलोनो कान्ह बाट रोख ठाडो भयो । मोहे तो बुलाये गाये अधरन को रसलीनो । सैन सों बुलाये और मुख सों बुलाये गाये, बांसुरी बजाये कछु जादू कीनो ॥ १ ॥

प नि् प प मग् पम | प ऽ ऽ प ऽ पम पम प ऽ नि्प नि्प म म |
ये . . स खी . | नं द कुं व . र वा . ल |
९ ११ १ ५ + ९ ११

प नि् ध प ऽ प ऽ धम पग् मग् पम प | प मग् म ग् सारे सा ऽ प
प न में . में रो . म न . | ह र . ली . नो ये
१ ५ + ९ ११ १ ५ +

नि् प प मग् पम |
. . . स खी . |
९ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

|| अंतरा ||

प ऽ प मग् म म प सांनि् सांनि् सांनि् सां सां | सां ऽ ऽ नि् सां मं
जी ये हो . क ला . त मे . रो | नै न न सों
१ ५ + ९ ११ १ ५

गं रें सां सां नि् ध प | प ऽ ऽ मग् ऽ मग् पम प सांनि् सांनि् सां रें |
नी . . र जा . य | मे रे जि था को . दु . ख |
+ ९ ११ १ ५ + ९ ११

रें सां रें सां नि् ध प ऽ प नि् प प मग् पम |
दू . . न की . नो ये . . स खी . |
१ ५ + ९ ११

|| अभोग ||

प ऽ प मग् ऽ म प ऽ प निम प प | प ऽ म प सांनि् सांनि् सांनि् सां
सा व रो स लो नो का . न्ह | बा ट रो . क ठा .
१ ५ + ९ ११ १ ५ +

रें सां सां नि् ध प | प मग् ऽ मग् पम प मग् ऽ म ग् रे सा |
डो . भ यो . . | मो हे तो . बु ला ये गा . ये |
९ ११ १ ५ + ९ ११

सांनि् सा मग् पम प ऽ प प ऽ निम प प | प ऽ प मग् म म प सांनि्
अ ध र न को र स ली . नो | सै न सों . बु ला .
१ ५ + ९ ११ १ ५ +

सांनि् सांनि् सां सां | सांनि् सां ऽ सांनि् सां मं गं रें सां नि् सा नि्
ये औ . र | मु ख सों . बु . ला . . ये गा
९ ११ १ ५ + ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध प | प ऽ प (म)ग् म म प (सां)नि् (सां)नि् (सां)नि् सां रें | रें सां रें सां
. ये | बां सु री . ब जा . ये क छु . | जा . . दू
११ १ ५ + ९ ११ १

नि् ध प ऽ प नि् प प (म)ग् (प)म |
की . नो ये . . स खी . |
५ + ९ ११

राग—मुलतानी-धनाश्री

इस राग में ऋषभ, गान्धार और धैवत कोमल, दो मध्यम, दो निषाद तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ-धैवत वर्जित हैं।

जाति—ओडव-सम्पूर्ण. वादी—पंचम. संवादी—षड्ज.

समय—दिन का तीसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—निं सा म ग्, ग् म॑ प म॑ प, ध् प म॑ ग् म॑ ग्

आरोह—निं सा म ग् म॑ प, (म)ग् म प (सां)नि् सां

अवरोह—सां नि ध् प म॑ ग् म॑ ग्, ग् म॑ प म॑ ग्, म॑ ग् रें सा

विशेष—यह राग मुलतानी और धनाश्री के मेल से बना है। इस राग में भीमपलासी-अंग की धनाश्री न आकर भैरवी अंग की धनाश्री आती है। मुलतानी-धनाश्री में मुलतानी का अंग अधिक है। जब इन राग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है तब उसके साथ ही कोमल गान्धार लेकर तीव्र मध्यम लिया जाता है। जैसे—" निं सा म ग्, म॑ प" इसी प्रकार जब कोमल निषाद पर ठहर कर ऊपर के स्वरों में जाते हैं तब "प नि सां रें (ग्)रें सां" इस प्रकार ऋषभ का प्रयोग किया जाता है। मुलतानी या धनाश्री इन दोनों रागों में से किसी एक ही पूरा स्वरूप न हो जाये इस बात का ध्यान रखते हुवे इन दोनों रागों का कुशलता से मिश्रण करते हुवे यह राग गाना चाहिये। राग का पूरा स्वरूप निम्न आलापों को ध्यान से देखने से ज्ञात होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ रे़ सानि़सानि़सा, नि़साम॒ग॒, मग॒रे़सा

२ नि़साम, ग॒ म॒पम॒प, ध॒प, मपमपम॒ग॒, मग॒रे़सा

३ नि़साम, ग॒ म॒पम॒प, ध॒प, म॒ प ध॒ प म॒ग॒, ग॒ म॒ पनि, ध॒प, ध॒पध॒पमपमग॒, साम॒ग॒पम॒ध॒ग॒म॒ग॒रे़सा

४ नि़ सा ग॒ म॒ पनि, ध॒पध॒म॒, ग॒ म प सांनि़ सांनि़सां, रे़ंसां, रे़ं सांनिध॒प, म॒ध॒ पनीध॒प, ध॒ पमपमग॒, म॒ग॒रे़सा

५ नि़ सा ग॒ म प सांनि़सांनि़सां, रे़ंसां, रे़ं सांनि, प नि सांग॒ं रे़ंसां रे़ं निसांनिध॒प, म॒पम॒ प ध॒ प म॒ग॒म॒ग॒, मग॒रे़सा

६ रे़ सानि़सानि़सा, मग॒प, ध॒पध॒पम, प ध॒ म॒ पनीध॒म॒प, सांनि, रे़ंसां, मंग॒ं रे़ंसां, म॒ग॒रे़सा, मग॒पम॒ध॒पनीध॒प, पमपमपमग॒, मग॒रे़सा

७ सापम॒ग॒म॒ग॒रे़सा, साध॒प, ध॒पम, ध॒पनीध॒प, रे़ंसां, मंग॒ं रे़ंसां, निसांनिसांनि सां रे़ं सांनि, ध॒म॒प, म॒पम॒पम॒ प ध॒ प म॒ग॒, ग॒ म पसांनिध॒पम॒ग॒, मग॒रे़सा

तान

८ नि़साग॒म॒पम॒ग॒म॒ग॒रे़नि़सा, नि़साग॒म॒पनि़सांनि़ध॒पम॒ग॒मग॒रे़सा, नि़साग॒म॒पनिसां रे़ंसांनिध॒पनीध॒पम॒ग॒म॒ग॒रे़सा, नि़साग॒म॒पनि सांग॒ं रे़ंसांमंग॒ं रे़ंसांनिध॒पम॒ग॒म॒ग॒रे़नि़सा.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९ मम–ग़पप–ग़मम–ग़ रे़सानिंसा, मम–ग़पप–म निनि–धूपम ग़–म ग़ रे़सा, मम–गपप–म निनि–धूपम ग–ग़म पनिसांनिधपम ग़–ग़म पनिसां रें़सांनिधूपम ग–मम–ग़पप–ग़मम–ग़ रे़सा

१० निंसामम–ग़गपप–म म निनि–पपसांसां-निनि रें़ रें़-सांसांनिनि-पपनिनि–धूधूपप–म म पप–ग़ग़मम- ग़ग़ रे़ रे़सा

(सूचना–उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये ।)

क्र. १११ राग–मुलतानी-धनाश्री, लक्षणगीत; झपताल

सुनत जिय हरसाथ; भेद सुभ मुलतानी। धनाश्री-अंग युत; रि-ग-ध मृदु उभय म-नि ॥ ध्रु० ॥ लसत 'प-स' नृपसचिव; ओढव सम्पूरन। रि-ध वरज अनुलोम; तीसरो पहर दिन ॥ १ ॥

–पं. विनयचंद्रकृत

प नि सां निधू प मग़ ग़ म धू प मग़ रे़ सा | सानिं ऽ सा म म ग़

सु न त जि य ह र . . . सा . थ | भे द सु भ .

१ ३ + ८ १ ३

म प मप म प धू प मग़ | म धूप सांनि़ सांनि़ सां रें़ नि सां ऽ नि

सु ल ता . . . . नी | ध ना . श्री . अं . . ग

+ ८ १ ३ + ८

धू प | मग़ पम धूप निधू प म ग़ ग़ म धू प मग़ रे़ सा |

यु त | रि ग ध मृ दु उ भ य . . . म नी . |

१ ३ + ८

॥ अंतरा ॥

प प म धू म प मग़ म प सांनि़ सां गंरें़ सां | नि ऽ सां ग़ं रें़

ल स . त . . प स नृ प स चि व | ओ ढ . व

१ ३ + ८ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि रें नि सां निध प | मग म धप नी ध प म प ध प मग
सं . पू . . र न | रि ध व र ज अ नु . . . लो
+ ८ १ २ + ८

रें सा | म ऽ ग मप ऽ नि ध प म प ध प मग म |
. म | ती स रो प ह र दि . . . न . |
१ २ + ८

क्र. ११२ राग—मुलतानी-धनाश्री, ख्याल; एकताल

लोक छुचावे कई कितिनो की सखी प्यारे की पीत कई नैना ये ॥ छ० ॥
काहें को करत तू इतनी बतियां कौन सुने चल तू जाये ॥ १ ॥

प सानि सानि सां रें | रें सां ऽ निसां नि ध मप ऽ म ग म ग ऽ
लो . . क छु | वा . . वे क . . . . .
११ १ ५ + ९

ग म प नि ऽ ध प | म ग रे सा ऽ सानि सानि सानि सा म ग
ई . . . की ति | नो . . की स खि प्या . . रे
११ १ ५ + ९

रे सा | सा म ऽ गम ग म प म प ऽ नी नी ऽ प म प मग म प
की . | पी त . . . . क ई नै . ना . . ये . लो
११ १ ५ + ९ ११

सानि सानि सां रें | रें सां ऽ निसां नि ध मप ऽ म ग म ग
. . क छु | वा . . वे क . ई . . .
१ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

प प ^म^ग् म प प सां ऽ ^नि^सां | सां ऽ नि नि सां रें रें सां ऽ नि
का हे को . रु र त . | तू इ त नि ब ति . .
९ ११ | १ ३ +

सां ऽ नि ध् प ^प^म प ^सां^नि् ^सां^नि् सां रें | रें सां ऽ ^नि^सां नि् नि् ऽ
. . यां . . कौ . . न सु | ने . . च ल
९ ११ | १ ५

प ^प^म प ^म^ग् म
तू जा . ये .
+ ९

क्र. ११३ राग—मुलतानी-धनाश्री, ख्याल; एकताल

कवन देस गइलवा पिया मोरा बालम रे लुगवा मा सो आवुर दे सखी बलहारी ॥ ध्रु० ॥ उन बिन सदारंग कैसेके भरिये दिन बीतगई जुगवारे॥१॥

प सां ऽ नि ध् प म॑ ग् म॑ ध् प ^म॑^ग् रे सा | ^ग्^रे सा ऽ ^नि^सा सा
क व न . . . . दे स ग | इ . . ल
९ ११ | १

सा ऽ ^म॑^ग् म॑ ’ग् म॑ प म॑ प प ऽ ध् प म॑ ऽ ऽ प ध् | ध् प
वा पी . . . . या मो रा बा . . ल म | रे .
५ + ९ ११ | १

ऽ ^म॑^प म॑ ^ध^प ^म॑^ग् ऽ रे सा ऽ ^म॑^ग् ^प^म॑ ^ध^प सां ऽ ^नि^सां सां |
. लु ग वा सा . सो आ वू . . र. |
५ + ९ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां ' सां नि ' सां रें रें सां नि सां ऽ नि ध ^मप ऽ म

दे स खी ब ल हा . . . रि रे . .

१ ५ +

॥ अंतरा ॥

प प ^मग म प सां ऽ ^{नि}सां | सां सां ऽ नि ऽ सां रें रें सां नि

उ न बि न स दा . | रं ग कै से के भ रि ये

९ ११ १ ५ +

सां नि ध ^मप ऽ ध म प ^मग ^मग ^पम | ^धप सां ऽ ^{नि}सां ' सां रें

. दि न . बी . . त . ग | ई . . जु ग

९ ११ १

रें सां नि सां ऽ नि ध प ध म

वा . . . . रे . . .

५ +

क्र० ११४ राग–मुलतानी-धनाश्री, तीनताल (मध्यलय)

. स्थ० बलमा मोरे तुमीसों लागीलो चितवा ॥ ध्रु० ॥ रैन अंधेरी जिया डरपावे कैसे आऊँ तोहे मिलवा ॥ १ ॥

नि सा ^मग ऽ रे सा | रे सा ' नि सा ^मग ऽ म प म प ध प

सो ब ल्मा मो . | रे . तु मि सों ला गी . . . .

+ ७ १ ३ +

म ग म प | म ग म ग रे सा रे नि सा नि सा ^मग ऽ रे सा | रे सा

लो . चि त | वा . . . . सो ब ल्मा मो . | रे .

७ १ ३ + ७ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

’प ऽ मग् ऽ म प सां ऽ ऽ निसां | सां ’सां नि सां रें रें रें सां
रै न अं धे . . | री जि या ड र पा . .
३ + ७ १ ३ +

नि सां ऽ निध् प | ध् म ’प सांनि् सां रें रें रें सां नि सां ऽ ऽ नि
. . दे . | . . कै . से आ ऊं . . . . तो
७ १ ३ + ७

ध् प | म ग् म ग् रे सा रे निं सा निं सा मग् ऽ रे सा |
है . | मि . . ल वा . . . . . सो व ल्मा मो . |
१ ३ + ७

राग—हंसकिंकिणी

इस राग में दो गान्धार, दो निषाद तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ धैवत वर्जित हैं।

जाति—औड़व-सम्पूर्ण. वादी—पंचम. संवादी—षड्ज.

समय—दिन का तीसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—सा, ग म प, प नि् ध प, म प मग् रे सा

आरोह—निं सा ग म प नि सां

अवरोह—सां नि् ध प म प ग, म प मग् रे सा निं निं सा

विशेष—यह राग धनाश्री अंग का है। इसके आरोह में शुद्ध गान्धार का प्रयोग किया जाता है। और शुद्ध गान्धार से शुद्ध निषाद का संवाद होता है, इसीलिये निषाद भी आरोह के समय शुद्ध ही लिया जाता है। अवरोह में ‘सां नि् ध प’ इस प्रकार कोमल निषाद लिया जाता है। किन्तु इस के साथ ही ‘म ग् रे सा’ इस प्रकार कोमल गान्धार का सीधा उपयोग नहीं किया जा सकता। ऐसा करने हंसकिंकिगी का स्वरूप बिगड-कर काफी का ही हो जायेगा। कोमल गान्धार अवरोह के समय वक्र रूप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से लिया जाता है जैसा कि ऊपर दिये गये अवरोह के स्वरूप से स्पष्ट है। इस राग में खमाज, पीलू, पटदीप और काफी आदि अनेक रागों की छाया दीख सकती हैं। इन सब से बचाते हुवे ही इस राग को गाने में ही गायक की कुशलता है। इतना कठिन होते हुवे भी यह राग अपने नाम के अनुसार ही अत्यन्त श्रुतिमधुर और चित्ताकर्षक है।

आलाप

१ निंसा, सागमप, पमग्रेसा, सानिंसा

२ निंसाग, मप, ग म पनि्धप, म पधप, मग्, रेसा रे सानिंसा

३ निंसा, सानि्धंपं, मंपंनीं, निंसा, सा ग मप, म पधप, मपनी, सानि्धप, मपमग, ग मपमग्रेसा

४ मपनि, निसांनिसां, रेंसांनि्धप, प ध प म पनिसां, गं्सां रेंसां, रें सांनि्धप, मपमगसा ग म प ग म पमग्रेसानिंसानिंसा

५ मपनिसांनिसां, गं् रेंसां, सांगं, मंगं् रेंसां, सां गं मंपंमगं् रेंसां, रें सांनि्सांनि्धप, मपमग, मगपमधपमग्रेसा

६ निंनिंसा, पमग्रेसा, नीधप, मपनिसांनिसां, गं् रेंसां, मंगं् रेंसां, सांगं, मंपंमगं् रेंसां, मपमग्रेसा, प ध म पनिसांनिसां, रेंनि्धप, ग म पनिसांनिसां, मग्मग्रेसा

तान

७ निंसागमपगमपमग्रेसा, निंसागमपनि्धपमपमग्रेसा, निंसागम पनिसांनि्धपमपगमपमग्रेसा, निंसागमपनिसांगं् रेंसांनि्धपमग मपमग्रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८ गमप–गमप–मग्रेसा, गमप–मपनि्–धपध-पमप–मग्रेसा,गमप-मपनि–पनिसां–निसां रें–सांनिसां–नि्धनि्–धपध–पमप-गमप-मग्रेसा

९ मग्रेसा–नि्धपम–सांनि्धप– रेंसांनिसां–गं् रेंसानि–मंगं् रेंसां–रेंसांनिनि–सांनि्धप–धपमग–गमपमग्रेसा

१० सागमपनिनिधप–मपनिसांगंगं् रेंसां–सांगंमंपंमंगं् रेंसां–रें रेंसां नि्सांनि्धप–मपनि्धपमगम–पमगमपमग्रेसा

११ सागग–गमम–मपप–पनिनि–निसांसां–सांगंगं– गंमंमं– मंपंपं–पंगंगं्– रेंसांसां–सांनिंनिं्–नि्धध–धपप–पमम–पग्ग्– रेसासा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

क्र. ११५ राग–हंसकिंकिणी, लक्षणगीत; तीनताल (मध्यलय)

मधुर रागिणी हंसकिंकिणी। चढत बरज 'रिध' सह उभय ग-नी ॥ ध्रु० ॥ रूप सुघर ओडव सम्पूरन, अंग धनाश्री सहित सुहावन। प-स सुर को संवाद करावन, दिवस तीसरो प्रहर गात गुनि ॥ १ ॥

–पं. विनयचंद्रकृत

ग म प ^मग् ऽ रे सा | निं सा ग ऽ म ग म प म म प नि् ध प
० ० ० ० ० ० – | – ० ० ० ० ◡ ◡ ० ० ० ० ० ० ०
म धु र रा गि णी | हं स किं किणी . . च ढ त ब र ज
\+ ७ १ ३ + ७

म ग | ग म ^धप ^मग् ग् रे सा
० ० | ० ० ० ० ० ० –
रि ध | स ह उ भ य ग नी
१ ३

॥ अंतरा ॥

म म म प प नी | सां सां नि नि सां ^मगं् रें सां गं् रें सां ^रेंनि धं प |
– ० ० ० ० – | ० ० – ◡ ◡ ० ० ० – ० ० – ० ० |
रू प सु घ र ओ | ड व सं पू . . र न अं ग ध ना श्री . |
\+ ७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि् ध प म ग म प [म]ग् [रे]सा सा ग ग ग ग म प [सां]नि् | ध प म ग
स हित सु हा . . व न प स सु र को . . सं | वा . द क
१ २ + ७ | १

ग म प प प प नि नि रें सां नि ध प | नि् ध प ग म ध प [म]ग् रे सा
रा . . व न दि व स ति . . स रो | प ह र गा . . . त गु नि
३ + ७ | १ २

कृ. ११६ राग–हंसकिंकिणी, झपताल

तुम हो बलवंता सकल गुनवंत हो गुननिधान गुनवंता ॥ ध्रु० ॥ तुम हो करतार तुम हो सतार सेवा करे सब जीव-जंतु तेरी ॥ १ ॥

—संग्रहकार स्व. पं. वझेबुवा

नि नि सां ऽ नि ध प ' प ध म प | [म]ग म म ऽ ध प म ध म प
तु म . . हो . ब ल . . | वं . ता स क . ल . .
+ ८ | १ २ +

[म]ग् [म]ग् [म]ग् | म ग् रे सा ऽ [रे]निं [सा]निं [सा]निं निं सा ऽ सा ग ग म |
गु न वं | . . त हो गु न नि धा . न गु न . |
८ | १ २ + ८

[प]ध [प]म [म]प [म]ग म
वं . ता . .
१ २

॥ अंतरा ॥

प ध म प [म]ग म ऽ | प नि [सां]नि सां सां नि नि [सां]नि सां रें |
तु म . . हो . | क र ता . र तु म हो . स |
+ ८ | १ २ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांनि़ ऽ ध प ऽ मग ऽ म ऽ म | प ऽ नि सां सां मग़ु ग़ुसां रें सां सां |
हुता र . से वा क | रे स . ब जीव जं . तु |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

मग़ु मग़ु रे सा ऽ
ते . री .
१ ३

क्र. ११७ राग—हंसकिंकिणी, झपताल

मंजुल मोहनी; सुंदर सोहनी। वाकी छब कोउ; बरनि सकै ना ॥ ध्रु० ॥
चाल मराल सी; अलबेलै नैना। रस के भरे प्यारे; बोलत बैना ॥ १ ॥

— पं. विनयचंद्रकृत

ग ऽ ग म धप मग़ु ऽ सारे सा ऽ | रेनिं सा ग ऽ म पसांनि़ पध प ऽ |
मं जु . ल मो ह नी | सुं . द र सो . ह नी |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

पग म प नि नि सां नि सां रें सां नि़ पध प | सांनि़ ध प ग म गम
बा . कि . छ ब . . . . को . उ | ब र नि . स कै
१ ३ + ८ १ ३ +

ग म ध प मग़ु सारे सा |
. . . . ना . . |
८

॥ अंतरा ॥

म ध म प मग़ मग़ म धप नि सांनि नि सां ऽ | प नि सां ग़ु रें सां
चा . . . ल . म रा . ल सी . | अ ल बे . ले
१ ३ + ८ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें सां नि ऽ निध पम प | सांनि सांनि ध प म धप मग म प मग

◡ ◡ o – – – – | – – – o o – – o o –

नै . . ना . . | र स के . . भ रे . . प्या

\+ ८ १ ३ + ८

सारे सा | रे सा निं ऽ सा ग ऽ म प सां ऽ नि ध प मग रे सा |

– – | ◡ ◡ o – o o – – o o o o o o – o o

. रे | बो . . ल . त वै . . ना . . . . |

१ ३ + ८

क्र. ११८ राग–हंसकिंकिणी, तीनताल (मध्यलय)

राम नाम मेरे मन बसियो। रसियो राम रिझाऊं ए माय ॥ ध्रु० ॥ मैं मंद भागण करम अभागण कीरत कैसे गाऊं ए माय ॥ १ ॥

–मीराबाईकृत

ग म प प मग रे सा रे सा निं | सांनिं सा ग ग ग म ग म प प

◡ ◡ o o o o o ◡ ◡ o | o o o o o o ◡ ◡ o o

रा . . म ना . म मे . . | रे . म न ब सि यो . . र

\+ ७ १ ३ +

सांनि ध प म प ध प म | ग म प प मग ऽ रे ऽ सा

o o o ◡ ◡ o o o | ◡ ◡ o o o o o o o

सि यो . रा . . म रि | झा . . ऊं ए मा य

७ १ ३

॥ अंतरा ॥

’म प प नि सां सां | प नि सां सां मगं रें सां ’ गं रें सां रें सां

o o o o – o o | o o o o – o o o o o o ◡ ◡

मैं मं द भा ग ण | क र म अ भा ग ण की र त कै .

\+ ७ १ ३ + ७

नि ध प | नि ध प ग म प मग रे सा

o o o | o o o ◡ ◡ o o o o

. से . | गा . ऊं ए . . मा . य

१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—भीम

इस राग में दो गांधार, निपाद कोमल तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ धैवत वर्जित हैं।

जाति—ओडव-सम्पूर्ण. वादी—षड्ज. संवादी—पंचम.

समय—दिन का तीसरा प्रहर.

राग का मुख्य अंग—नि॒ सां ग॒ रें सां नि॒ ^{प}ध म ^{प}ग रे सा।

आरोह—सा ग म प $^{सां}$नि॒ सां

अवरोह—ग॒ रें सां नि॒ ध प ^{प}ध म ^{प}ग रे सा

विशेष—यह राग भीमपलासी और खंबावती के मेल से बनता हैं। इसके उत्तरांग में भीमपलासी तथा पूर्वाङ्ग में अवरोह के समय खंबावती की छाया दीख पडती है। आलाप के अंत में 'रे सा' अथवा '$^{सा}$रे सा' इस प्रकार के स्वर जो लिये जाते हैं उन से खंबावती से अलग भीम का रूप व्यक्त होता हैं। इस राग में कोमल गान्धार का उपयोग केवल तार सप्तक में ही किया जाता हैं। जैसे—"ग॒ रें सां नि॒ ध प" यह राग अप्रसिद्ध रागों में से है। किसी प्रकार का शास्त्रीय आधार या परंपरा इस राग के लिये हमें प्राप्त नहीं है। तथापि इस समय प्रचार में इसका जो रूप है वह अत्यन्त मधुर और रंजक है। वही यहां पर दिया जा रहा है।

आलाप

१ सानि॒ंनि॒ंपंनि॒ंसा, सा, रे सानि॒ं $^{पं}$धंपं, $^{सा}$नि॒ं $^{सा}$नि॒ंपंसा

२ सा $^{सा}$गरेसा, सागम ^{म}प ^{प}गरेसा, $^{सा}$नि॒ं $^{सा}$नि॒ंपंनि॒ंसा

३ सागमप, प ^{प}धम ^{म}पगरेसा, सा $^{सां}$नि॒ $^{सां}$नि॒ ^{प}धप ^{प}धम ^{म}पगरेसा, $^{सा}$नि॒ं $^{सा}$नि॒ंसा

४ सानि॒ $^{सां}$नि॒ $^{सां}$नि॒पनि॒सां, प नि॒ सां रेंसां, $^{नि॒}$सां $^{नि॒}$सां नि॒ सां रें सांनि॒ ^{प}धप, ^{प}धम ^{म}पगरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ सानि्सांनि्सांनि्पसांनि्सां, प नि् सांगं् रेंसां, सां रें नि्सांनि्, प नि् सां रें नि् सां रें सां नि् प नि् सां नि्पधप, प ध प ध म प मपगसारेसा

६ रेसा, गरेसा, मपगरेसा, पधममपगरेसा, सांनि्सांनि्पधप, मंगं्मंगं् रेंसां, रें नि् सांनि्, गं् रेंसां, मंपगं् रेंसां सां रें नि् सांगं् रेंसां रें नि् सांनि् प नि् सां नि्धप, प ध पधमम प मपगसारेसा

तान

७ सागमगरेसासा, सागमपधधपमपगरेसा, सागमपनि्सांनि्धपमप गरेसा, सागमपनि्सांगं् रेंसांनि्धपमपमगरेसा

८ सागग–गमम–मपप–पधध–मपप– पनि्नि्– नि्सांसां– सांगंगं्– सां रें रें–नि्सांसां–पनि्नि्–पधध–मपप–मगरेसा

९ गगरेसा, धधपमपगरेसा, नि्नि्धपधधपमपगमगरेसा,सांनि्धप– रेंसांनिसां–गं् रेंसांनि्धपमपगगरेसानि्सा

१० सासा–गग–मम–पप–नि्नि्–सांसां–गंगं्– रें रें–सांसां–नि्नि्– धध–मम–पप–गग– रेरे–सासा

११ साग–गम–मप–पनि्–नि्सां–सांगं्–गं् रें– रेंसां– सांनि्– नि्ध– धप–पम–मप–पग––मगरेसा

(सूचना—उपरोक्त तानों में प्रत्येक स्वर पर पाव मात्रा ठहरना चाहिये।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ११९ राग–भीम, लक्षणगीत; द्रुतएकताल

भीम राग गुनि गावत। उभय लेत गांधार; कोमल 'नी' जहं आवत ॥ ध्रु० ॥ पहिलो सुर अंश लसत; पंचम संवाद करत। दिवस तीसरो पहर; रसिकन मन हुलसावत ॥ १ ॥

–पं. विनयचंद्रकृत

प नि़ प नि़ सां सां नि़ सां रें सां नि़ ध प | प ध म (म)प ऽ ग (ग)रे
o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ – o o | o o o o o o –
भी . म रा . ग गु . नि . गा व त | उ भ य ले त गां
१ ३ + ५ ६ १ ३ +

ऽ सा ऽ सा | निं सा सा (सां)नि़ गं रें सां (सां)नि़ ध प |
o o o o | – o o – o ◡ ◡ – o o |
धा र | को म ल नी ज हं . आ व त |
५ ६ १ ३ + ५ ६

॥ अंतरा ॥

म म प (सां)नि़ नि़ प (सां)नि़ नि़ सां सां | (सां)नि़ सां गं रें सां नि सां
o o – o o – o o o o | – o o o o ◡ ◡
प हि लो सु र अं श ल स त | पं च म सं . वा .
१ ३ + ५ ६ १ ३ +

रें सां नि़ सां नि़ ध प | प सां नि़ ध (प)ध ऽ (प)म (म)प (प)ग रे सा सा |
◡ ◡ o ◡ ◡ o o | o ◡ ◡ o o o o – o o o o |
. . द क . र त | दि व . स ती स रो . प ह र |
५ ६ १ ३ + ५ ६

सा सा (सां)नि़ नि़ सां गं रें सां नि़ सां रें सां नि़ ध प म |
o o o o o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ |
र सि क न म न हु ल सा . . . व . त . |
१ ३ + ५ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १२० राग–भीम, झपताल

बाजे झनन झनन घूंगरवा अंगना। गायें बजायें नाचें ललना ॥ स्था० ॥
मंगल सुदिन आज साजन आये। आनन्द छियरा अमित छाये ॥ १ ॥

–पं. विनयचंद्रकृत

’सा सांनि़ प सांनि़ सां | सां सां नि़ सां रें सां सांनि़ नि़ प नि़
वा . . जे . | झ न न . . . झ न न .
८ १ ३ +

सां नि़ ध प प प | पध पम म प मप पग रे सा रेनि़ सा सा | ग ग
. . घुं . ग र | वा . अं ग ना . . . गा . यें | ब जा
८ ·१ ३ + ८ १

म म ऽ प सांनि़ ऽ प सांनि़ सां ऽ | नि़ रें सांनि़ ’ध ऽ पम मप पग
. यें ना . . चें . | ल ल ना . . . .
३ + ८ १ ३ +

रे सा ’सा सांनि़ प सांनि़ सां |
. . वा . . जे . |
८

॥ अंतरा ॥

प ऽ ध म प सां सां रेंनि़ सां सां | सांप सांनि़ सां गं रें सां रें नि़
मं ग ल सु दि न आ . ज | सा . ज . न . आ .
१ ३ + ८ १ ३ +

सां नि़ ऽ प नि़ सां नि़ ध प | प नि़ सां प नि़ सां ऽ निध पम प
. . . . ये . | आ . . . . . नं . द
८ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पध पम मप पग रे सा | सा सांनि सां प नि सां रें नि सां रें सां
हि य रा . . . | अ मि त छा . . . .
+ ८ १ ३

नि ध पम प ' सा सांनि प सांनि सां |
ये . . . बा . . जे . |
+ ८

क्र. १२० राग–भीम, तीनताल (मध्यलय)

पार न पायो नाद भेद को बिस्तार घन भयों है ॥ ध्रु० ॥ कहे नायक तानसेन गुण गोपाल लाल बलहारी हारी इन गुरू को दीजै नाद भेद को बिस्तार घन भयों है ॥ १ ॥

—संग्रहकार प्रो. वामनराव सडोलीकर

' ध म प | सां ऽ नि सां नि नि ऽ धध प ऽ ऽ | म प प ध ऽ पम
पा र न | पा . . . . . यो | ना . द . .
७ १ ३ + ७ १

मप पग म गरे सा सांनिं निं सा सा | सांनि सांनि प नि सां रें नि
भे . . द को बि स्ता . र | घ न भ . . . .
३ + ७ १ ३

सां रें सां नि धध प ध म प | सां ऽ नि सां नि नि धध प
. . . यों . है पा र न | पा . . . . . यो
+ ७ १ ३ +

॥ अंतरा ॥

' प प ध म प | सां ऽ ऽ सां नि प नि नि सां ऽ प नि सां गं |
क हे ना य क | ता न . से . न . सु नि गो . |
७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां रें सां नि़ नि़ सां ऽ नि़ ध प , सा नि़ नि़ सा नि़ ऽ सा | सां नि़ सां नि़

पा ल . ला . . ल . ब ल हा रि | हा री

१ ३ + ७ १

प नि़ प नि़ नि़ सां ऽ नि़ ध प ऽ | म प प ध ऽ प म म प प ग म

छ न गु रु को . . दी जे | ना . द . . भे . .

३ + ७ १ २

ग रे सा सा नि़ नि़ सा सा | सां नि़ सां नि़ प नि़ सां रें नि़ सां रें सां

द को वि स्ता . र | घ न भ . . . .

+ ७ १ २

नि़ ध ध प ध म प |

यों . है पा र न |

+ ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग–सागर (रागमाला)

यह राग अनेक रागों का एक समूह है। इसकी विशेपता यह है कि इसमें अलग-अलग शब्दों से अलग-अलग अर्थ के साथ-साथ अलग राग भी व्यक्त होते हैं। इस प्रकार इसकी रचना अत्यन्त चमत्कारपूर्ण और विचित्र होती है। उदाहरण के लिये प्रस्तुत पुस्तक में आई हुई इस राग की पहली चीज यहाँ दी जाती है—

ये मन है मीर छाया परे श्याम की। चहू देस में होवे कल्याण, हर दरबार में कहावे नायकी॥

रागों के क्रम की दृष्टि से इस में 'ये मन' (यमन) 'है मीर' (हमीर) छाया (छाया नट) 'श्याम' (श्यामकल्याण) 'देस' (देस) कल्याण (कल्याण) 'दरबार' (दरबारी कानडा) 'नायकी' (नायकी कानडा)—ये आठ राग पाये जाते हैं। इस चीज का अर्थ इस प्रकार होगा—

ये मन (हे मन !) है मीर (तू सारे शरीर का 'मीर' अर्थात् स्वामी है) छाया परे श्याम की (जब भगवान कृष्ण की 'छाया' अर्थात् कृपा होगी तब) हर दरबार में (प्रत्येक राजसभा में) कहावे नायकी (तू नायक कहलायेगा)।

इसी प्रकार इस राग की दूसरी चीज है। उसमें भी जिन शब्दों द्वारा नायिका का रूपवर्णन है, उन्हीं शब्दों द्वारा अलग-अलग रागों का भी संकेत किया गया है। इस चीज में निम्न सात राग आये हैं—

ये हो 'रामकली' सी मुदत हो रही नार (रामकली) 'ललत' बिलास जा दिन ते वा संगकर आये (ललत)॥ ध्रु०॥ चंपक 'सारंग' ताकी अत ही दुगन जोत (सारंग) 'गौरी' को रूप रंग अचपल बनाये (गौरी)॥ १॥ जोबन की मदमाती मतंग की नार वाको कबसे तुम, 'आसावरी' की सिखाई (आसावरी) 'सुघराई' तिहारी निहारी मन (सुघराई) गुजरी सी नार अत ही मन भावे (गुजरी)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १२२ राग–सागर (रागमाला-रातकी), ख्याल; ताल झुमरा

ये मन है मीर छाया परे श्यामकी ॥ ध्रु० ॥ चहु देस में होवे कल्याण हर दरबार में कहावे नायकी ॥ १ ॥

प ध म॑ प ऽ म॑ ग रे ग म | ^नि^ध सां ऽ नि ध म॑ प ऽ प प
◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ – ○ ○ | – ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ – ◡
ये . . . म न . है . | मी . . . . . र छा
११ | १ ४

ध म॑ प म ग ^म^रे ^ग^रे ग म ध म॑ प ^प^ग म रे ^रे^निं सा प ध म॑ प
◡ ◡ ○ ○ ○ – ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡
. . . या . . प रे . श्या . . . . म की . ये . . .
+ ११

ऽ म॑ ग रे ग म | ^नि^ध सां ऽ नि ध म॑ प ऽ प
○ ○ ○ ○ ◡ ◡ | – ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ –
म न . है . | मी . . . . . र
१ ४

॥ अंतरा ॥

म प नि सां ऽ नि सां सां नि रें सां रें निं ध प ध म॑ प ^म^ग ^प^रे सा |
○ ○ ○ ○ ○ ○ – ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ ◡ ◡ ◡ ○ – – |
चहुं दे . स में हो . . . . . . वे . क . . ल्या . ण |
+ ११

म म प प सां ^नि^ध़ नी रें सां , ^सां^नि़ सां ^नि^ध़ नि़ प नि़ म प ^म^ग़
◡ ◡ ◡ ◡ – ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ◡ ◡ ○ ○
ह र द र बा . . र में क हा . . वे ना . . .
१ ४ +

म रे सा ऽ प ध म॑ प ऽ म॑ ग रे ग म |
○ ○ ○ – ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ ◡ ◡ |
. य की ये . . . म न . है . | मीर
११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १२३ राग–सागर (रागमाला-दिनकी), ख्याल; ताल तिलवाडा

ये हो रामकली सी सुदत हो रही नार ललत बिलास जा दिन ते वा संग कर आये ॥ ध्रु० ॥ चंपक सारंग ताकि अतही दुगन जोत गौरी को रूप रंग अचपल बनाये ॥ १ ॥ जोबन की मदमाती मतंग की नार वाको कबसे तुम ऐसी गत चलन तुम आसावरी की सिखाई सुघराई तिहारी निहारी मन गूजरी सी नार अतही मन भावे ॥ १ ॥

नि॒ध॒ प मप | प म गम म ऽ म म नि॒ध॒ प म गम निं रे॒ गम म ऽ

– o o | – – o o – o o – o o – o o o o o

ये हा . | रा . . म क ली . सी . . सु द त हो

१ ५ +

गम म म ऽ प ऽ मप ध॒ प ऽ मप | म निं रे॒ गम म म गम म म

o o o o o o o o o o o | – ◡ ◡ ◡ ◡ – o o o

. र ही ना . . . . | र ल ल त बि ला . स जा

१२ १ ५

ऽ ग म ग म ध॒ म ध॒ ऽ म म ग रे॒ म ग रे॒ ग रे॒ सा निं रे॒ म

◡ ◡ o o ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ o o o o o o o o o o

. . . दि न तें . . वा . . : सं ग . क र आ . .

+ १२

ग रे॒ सा नि॒ध॒ प मप | प म गम म ऽ

o o o – o o | – – o o –

ये . . ये हो . | रा . . म

१

॥ अंतरा ॥

प सां सां सां सां सां रें सा नि सां सां सां रें रें सां सां सां सां

– o o – – o ◡ ◡ ◡ o o o o o o o o o

चं प क सा रं ग ता . . . कि अ त ही . दु ग न

५ + १२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें सां नि ऽ सां ऽ सां | निधु रें रें सां ऽ सां निधु ऽ प ऽ म॑ धु
जो . . . त | गौ री को रू प रं ग अ च
१ ५ +

नि सां सां नि धु ऽ प म॑प प निधु प म॑प | प म गम म ऽ
प ल ब . ना . . ये ये हो . | रा . . म
१

॥ दूसरा अंतरा ॥

सा म म म म म प म रे म म प सां ऽ सां नि प प म रे म म प |
जो ब न की मं द मा . . . ती म तं ग की . ना . . . र वा |
५ + १३

ध प म ग रे रे सा गरे सा ' सा रे प म म ग ग सा सा रे प मगु
को क ब से . तु म ऐ सी ग त च ल न तु म आ सा . . व
१ ५ + १३

रे सा | म प धु म प नि धु प म प सां ऽ निसां सां ' सां सां सां
री की | सि खा . . . . ई . सु घ रा . ई ति हा री
१ ५ +

नि रें सां रें सां सांनि ध | नि प ' म॑ पम॑ धु धु म॑ म॑ गु गु म॑रे
. . नि हा री . म | . न गू . ज री . . . सी ना
१३ १ ५

गु गु निधु सां निधु प प धु म॑ गु रे गु रे सा निधु प म॑प |
. र अ त ही म न भा . . . . वे . ये हो . |
+ १३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारे सङ्गीत-सम्बंधी प्रकाशन

बालसंगीत (मराठी भाग १, २, ३) मू. १-१२-०

रागविज्ञान (भाग १, २, ३) १-८-०, २ रु., २॥ रु.

रागविज्ञान भाग ४ मू. ३ रु.

रागविज्ञान भाग ५ मू. ३॥ रु.

तबला-मृदंगवादन पद्धति थोडेहि दिन मे प्रसिद्ध होगा.

पुस्तके मिलने का पता—

व्यवस्थापक, संगीत गौरव ग्रंथमाला

४९५ शनवार, तिमाले पर ब्लॉक नं. ११ ए,

पूना २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi